अध्याय 1

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला और मसीह की सेवकाई

''सुसमाचार का आरम्भ'' (1:1-3)[1]

[1]परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के सुसमाचार का आरम्भ। [2]जैसा यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक में लिखा है: ''देख, मैं अपने दूत को तेरे आगे भेजता हूं, जो तेरे लिये मार्ग सुधारेगा। [3]जंगल में एक पुकारनेवाले का शब्द सुनाई दे रहा है कि प्रभु का मार्ग तैयार करो, और उसकी सड़के सीधी करो।''

आयतें 1-3. आरम्भ (ἀρχή, *archē*) यीशु की सेवकाई पहले पड़ाव के लिए तकनीकी शब्द लगता है। लूका 1:2 में इसी शब्द का इस्तेमाल इसी प्रकार से हुआ है।

जिस शब्द का अनुवाद **सुसमाचार** (εὐαγγέλιον, *euangelion*) हुआ है वह एक अद्‌भुत विवरण या कहानी की बात है। प्राचीन अंग्रेजी भाषा के एंग्लो-सैक्सन (Gospel) शब्द का अर्थ मूल में ''परमेश्वर का वचन'' जो ''परमेश्वर की कहानी'' या ''शुभ समाचार'' से लिया गया है।

''देख, मैं अपने दूत को तेरे आगे भेजता हूं, जो तेरे लिये मार्ग सुधारेगा।'' यीशु के प्रचार की भूमिका होनी आवश्यक थी, इस कारण मरकुस ने इस ईश्वरीय विवरण की अपनी प्रस्तुति का आरम्भ ''दूत'' यूहन्ना के प्रचार के साथ किया। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि मरकुस ने आरम्भ यूहन्ना के साथ किया, क्योंकि उसके काम में यीशु की सेवकाई का सचमुच में आरम्भ था। अग्रदूत के रूप में जिसने **परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह** के लिए मार्ग तैयार किया, यूहन्ना की भूमिका इतनी महत्वपूर्ण थी कि भविष्यद्वाणी का विषय यही था (यशा. 40:3-5; मलाकी 3:1; 4:5, 6)। यहूदी लोग आम तौर पर मुख्य नबी का नाम लेकर और बाकी के नामों को छोड़कर, उन्हें मुख्य नबी के साथ मानकर जैसे मरकुस ने यहां किया। आम तौर पर कई नबियों को उद्धृत करते थे: **जैसा यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक में लिखा है।**

यूहन्ना **जंगल में एक पुकारनेवाले का शब्द** था। यहूदियों ने इस बात को समझ लिया था कि चार सौ वर्षों तक परमेश्वर की आवाज़ खामोश रही थी, और वे उसकी आवाज़ को फिर से सुनने के लिए तरस रहे थे। पलिश्तीन देश यूहन्ना का प्रचार सुनने के लिए पागल सा हो गया था क्योंकि लोगों ने समझ लिया था कि एक बार फिर से इस्राएल में कोई नबी आया है।

इस वचन में पवित्र शास्त्र की व्याख्या का एक संकेत है। मरकुस ने अलंकार का इस्तेमाल किया जो पश्चिमी जगत के लिए अनोखी बात होगी, परन्तु जहां भी वचन गया है वहां यह प्रसिद्ध है। पवित्र शास्त्र की कुछ अभिव्यक्तियों को प्रतीक के रूप में लिया जाना आवश्यक है। यूहन्ना से सम्बन्धित भविष्यद्वाणी के साथ ऐसा करना आवश्यक है। मूलतया भविष्यद्वाणी उसे सड़क

बनाने वाले के रूप में दिखाती है, परन्तु इस विवरण को लाक्षणिक रूप में समझना आवश्यक है। वह मसीह की सेवकाई के लिए रास्ता तैयार करने के लिए **प्रभु का मार्ग तैयार** करने आ रहा था। ''मार्ग'' (ὁδός, *hodos*) का अर्थ ''राजमार्ग'' या समतल मार्ग जैसा कुछ है। यूहन्ना ने **उसकी सड़के सीधी** करनी थी।

पापों की क्षमा के लिए यूहन्ना का बपतिस्मा (1:4, 5)[2]

[4]यूहन्ना आया, जो जंगल में बपतिस्मा देता, और पापों की क्षमा के लिये मन फिराव के बपतिस्मा का प्रचार करता था। [5]सारे यहूदिया प्रदेश के, और यरूशलेम के सब रहनेवाले निकलकर उसके पास गए, और अपने पापों को मानकर यरदन नदी में उस से बपतिस्मा लिया।

आयत 4. इस नबी की उपाधि अनोखी है उसे **बपतिस्मा** देने वाला कहा गया है। ''बपतिस्मा देने वाला'' (βαπτίζων, *baptizōn*) का अर्थ सरल शब्दों में ''डुबकी देने वाला'' है। वचन उसे ''बपतिस्मा देने वाले'' के रूप में दिखाता है। यूहन्ना निराला आदमी था। साफ़ है कि उससे पहले किसी ने किसी को परमेश्वर के परिवार में आने के लिए डुबकी के लिए नहीं कहा।[3]

आर. सी. फोस्टर ने लिखा है,

> यह तथ्य कि यूहन्ना को ''बपतिस्मा देने वाला'' या ''बपतिस्मा दाता'' नाम दिया जाता है, इस बात का स्पष्ट संकेत है कि उसकी सेवकाई में कुछ नया और खलबली मचाने वाला था, जिसने उसे अपने आस-पास के या अपने से पहले के सब लोगों से अलग कर दिया। पुराने नियम में बपतिस्मे जैसी कोई चीज़ नहीं है। यहूदी व्यक्ति को रस्मी शुद्धता के लिए पानी में गोता लगाने की आज्ञा थी, परन्तु यह किसी एक व्यक्ति के किसी दूसरे व्यक्ति को बपतिस्मा देने से बिल्कुल अलग था, और परमेश्वर इसे परमेश्वर के समर्पण का गम्भीर, आत्मिक अनुभव बना रहा था जिसमें पापों की क्षमा दी जाती थी।[4]

हर यहूदी के लिए इस पूर्ण आज्ञापालन की शर्त को रखकर, यूहन्ना ने प्रभावशाली ढंग से किसी के उसका बपतिस्मा न लेने तक ''पूरी [यहूदी] कौम को निकाल दिया।''[5] ऐसी मांग करना उनके राष्ट्रीय गौरव का अपमान था। बहुत से यहूदियों का यह मानना था कि उद्धार के लिए केवल खतना ही काफ़ी था, क्योंकि यह इस्राएलियों के पुत्र होने का चिह्न था जो परमेश्वर ने अब्राहम को दिया था।

इस पर आज भी बहस होती है कि पहली सदी में अन्यजातियों से विश्वासी बनने वालों के लिए यहूदी रब्बियों द्वारा अन्यजाति पुरुषों के लिए खतने के साथ डुबकी आवश्यक बताई जाती थी या नहीं। यहूदियों के लिए डुबकी की शर्त का अर्थ निश्चित रूप में यह है कि उन्हें धार्मिकता के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए पानी में डुबकी लेने की आज्ञा को मानना आवश्यक था। फोस्टर ने बलपूर्वक यह तर्क दिया कि मनपरिवर्तन करने वालों के लिए यहूदी मत में ''बदलने का बपतिस्मा बहुत बाद के समय'' (सम्भवतया तीसरी सदी) तक प्रचलन में नहीं

आया। उसने यह दावा किया कि यह केवल ''मसीही बपतिस्मे की नकल'' था और यहूदी परम्परा में बिल्कुल नया था।[6]

यूहन्ना अकेला था जिसे परमेश्वर ने यहूदियों के लिए डुबकी का आरम्भ करने के लिए भेजा। जब तक उन्होंने यूहन्ना को प्रचार करते नहीं सुना, तब तक उनका यही मानना था कि संसार में धर्मी केवल वही हैं। वह **मन फिराव** [μετάνοια, *metanoia*] **के बपतिस्मे** [βάπτισμα, *baptisma*] **का प्रचार करता था,** जिसका अर्थ यह है कि बपतिस्मा लेने वाले के लिए मन फिराना आवश्यक है। उसके श्रोताओं में से जब कोई पूछता कि मन फिराव के लिए क्या करना आवश्यक है, तो वह उन्हें कुछ कदम उठाने को कहता। वह फरीसियों और सदूकियों को भी अलग कर देता, उन्हें दोषी ठहराते हुए यदि वे बिना मन फिराव के उसके पास आ जाते (देखें मत्ती 3:7, 8)। वह उन आज्ञाओं को जिन्हें उसे सुनने वाली भीड़ में से हर किसी को मानना आवश्यक था एक बड़े ब्रश के साथ आज्ञाओं को पेंट कर देता (लूका 3:7-14)।

यूहन्ना के प्रचार के मुख्य कार्यों में से एक, न्याय के लिए यहूदियों को तैयार करना था (देखें मत्ती 3:8-10)। इसके लिए मन फिराव और बपतिस्मा आवश्यक है। ग्रेट कमीशन के हमारे बपतिस्मे की तरह ही, यूहन्ना का यह बपतिस्मा **पापों की क्षमा के लिए** था। इससे मेल खाती अभिव्यक्ति मत्ती 26:28 में मिलती है, जहां यीशु ने कहा कि उसने ''पापों की क्षमा के निमित'' अपना लहू बहाया।

''क्षमा'' के लिए यूनानी शब्द ἄφεσις (*aphesis*) अनुवाद किया गया है। ''क्षमा'' शब्द आसानी से समझ में आ जाता है, ''remission'' शब्द यह अर्थ देने के लिए कि असल में बपतिस्मे के समय परमेश्वर हमारे अपराधों को ''फेंक देता'' है, और आगे चला जाता है।

आयत 5. सारे यहूदिया प्रदेश के, और यरूशलेम के सब रहनेवाले निकलकर उसके पास गए, और अपने पापों को मानकर यरदन नदी में उस से बपतिस्मा लिया। यूहन्ना के सामने आने के समय, मसीहा के निकट होने की आशा पूरे ज़ोर में थी (स्पष्टतया दानिय्येल 2:44, 45 और 7:13, 14 की भविष्यद्वाणियों के कारण)। बपतिस्मे की इस आज्ञा ने अन्य किसी भी विचार को खारिज कर दिया। अपने बपतिस्मे के सम्बन्ध में असली मन फिराव की यूहन्ना की शर्त के बजाय, इन लोगों के इसे मान लेने को तैयार होने से यह पता चला कि बहुत से यहूदी अपने अनन्त उद्धार के लिए केवल अपने यहूदी होने पर निर्भर नहीं थे। वे यूहन्ना को ''भविष्यद्वक्ता'' मानते थे (लूका 7:26) और यह समझते थे कि उसके द्वारा परमेश्वर उनसे बात कर रहा है। उनके लिए, यह यहूदी इतिहास में सबसे बड़ी घड़ी का आरम्भ था। अपने आप में धर्मी फरीसी और अहम से भरे व्यवस्थापक, साफ तौर पर यहूदी मत के उन लोगों में से थे, जिन्होंने यूहन्ना से डुबकी लेने से इनकार कर दिया (लूका 7:29, 30)।

यरदन नदी में अभिव्यक्ति बपतिस्मे के मूल अर्थ को समझाने के लिए पर्याप्त होनी चाहिए। प्रेम प्रसंगों के लेखकों की तस्वीरें जिनमें यूहन्ना को घुटने तक पानी के बीच खड़े दिखाया जाता है और यूहन्ना यीशु के सिर के ऊपर पानी उण्डेल रहा है, बाइबल के किसी भी शब्दचित्र के साथ, जो हमारे पास है, मेल नहीं खाता। यूनानी शब्द ἐν (*en*) का अर्थ वही है जो हिंदी उपसर्ग ''में'' का है।[7]

बपतिस्मे में मन फिराव को दिखाते हुए लोग **अपने पापों को मानकर** आ रहे थे। यूहन्ना

की सारी सेवकाई यीशु के आने की तैयारी थी। उसका बपतिस्मा परमेश्वर के राज्य में प्रवेश के लिए तैयारी के लिए था। उसके तरीके में परमेश्वर के पास विनम्र पश्चात्ताप में बदलकर तैयार करने के लिए अटल पुकार शामिल थी। यूहन्ना के काम को संक्षेप में बताते हुए, बाद में यीशु के अनुसार (लूका 16:16), यहूदियों की बड़ी संख्या यूहन्ना के उपदेशों को मानकर, राज्य में प्रवेश करना चाह रही थी (जिसे वे मानते थे)। मन फिराव के लिए कहकर, यूहन्ना जो कुछ कर सकता था उन्हें राज्य के लोग होने और मसीह के पीछे चलने की सोच के सही ढांचे में लाने के लिए जो कुछ कर सकता था उसे कर रहा था। यूहन्ना ने जल्द ही यीशु को मसीहा मान लेना था। उसमें चौथाई के हाकिम के मुंह पर उसके पाप की बात बताने की हिम्मत भी थी (मत्ती 14:3, 4; मरकुस 6:17, 18), जिस कारण हेरोदेस ने उसे नकार दिया और उसकी हत्या करवा दी।

यूहन्ना का बपतिस्मा समय के एक विशेष काल तक सीमित था। प्रेरितों 19:1-6 वाले लोगों को यूहन्ना ने नहीं बल्कि किसी और ने ''यूहन्ना का बपतिस्मा'' दिया हुआ था और यह बपतिस्मा काफी देर बाद तक दिया जाता रहा था। बहुत सम्भावना है कि अपुल्लोस ने ही यह बपतिस्मा दिया होगा (देखें प्रेरितों 18:24-28)। यूहन्ना से बपतिस्मा लेने के बाद, यह सुसमाचार का अच्छा वक्ता, लोगों को यूहन्ना की डुबकी के साथ बपतिस्मा देता रहा। उसे लगता होगा कि यूहन्ना मर गया है इसलिए दूसरों को उसके पदचिह्नों पर चलना आवश्यक है। बाद में प्रिस्किल्ला और अक्विल्ला ने उसकी शिक्षा और व्यवहार में सुधार किया। प्रेरितों 18 में अपुल्लोस द्वारा दी जाने वाली इस शिक्षा की बात प्रेरितों 19 में इफिसुस में कुछ लोगों को नये सिरे से बपतिस्मा दिए जाने की कहानी की भूमिका बनी। जब पौलुस को उनकी स्थिति का पता चला तो उसने उन्हें यीशु के नाम से बपतिस्मा दिया।

यूहन्ना के बपतिस्मे और ग्रेट कमीशन वाले यीशु के बपतिस्मे में अंतर दोहरे थे। यूहन्ना का बपतिस्मा यीशु के नाम से नहीं था, न ही यह ''पवित्र आत्मा का दान'' पाने के लिए था (देखें प्रेरितों 2:38)। ''यूहन्ना का बपतिस्मा'' जिसे केवल वही देता था, मन फिराव का बपतिस्मा था, जिसने लोगों को मसीह के आने पर उसे ग्रहण करने के लिए तैयार किया। अपने प्रेरितों को (मत्ती 28:18-20) उसके संदेश पर विश्वास लाने वालों को डुबकी देने की मसीह की आज्ञा सब विश्वासियों के लिए थी, जैसा कि डीकन या सुसमाचार प्रचारक फिलिप्पुस द्वारा दिखाया गया, जिसके सिखाने से सामरिया में बहुतों ने डुबकी ली (प्रेरितों 8:12)।

''मुझ से शक्तिमान'' (1:6-8)[8]

[6]यूहन्ना ऊंट के रोम का वस्त्र पहिने और अपनी कमर में चमड़े का कटिबन्ध बांधे रहता था तथा टिड्डियां और वनमधु खाया करता था, [7]और यह प्रचार करता था, ''मेरे बाद वह आने वाला है, जो मुझ से शक्तिमान है; मैं इस योग्य नहीं कि झुककर उसके जूतों का बन्ध खोलूं। [8]मैं ने तो तुम्हें जल से बपतिस्मा दिया है पर वह तुम्हें पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देगा।''

आयतें 6, 7. ''मेरे बाद वह आने वाला है, जो मुझ से शक्तिमान है।'' यूहन्ना ने कभी यह प्रभाव नहीं दिया कि वह उसके जो उससे कहीं महत्वपूर्ण था, अग्रदूत से बढ़कर कुछ

था। उस ज़माने में छात्र अपने गुरु के हर बात में देनदार होता था सिवाय इसके कि वह अपने आपको गुलाम के रूप में पेश करे; उसे अपने स्वामी के जूते खोलने या उतारने के लिए विवश नहीं किया जा सकता था। यूहन्ना ने कहा कि मैं **इस योग्य नहीं कि झुककर** [यीशु] **के जूतों का बन्ध खोलूं**।

अपने लिए यूहन्ना की गवाही, यीशु की अपने बारे में गवाही के लगभग उल्ट थी, क्योंकि उसने कहा कि यूहन्ना ''भविष्यद्वक्ता से भी बड़ा'' था (मत्ती 11:9 मलाकी 3:1 का संकेत देता है)। मत्ती 11:11 में यीशु ने एक बड़ी प्रशंसा करते हुए कि राज्य का कोई भी व्यक्ति यूहन्ना ''से बड़ा है,'' इस बात को आगे कहा। इस सच्चाई का पता तभी चल सकता है जब यह समझ में आ जाए कि राज्य तब तक नहीं आया था; इसलिए यूहन्ना को इसकी आशिषें नहीं मिली थीं।

यीशु ने यह भी कहा कि यूहन्ना ''एलिय्याह जो आने वाला था'' था (मत्ती 11:14)। उसने कहा कि यूहन्ना के बारे में सच्चाई को सचमुच में समझने के इच्छुक ने इसे समझ लेना था: ''जिसके सुनने के कान हों वह सुन ले'' (मत्ती 11:15)। यूहन्ना के वस्त्र और आदतों से उसके एलिय्याह के जैसा होने का पता चलता था। उसके वस्त्र **ऊंट के रोम** के और **चमड़े का कटिबन्ध बांधे** बंधकर टिकाए जाते थे। उसका भोजन बड़ा सादा था जिसमें **टिड्डियां और वनमधु** हुआ करता था (देखें 2 राजा. 1:8)। एलिय्याह के रूप में यूहन्ना की पहचान का बड़ा आत्मिक महत्व था, परन्तु इसका अर्थ इतना कठिन था कि लोगों को समझना और विश्वास करना मुश्किल था।

आयत 8. मरकुस में आत्मा के बपतिस्मे से सम्बन्धित चेलों से आवश्यक प्रतिज्ञा मिलती है। यहून्ना ने कहा, **''मैं ने तो तुम्हें जल से बपतिस्मा दिया है पर वह तुम्हें पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देगा।''** मत्ती ने इसमें ''और आग से'' जोड़ दिया (मत्ती 3:11)। इस प्रतिज्ञा का पहला भाग केवल उसकी ओर इशारा हो सकता है जो प्रेरितों के साथ पिन्तेकुस्त के दिन हुआ; परन्तु मत्ती 3:12 के अनुसार इसका दूसरा भाग ''अनन्तकाल के न्याय'' की आग की ओर संकेत करता है।

कुछ (प्रेरितों) को ''आत्मा का बपतिस्मा'' मिलना था जबकि दूसरों को ''आग'' (नरक) का बपतिस्मा मिलना था। मरकुस 1:8 वाले पवित्र आत्मा के बपतिस्मे का प्रेरितों 2:1-4 वाली आग के बपतिस्मे या ''आग की सी जीभों'' से कोई सम्बन्धित नहीं है, क्योंकि वह वचन पवित्र आत्मा के दिखाई देने वाले प्रदर्शन की ही बात कर रहा है, जो कुछ इस प्रकार से उतरा लगा कि हर प्रेरित के ऊपर आग की लपटों जैसा कुछ गिर रहा है।

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने यह नहीं कहा था कि पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने वाले हर किसी को आग में डुबकी भी मिलनी थी। न ही बाइबल यह बताती है कि आज किसी या हर चेले को आत्मा का बपतिस्मा मिलेगा। पवित्र आत्मा के बपतिस्मा की प्रतिज्ञा केवल प्रेरितों के साथ की गई और इससे जो कुछ हासिल होना था, वह केवल उन्हीं के द्वारा किया जाना था (देखें यूहन्ना 14:26; 16:13; प्रेरितों 1:5)। आत्मा ने सारी सच्चाई को सिखाने और सब लोगों के लिए सच्चाई का संदेश लिखने के लिए उन्हें ईश्वरीय प्रेरणा प्रदान की।

कुरनेलियुस के घराने पर पवित्र आत्मा का उतरना (प्रेरितों 10:44) एक अपवाद वाली घटना थी। जिस प्रकार से इन लोगों पर आत्मा उतरा, वह परमेश्वर की इस घोषणा का प्रमाण

था कि अन्यजातियों को अब मसीही बनने के लिए अवसर वैसे ही दिया गया है, जैसे यहूदियों को। यह प्रमाण अन्य-अन्य भाषाएं बोलने के रूप में दिया गया। पवित्र आत्मा इन अन्यजातियों के ऊपर उतरा, परन्तु उसने कुरनेलियुस के घराने के लोगों को वह संपूर्ण शक्ति और अधिकार नहीं दिया, जो प्रेरितों को मिला था।

साफ़ है कि कुरनेलियुस के घराने के साथ होने वाली इस एकमात्र घटना में अन्यभाषा बोलने का केवल एक ''दान'' है; और यह दान प्रेरितों के हाथ रखने के द्वारा नहीं दिया गया था (प्रेरितों 10:44-48)। यह इस बात को साबित करता है कि परमेश्वर अन्यजातियों को राज्य में प्रवेश करने का अवसर दे रहा था, इसलिए पतरस को तथा कलीसिया के और सब लोगों को उन्हें इस अवसर का लाभ उठाने के लिए उनकी सहायता करनी चाहिए थी।

जो आश्चर्यकर्म प्रेरितों ने किए उनसे यह बात साबित हो गया कि वे सच बोल और लिख रहे थे। जो आश्चर्यकर्म उन्होंने किए उनसे उनकी कही गई बातों की पुष्टि हुई, बिल्कुल वैसे जैसे यीशु के कामों से उसकी पहचान साबित हुई (देखें यूहन्ना 20:30, 31; इब्रा. 2:3, 4)। प्रेरितों ने वही चिह्न दिखाए और अचम्भे काम किए जो यीशु ने किए थे। पौलुस अन्य बारहों प्रेरितों की तरह मसीह के ''असली प्रेरित के सभी चिह्न'' दिखा सकता था (प्रेरितों 2:43; 5:12; 2 कुरि. 12:11, 12)।

अपने सात ''एकों'' में पौलुस ने ''एक बपतिस्मा'' बताया (इफि. 4:5; देखें 1 कुरि. 12:13)। उसकी घोषणा ''आत्मा के बपतिस्मे'' के जारी रहने के विचार को नकार देती है क्योंकि पानी का बपतिस्मा ही ग्रेट कमीशन का वह ''एक बपतिस्मा'' था और प्रेरितों के काम पुस्तक में हर मनपरिवर्तन में उसी एक बपतिस्मे की बात है। सचमुच में एकवचन के साथ जो केवल एक आयत में मनपरिवर्तन की बात बताता है, हर विवरण में, जो मनपरिवर्तन का वर्णन एक से अधिक आयतों में करता है, यह शामिल है (प्रेरितों 18:8)।

इसके अलावा 1 कुरिन्थियों 12:13 वाला बपतिस्मा पानी का बपतिस्मा ही है। इस वचन का अर्थ कुछ इस प्रकार होना चाहिए: ''सब ने एक ही आत्मा के वचनों का विश्वास किया और उस विश्वास के साथ मेल खाते हुए बपतिस्मा लिया।'' पानी का बपतिस्मा ही है जो हमें मसीह में रखता है (देखें रोमियों 6:3, 4; गला. 3:26, 27)। रोमियों 6:4 बताता है कि बपतिस्मा (डुबकी/दफ़नाया जाना) लेने वाला व्यक्ति जीवन के नयेपन में चलने के लिए जी उठता है। हम यह नहीं कहेंगे कि ''पवित्र आत्मा का बपतिस्मा'' पाने वाला व्यक्ति पवित्र आत्मा से उठ जाना था। आत्मा प्रेरितों के ऊपर रहा और उसने उन्हें छोड़ा नहीं, चाहे प्रेरितों 4:23-31 में ''नई ताज़गी'' या पुष्टि होने का पता चलता है। उन्होंने प्रचार करने के ''साहस'' के लिए प्रार्थना की और पवित्र आत्मा से यह भरे जाना अवश्य ही उनकी प्रार्थना का उत्तर होगा; इन प्रेरितों के लिए यह विशेष दान था।[9]

यीशु का बपतिस्मा (1:9-11)[10]

[9]उन दिनों में यीशु ने गलील के नासरत से आकर, यरदन में यूहन्ना से बपतिस्मा लिया। [10]और जब वह जल से निकलकर ऊपर आया, तो तुरन्त उसने आकाश को खुलते और

आत्मा को कबूतर के समान अपने ऊपर उतरते देखा। [11]और यह आकाशवाणी हुई, ''तू मेरा प्रिय पुत्र है, तुझ से मैं प्रसन्न हूं।''

यीशु के बपतिस्मे का मरकुस का विवरण मत्ती और लूका के विवरणों से छोटा है। मरकुस ने यीशु के निजी जीवन के विवरण देने के बजाय उसके आश्चर्यकर्मों वाले कामों पर अधिक ध्यान दिया। यीशु के लिए कहा गया कि उसे आत्मा मिला था और उसे पिता की ओर से सीधे गवाही देने की स्वीकृति प्राप्त थी।[11]

आयत 9. उन दिनों में यीशु ने गलील के नासरत से आकर, यरदन में यूहन्ना से बपतिस्मा लिया। अपने पिता की आज्ञाओं को विनम्रतापूर्वक मानने का यह अकेला कार्य ही हमें मसीह की सोच के बारे में बहुत कुछ बता देता है। एक पुरानी परम्परा[12] में दावा किया जाता है कि उसकी माता और उसके भाइयों ने उससे यूहन्ना के पास जाकर बपतिस्मा लेने को कहा, जबकि वह उसके पास जाने से इनकार कर रहा था। मत्ती 3:15 के प्रकाश में यह विचार गलत लगता है, जो कहता है कि उसने ''सब धार्मिकता को पूरा'' करने के लिए बपतिस्मा लेना चुना था। परमेश्वर की प्रेरणा से, दाऊद ने कहा कि ''तेरी सब आज्ञाएं धर्ममय हैं'' (भजन 119:172)। यीशु परमेश्वर का पुत्र था और उसमें कोई पाप नहीं था जिसे क्षमा किया जा सके (देखें मरकुस 1:4; इब्रा. 4:15), तो फिर वह यूहन्ना से बपतिस्मा लेने के लिए क्यों आया? यीशु को मालूम था कि यूहन्ना का बपतिस्मा परमेश्वर की धार्मिक आज्ञा है; सो वह उससे बपतिस्मा लेकर पिता की इच्छा को पूरा करने के लिए बड़ी उत्सुकता से आया।

क्या यीशु ने भी पूरी तरह से हमारे साथ मेल खाने के लिए बपतिस्मा लिया? स्पष्टतया वह कई प्रकार से हमारे जैसा बना: (1) वह हमारी भूख और धार्मिकता की खोज में हमारे साथ हो लिया (देखें मत्ती 5:6)। (2) उसने अपने ऊपर हमारे पापों का बोझ ले लिया और प्रतीकात्मक रूप में उसने हमारे पापों का अंगीकार किया, जबकि उसने कोई पाप नहीं किया था। (3) अपने द्वारा उसने हमें ''परमेश्वर की धार्मिकता'' बनने के योग्य बनाया (2 कुरि. 5:20, 21)। (4) वह हमारे लिए नमूने के रूप में बपतिस्मा लेने को तैयार था ताकि हम धर्म के इस कार्य में उसका अनुसरण करें। (5) मनुष्यजाति के प्रतिनिधि के रूप में, उसने पूर्ण आज्ञापालन किया। यीशु ने इस डुबकी में समर्पण करके यूहन्ना को परमेश्वर के नबी के रूप में अपना आदर दिखाया।

आयत 10. और जब वह जल से निकलकर ऊपर आया, तो तुरन्त उसने आकाश को खुलते और आत्मा को कबूतर के समान अपने ऊपर उतरते देखा। लूका 3:21 लिखता है कि ''जब सब लोगों ने बपतिस्मा लिया और यीशु [ने] भी बपतिस्मा लिया।'' हो सकता है कि चाहे हम पक्का न बता सकते हों कि उस दिन यूहन्ना से बपतिस्मा लेने के लिए आने वाले सब लोगों को पहले ही बपतिस्मा दिया जा चुका था और वे चले गए थे। इस प्रकार स्वर्ग की गवाही की इस बड़ी घटना को देखने के लिए केवल यीशु और यूहन्ना अकेले थे।

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने गवाही दी कि उसने आत्मा को यीशु पर उतरते देखा था (यूहन्ना 1:32-34)। लोग यूहन्ना को नबी मानते थे, इसलिए स्वाभाविक ही है कि उन्होंने इस प्रकाशन की उसकी बातों को मान लिया होगा। उसके बाद से, सबको पता था कि यीशु के पास

जो आत्मा है वह शक्तिशाली और असीमित है। यूहन्ना 3:34 इसे कहता है कि यीशु को ''बिना नाप के'' आत्मा मिला था।[13]

आयत 11. और यह आकाशवाणी हुई, ''तू मेरा प्रिय पुत्र है, तुझ से मैं प्रसन्न हूं।'' आकाश के खुलने पर आत्मा का आना यूहन्ना के लिए एक निशान था कि यह वही है जिसके लिए लोगों को तैयार करने के लिए उसे भेजा गया था। यूहन्ना को तब तक यह मालूम नहीं था कि यीशु ही मसीहा है, जब तक उसने पवित्र आत्मा को उसके ऊपर उतरते हुए नहीं देखा था। बाद में वह सब लोगों के पास यह घोषणा कर पाया कि यीशु ही ''परमेश्वर का मेमना है जो जगत का पाप उठा ले जाता है'' (यूहन्ना 1:29)। यह घटना नये नियम में मसीह के परमेश्वर होने की सबसे बड़ी गवाहियों में से एक है।

क्या परमेश्वर हमारे लिए पानी से बाहर आने पर पुत्र होने की घोषणा करता है जैसे उसने यीशु के बपतिस्मे पर दी? चाहे वह बोलकर ऐसा नहीं करता, परन्तु उसमें डुबकी लेने पर हम मसीह के साथ एक हो जाते हैं (देखें गलातियों 3:26, 27)।

यीशु ने हमें नमूना देने के लिए बपतिस्मा लिया, परन्तु उसका बपतिस्मा उससे कहीं बढ़कर है। इससे स्वर्ग में अपने पिता के सामने हमारे प्रभु के सम्पूर्ण समर्पण का पता चला। हमारा बपतिस्मा हमारे लिए यही अर्थ देने वाला होना चाहिए। मसीह के साथ दफ़नाए जाकर हम उसके साथ मिल जाते हैं और उसके साथ एक हो जाते हैं। हम उसके साथ नये जीवन में प्रवेश करने के लिए जी उठते हैं (देखें रो. 6:3, 4)।

शैतान द्वारा परीक्षा (1:12, 13)[14]

[12]तब आत्मा ने तुरन्त उसको जंगल की ओर भेजा। [13]जंगल में चालीस दिन तक शैतान ने उसकी परीक्षा की; और वह वन पशुओं के साथ रहा, और स्वर्गदूत उसकी सेवा करते रहे।

हमारे पास सुसमाचार के विवरणों का ज्ञान पाए बिना यीशु की समझ में गहराई तक जाने का और कोई तरीका नहीं है। यह विवरण समझ पाने का शक्तिशाली माध्यम है। ऐसा विशेष करके हमारे अपने प्रभु की परीक्षाओं के अध्ययन में होता है। भाग में कष्ट के बिना (लूका 22:44) जिसे बाद में क्रूस की महिमा आई और हमारा विश्वास किसी भी अन्य घटना से बढ़कर यीशु के जीवन की इस घटना को पढ़ने से अधिक मज़बूत हो सकता है।

आयतें 12, 13. परीक्षा की शब्द πειράζω (*peirazō*) लिया गया है और इस संदर्भ में इसका अर्थ ''बुराई करने के बहकावे में आने'' से बढ़कर ''परखे जाने'' का अधिक है, चाहे **शैतान** के मन में यही हो। **भेजा** शब्द यह संकेत दे सकता है कि यीशु इस प्रकार से परखे जाने के लिए तैयार नहीं है, परन्तु परमेश्वर की इच्छा थी कि ऐसा हो, और उसने इसे मान लिया। मत्ती 4:1 कहता है कि आत्मा यीशु को ''ले गया'', परन्तु मरकुस 1:12 में ''भेजा'' अधिक शक्तिशाली शब्द है (ἐκβάλλω, *ekballō* से लिया गया है, जिसका इस्तेमाल मरकुस में अठारह बार हुआ है जिसमें से ग्यारह बार दुष्टात्माओं को निकाले जाने से सम्बन्धित है)। परमेश्वर चाहे अपने लोगों को ''परखे'' जाने की अनुमति देता है परन्तु वह किसी को भी बुराई

करने के अर्थ में परीक्षा में नहीं डालता (याकूब 1:13)।

मत्ती 4:2 कहता है कि परीक्षा चालीस दिनों के अंत में आई, जबकि मरकुस 1:13 और लूका 4:2 कहते हैं कि **चालीस दिन** के दौरान आई। दोनों ही स्पष्टतया उपवास के या तैयारी के दिनों वाले भाग को विशेष परीक्षाएं गिनते हैं, इस कारण परीक्षा के दिनों के भाग को। चालीस दिनों के अकेलेपन और धूप को हो सकता है कि मसीह को और अधिक मनुष्य अहसास करवाने के लिए बनाया गया हो ताकि वह सच में परीक्षा को महफूज़ कर सके।[15] केवल मरकुस ही उन **वनपशुओं** का उल्लेख करता है जो यीशु के अकेले होने की भावना को जोड़ते होंगे। प्रतीकात्मक रूप में कहें, तो जैसे बहुत पहले दानिय्येल के लिए हुआ था परमेश्वर ने सिंहों के मुंह बंद कर दिए होंगे। मरकुस यहां पर परमेश्वर द्वारा यीशु को दी गई सुरक्षा को हमारी समझ को बढ़ाने के लिए कुछ और भी जोड़ सकता था। इससे भी मसीह राजा के अपने राज्य की शक्ति की ओर ध्यान दिलाया गया, जो कि जल्द आने वाला था। मरकुस कहता है कि सहायता **स्वर्गदूत** देते थे। परन्तु वचन यह नहीं कहता कि कब। मत्ती कहता है कि यह सहायता चालीस दिनों के अंत में आई।

जंगल में परीक्षा को यहूदिया के, लम्बे, यरीहो से दूर सघन जंगल में हुई होगी मानी जाती है। इब्रानी भाषा में इसे ''जेशीमोन'' कहा जाता है जिसका अर्थ ''उजाड़'' है। यीशु की परीक्षा का यह संभावित स्थान यरीहो के ऊपर का पहाड़ है, जिसने अब 1,200 फुट की ढलानों की चोटी के निकट एक मठ है। वहां से, समुद्र तल से 800 फुट से नीचे, सुन्दर फलों के साथ यरीहो के मरु उद्यान को देखा जा सकता है। भरपूर मात्रा में केवल कुछ ही दूरी पर खाना होने पर रोटी बनाने की परीक्षा सबसे कठिन परीक्षा रही होगी।

जंगल में परमेश्वर के स्थान के रूप में इस्राएली यहां हार गए थे, वहीं परमेश्वर का पुत्र यीशु जीत गया![16] यह तथ्य कि परीक्षा यीशु के बपतिस्मा लेने के **तुरन्त** बाद में हुई दिमाग में एक सवाल लाती है। क्या शैतान किसी के मसीह के आरम्भिक रूप में आज्ञा मानने के तुरन्त बाद उस खोए हुए व्यक्ति को फिर से हासिल करने के लिए पूरा जोर लगा देता है? यह तो पक्का था कि शैतान ने यीशु की परीक्षा लेने लग पड़ना था जैसे ही प्रभु ने शैतान पर विजय पाने का अपना काम आरम्भ किया। शैतान ने छोड़ा नहीं, परन्तु केवल ''कुछ समय के लिए'' (लूका 4:13; KJV)।

शायद जब भीड़ ने ''ज़बर्दस्ती यीशु को पकड़कर उसे राजा बनाना चाहा'' तौभी यह शैतान की एक और परीक्षा थी (यूहन्ना 6:15)। यीशु की आने वाली मृत्यु पर पतरस की डांट एक और परीक्षा हो सकती है। पतरस के सुझाव कि यीशु को मरना नहीं चाहिए, उसकी प्रतिक्रिया बड़ी सीधी थी। यीशु ने कहा, ''हे शैतान, मेरे सामने से दूर हो! तू मेरे लिये ठोकर का कारण है; क्योंकि तू परमेश्वर की बातों पर नहीं, परन्तु मनुष्यों की बातों पर मन लगाता है'' (मत्ती 16:23)। किसी आदमी को इससे बढ़कर और डांट नहीं मिली होगी। साफ़ है कि यीशु का मानना था कि शैतान पतरस के द्वारा काम कर रहा है। इसी प्रकार से यहूदा का काम करना निश्चित रूप में शैतान से मिलकर ही था (देखें लूका 22:3, 53; यूहन्ना 14:30)। यीशु के लिए अपनी नाकामी अपनी पृथ्वी की सारी सेवकाई को करने के लिए भारी बोझ रही होगी। वह अंत तक यहूदा के साथ काम करता रहा। यीशु के उस पर मरने से पहले यहूदा ने खुद मर गया।

''समय पूरा हुआ है'' (1:14, 15)[17]

[14]यूहन्ना के पकड़वाए जाने के बाद यीशु ने गलील में आकर परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार प्रचार किया, [15]और कहा, ''समय पूरा हुआ है, और परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है; मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो।''

आयत 14. मरकुस के अनुसार सुसमाचार विशेषकर यीशु की ''सार्वजनिक सेवकाई का सुसमाचार'' है। जैसे ही यीशु ने अपनी सार्वजनिक सेवकाई आरम्भ की, यूहन्ना ने अपनी सेवकाई बंद कर दी। क्योंकि हेरोदेस द्वारा **यूहन्ना के पकड़वाए जाने के बाद** यीशु के लिए यहूदिया को छोड़ **गलील** को जाना आवश्यक हो गया था क्योंकि उसकी ''घड़ी'' अभी नहीं आई थी।[18]

आयत 15. इस आयत में शब्द का क्रमांक यह संकेत नहीं देता कि यहूदियों ने यीशु के प्रचार को मानकर मन फिराया। वे परमेश्वर में पहले से विश्वास करते थे, परन्तु उन्हें मसीह के **सुसमाचार पर विश्वास** करने की तैयारी के रूप में **मन फिराना** आवश्यक था। बिना विश्वास के परमेश्वर को प्रसन्न करना अनहोना है (इब्रा. 11:6)। इसलिए विश्वास से पहले आया मन फिराव स्वीकार्य नहीं होना था। यह शिक्षा कि मन फिराना विश्वास से पहले होता है, यानी यह कि कोई इतना वंचित हो सकता है कि परमेश्वर के उस पर काम करके उससे मन फिरवाने तक वह विश्वास नहीं कर सकता, बाइबल के उल्ट है।

राज्य निकट होने की बात वैसे ही है जैसे यह कहना कि यह ''निकट आ पहुंचा'' (लूका 10:9)। **समय** [καιρός, *kairos*] **पूरा हुआ है** अवश्य ही दानिय्येल 9:24-27 की बात होगी, जो कि मसीहा के आने के समय के सही-सही होने से सम्बन्धित एकतात्र भविष्यद्वाणी है। दानिय्येल 2 अध्याय केवल रोमी साम्राज्य के दिनों के सामान्यकाल की बात करता है। जबकि दानिय्येल 9:24-27 अधिक सही है। यरूशलेम को बनाने का ''आज्ञा'' एज्रा 7:11 (431 ई.पू.) और यह यीशु की सेवकाई का समय 26 ई. तक ले आएगा। (यदि आपनी सेवकाई के आरम्भ में यीशु तीस वर्ष का था तो उसका जन्म 4 ई.पू. में हुआ देखें लूका 3:23.) । दानिय्येल ने समय की भविष्यद्वाणी ''पूरी संख्या'' में की और यीशु ने कहा पूरा होने का समय आ गया।

भविष्यद्वाणी के सामान्य समय के पूरा होने की बात को जानते हुए, यहूदी लोग मसीह के आने की राह देख रहे थे और उन्हें बड़ी उम्मीद थी। परन्तु उन्हें समझ में नहीं आया कि राजा उनके साथ था और उसका राज्य तैयारी के अंतिम चरणों में से था। पिन्तेकुस्त के दिन आत्मा के उतरने के साथ राज्य में पृथ्वी पर आत्मा के द्वारा स्वर्ग से यीशु द्वारा संचालित होना आरम्भ हो जाना था।

यदि 30 ई. तक राज्य ''निकट'' नहीं था तो या तो यीशु को गलती लगी या अपने राज्य के आने को टाल दिया। कुलुस्सियों 1:13 के अनुसार, हर मसीही अब उसके राज्य में आएगा। यदि हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षाएं सही होती, तो इसका अर्थ यह होना था कि (1) यीशु ने राज्य के निकट होने के सम्बन्ध में झूठी भविष्यद्वाणी की, (2) उसने अपना मन बदल लिया या (3) परमेश्वर ने आने वाले राज्य की बातें उस पर अभी प्रकट नहीं की। हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा यीशु को या तो गलत, भ्रमित या धोखा देने वाला बना देती है।

हमारे पास कोई प्रमाण नहीं है कि यीशु दोबारा पृथ्वी पर कभी कदम रखेगा। यूहन्ना 17:11 कहता है कि वह ''अब जगत में नही'' है और 1 थिस्सलुनीकियों 4:14-17 कहता है कि हम उसे ''बादलों में मिलेंगे'' और उसके बाद हम ''सदा प्रभु के संग रहेंगे।'' इसलिए मसीह के इस पृथ्वी पर के आने वाले राज्य को बनाना बिना समर्थन के है।

शमौन, अन्द्रियास, और यूहन्ना को बुलाना (1:16-20)[19]

[16]गलील की झील के किनारे किनारे जाते हुए, उसने शमौन और उसके भाई अन्द्रियास को झील में जाल डालते देखा; क्योंकि वे मछुवे थे। [17]यीशु ने उनसे कहा, ''मेरे पीछे आओ; मैं तुम को मनुष्यों के मछुवे बनाऊंगा।'' [18]वे तुरन्त जालों को छोड़कर उसके पीछे हो लिए। [19]कुछ आगे बढ़कर, उसने जब्दी के पुत्र याकूब, और उसके भाई यूहन्ना को, नाव पर जालों को सुधारते देखा। [20]उसने तुरन्त उन्हें बुलाया; और वे अपने पिता जब्दी को मजदूरों के साथ नाव पर छोड़कर, उसके पीछे हो लिए।

आयतें 16, 17. यीशु के **गलील की झील के किनारे किनारे जाते हुए, उसने शमौन और उसके भाई अन्द्रियास को झील में जाल डालते देखा; क्योंकि वे मछुवे थे।** मरकुस आश्चर्यकर्म के द्वारा मछलियों के पकड़े जाने की बात छोड़ देता है जिसे लूका 5:1-11 में बताया गया है। यह घटना इस झील के किनारे वाली बुलाहट के थोड़ी देर बाद की होगी। चेला बनने के लिए शमौन की पहली बुलाहट उसके भाई अन्द्रियास के द्वारा हुई थी (यूहन्ना 1:40-42)।

यीशु में साधारण लोगों के साथ आकर्षित करने वाली बड़ी सामर्थ थी (देखें यूहन्ना 12:32)। उसने यह जानते हुए कि वे उसके लिए सबसे बढ़िया काम करने वाले होंगे, अपने पास व्यस्त लोगों को बुलाया। **''मेरे पीछे आओ''** की बुलाहट चेले बनने की बुलाहट नहीं थी; क्योंकि ये लोग तो स्पष्टतया पहले ही चेले थे। बल्कि यीशु मनुष्यों को अपने निकट साथी बनाने के लिए बुलाने की प्रक्रिया में था। इन लोगों ने यीशु के साथ पूर्णकालिक चेलों के रूप में घूमना और रहना था। बाद में उन्होंने मसीह के प्रेरितों की भूमिका की उपाधि मिल जानी थी। इन लोगों ने ''बारह'' का भाग बनना था, जो कि संसार के लिए यीशु के राजदूतों के लिए सामान्य शीर्षक है। परन्तु प्रेरित बनने की बुलाहट बाद में आई (मरकुस 3:13-15; लूका 6:12, 13)।

यीशु की बुलाहट ने ''मनुष्यों के मछुवे'' की अवधारणा को जन्म दिया। आत्माओं को जीतना बहुत हद तक मछलियां पकड़ने के जैसा ही है। जाल से कुछ मछलियां पकड़ी जाती हैं, परन्तु चारा डालकर एक ही समय में बहुत सी मछलियां आ जाती हैं। सुसमाचार उन लोगों को आकर्षित करता है जो इसके सदा रहने वाले संदेश को सुनते और दिल लगाकर अध्ययन करते हैं। इसके अलावा जैसे मछुआरों को मछलियों की जानकारी होना आवश्यक है, वैसे ही आत्माओं को जीतने वालों के लिए लोगों की आपत्तियों का उत्तर देना और उन्हें समझदारी से मसीह के पास ले जाना सीखना आवश्यक है (देखें 3:15)। अच्छा मछुआरा बनने के लिए धीरज का होना बड़ा आवश्यक है, और यही गुण एक अच्छे आत्माओं को जीतने वाले में भी होना आवश्यक है।

आयतें 18-20. इसके बाद यीशु ने **जब्दी के पुत्र याकूब, और उसके भाई यूहन्ना**

को, नाव पर जालों को सुधारते देखा। गलील की झील पर मछली पकड़ना किसी समय में फलता फूलता व्यवसाय था। आस-पास के नगरों के नाम किसी न किसी प्रकार से मछली या मछली पकड़ने से सम्बन्धित थे। ''बैतसैदा'' का अर्थ है ''मछली का घर'' और ''तरिख्या'' (मगदला) का अर्थ मूलतया ''नमकीन मछली का स्थान'' है। अधिकतर लोगों के लिए ताजा मछली बहुत कम होती थी, परन्तु नमकीन मछली रोम तक निर्यात होती थी। यूहन्ना यरूशलेम में मछली की थोक बिक्री करता होगा। जिस कारण उसे उस इलाके के कई प्रसिद्ध लोगों का पता होगा; और उसे यीशु की पेशी के समय महायाजक के घर के अंदर तक जा सका होगा (यूहन्ना 18:15, 16)।

यूहन्ना कहता है कि शमौन, याकूब और यूहन्ना ने यीशु के पीछे चलने के लिए **तुरंत** अपना काम छोड़ दिया। याकूब और यूहन्ना ने भी **अपने पिता जब्दी को मजदूरों के साथ नाव पर छोड़** दिया। ये चेले यीशु से सुनते और उससे सीखते रहे; परन्तु जब वह कफ़रनहूम के इलाके में था, तो लगता है कि वे बीच बीच में मछली पकड़ने के लिए लौट जाते थे। ऐसे एक अवसर पर यीशु ने पूर्णकालिक आधार पर उन बारहों को **उसके पीछे हो** लेने को कहा।

यीशु के पीछे हो लेने का अर्थ महंगा होना था; क्योकि उन्हें लगातार आमदनी होने की किसी उम्मीद के साथ साथ, आरामदायक बिस्तर या प्रतिदिन की आवश्यकताओं का पूरा होना और अपने कामकाज को पीछे छोड़ना पड़ना था। उन्हें यीशु की शेष सेवकाई और क्या पता अपने शेष जीवनों के लिए उदार समर्थकों पर निर्भर होना पड़ना था। इसके बावजूद उन्होंने यीशु के पीछे चलने का निश्चय किया, कीमत चाहे जो भी हो। उनके पास हो सकता है कि कोई घर, बिस्तर और दौलत न हो, परन्तु उन्हें यीशु की संगति में चलने, जीवित परमेश्वर की सेवा करने और उसके राज्य को फैलाने में सहायता करने का विलक्षण अवसर प्राप्त होना था। उनमें से एक याकूब, ने सिर कलम करने के सामान्य रोमी ढंग में तलवार से मारे जाकर प्रेरितों में पहला शहीद बनना था (प्रेरितों 12:1, 2)।

ये चारों, सामान्य मछुआरे थे। पुराने नियम में परमेश्वर द्वारा अपने लोगों की अगुआई करने के लिए बुलाए जाने वाले लोग आम तौर पर छोटे छोटे काम करने वाले व्यस्त लोग हुआ करते थे।[20] इसी प्रकार से नये नियम में हम देखते हैं कि यीशु ने अपने प्रेरितों के रूप में सेवा करने के लिए ऐसे लोगों को बुलाया, जिनके बारे में सोचा नहीं जा सकता।[21] छोटे छोटे लोगों को क्यों बुलाया गया है? सम्भव कारण यह है: (1) उनके मन पूर्वधारणा से मुख्य थे, जो नई सच्चाई को मान लेने के लिए तैयार थे। वे अपने महत्व और आवश्यकताओं की कमी के दावों से बदलने नहीं थे। (2) सुसमाचार के सामर्थ इसके सेवकों की प्रबलता में अधिक प्रबल होनी थी (देखें 1 कुरि. 2:3-5; 2 कुरि. 4:7)।[22]

आराधनालय में उसका उपदेश और दुष्टात्मा से ग्रस्त आदमी को चंगा करना (1:21-28)[23]

[21]तब वे कफरनहूम में आए, और वह तुरन्त सब्त के दिन आराधनालय में जाकर उपदेश करने लगा। [22]और लोग उसके उपदेश से चकित हुए; क्योंकि वह उन्हें शास्त्रियों के

समान नहीं, परन्तु अधिकारी के समान उपदेश देता था। [23]उसी समय, उनके आराधनालय में एक मनुष्य था, जिस में एक अशुद्ध आत्मा थी। [24]उसने चिल्लाकर कहा, ''हे यीशु नासरी, हमें तुझ से क्या काम? क्या तू हमें नष्ट करने आया है? मैं तुझे जानता हूं, तू कौन है? परमेश्वर का पवित्र जन!'' [25]यीशु ने उसे डांट कर कहा, ''चुप रह; और उस में से निकल जा।'' [26]तब अशुद्ध आत्मा उसको मरोड़कर, और बड़े शब्द से चिल्लाकर उस में से निकल गई। [27]इस पर सब लोग आश्चर्य करते हुए आपस में वाद-विवाद करने लगे, ''यह क्या बात है? यह तो कोई नया उपदेश है! वह अधिकार के साथ अशुद्ध आत्माओं को भी आज्ञा देता है, और वे उसकी आज्ञा मानती हैं।'' [28]और उसका नाम तुरन्त गलील के आस पास के सारे प्रदेश में फैल गया।

आयतें 21, 22. स्पष्ट मछुआरों की बुलाहट के बाद अगले **सब्त** यीशु ने **कफरनहूम** में **आराधनालय** में **उपदेश** आरम्भ कर दिया।[24] दूसरी सदी के आराधनालय के खण्डहर इस नगर के खण्डहरों में आज भी देखे जा सकते हैं, जो सम्भवतया उसी जगह पर हैं जहां पर पहली सदी में थे। एक खम्भे के ऊपर एक शिलालेख है कि इसके निर्माण के लिए किसी रोमी सूबेदार ने चंदा दिया था। सूबेदारों को जो रोमी सेनाओं का आधार थे, को नये नियम में हर जगह भद्र लोग दिखाया गया है।[25]

लोग यीशु के उनको सम्बोधन करने के ढंग **से चकित** हुए। वह उन्हें **शास्त्रियों के समान नहीं** जो केवल पहले के अधिकारियों को उद्धृत करते थे **परन्तु अधिकारी के समान** बोलता था (1:22; देखें मत्ती 7:28, 29)। शास्त्री व्यवस्था और रब्बियों का अध्ययन करने और प्रतियां बनाने में समय बिता देते थे। 70 ई. के बाद, जब मन्दिर नष्ट हो गया, तो उनका रुतबा बढ़ गया, क्योंकि उन्होंने मौखिक व्यवस्था को लिखित रूप में सम्भालकर उसे ईमानदारी से इब्रानी धर्मशास्त्रों में उतार दिया।[26] परन्तु फरीसियों के साथ साथ शास्त्री भी यह दावा करने में कि यह मौखिक परम्परा मूसा की लिखित परम्परा से बढ़कर महत्वपूर्ण थी, बहुत आगे निकल गए; यीशु ने उन्हें उनके आज्ञा न मानने के कारण डांटा (मरकुस 7:5-13)। मसीह के साथ उनका टकराव था क्योंकि वह ''अधिकारी के समान उपदेश देता था'' जबकि वे केवल दूसरे अधिकारियों को उद्धृत कर सके थे।

कुमरान और मेसोरी लेख से मिले बाइबल के सक्रोलों के बीच संतोषजनक सहमति से पुराने नियम के लेख को बरकरार रखने में किए गए बढ़िया काम की पुष्टि हो चुकी है।[27] मरकुस जो बात कहना चाह रहा था उसे आज के धार्मिक समूहों को सुनना चाहिए जो अपनी परम्पराओं को पवित्र शास्त्र से बड़ा बना देते हैं।[28]

आयतें 23, 24. उनके आराधनालय में एक मनुष्य था, जिस में एक अशुद्ध आत्मा थी। सुसमाचार के विवरणों में ''दुष्टात्माओं'' और ''भूतों'' को बुरे या ''अशुद्ध'' ही दिखाया गया है। यूनानियों का मानना था कि कुछ अच्छे हैं और कुछ बुरे। यहूदी और यूनानी ''भूतों'' को मरे हुए लोगों की आत्माएं मानते थे, जो उनका मानना था कि जीवित लोगों पर कब्जा करके उन्हें अपने वश में कर लेते हैं। परन्तु मरे हुए लोगों के आत्माओं के रूप में उन लोगों में जो जीवित हैं रहने के विचार को नये नियम का कोई समर्थन नहीं है। वास्तव में यीशु ने साफ़ साफ़ बताया

कि मुर्दों के संसार से पृथ्वी पर वापसी नहीं हो सकती (लूका 16:19-31)।[29]

उस समय के यहूदियों और दूसरे लोगों पर दुष्टात्माएं कैसे हावी हो जाती थीं? एवन ग्रीन की यह संक्षिप्त टिप्पणी विचार किए जाने के योग्य है: ''भूत कामवासना और सैक्सुअल बात में फंस जाने वालों की नैतिक गिरावट को भांप लेते हैं, जो कि आज संसार में काबू से बाहर है'' [2 तीम. 3:1-9; प्रका. 9:21]।''[30]

परमेश्वर ने भूतों को बुरे जीव नहीं बनाया होगा, इसलिए अवश्य ही वे पहले अच्छे स्वर्गदूत रहे होंगे जिन्होंने परमेश्वर के विरुद्ध बगावत करने में शैतान का साथ देना चुना (2 पतरस 2:4)। पहले स्वर्ग में रहने के कारण भूतों को पता होगा कि यीशु कौन है (**परमेश्वर का पवित्र जन**)। इन भूतों को समय के अंत से पहले तक अनन्त नरक में नहीं फेंका जाना था (देखें मत्ती 25:31-46)।

मसीह की सेवकाई के दौरान पृथ्वी पर भूत विशेष तौर पर दिखाई देते हैं। शायद ऐसा इसलिए होने दिया गया ताकि मसीह उनके ऊपर अपनी सामर्थ को दिखा सके। इस पृथ्वी पर शैतान और उसके भूतों के काम को अब इफिसियों 6:12 में ''अंधकार'' शब्द के साथ चिह्नित किया जा सकता है: ''क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध, लहू और मांस से नहीं, परन्तु प्रधानों से, और अधिकारियों से, और इस संसार के अंध्कार के हाकिमों से और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं।''

पुराने नियम में ''ओझाओं'' या ''भूत साधने वालों'' के होने को माना गया है (''सिद्ध प्रेतों''; KJV; लैव्य. 19:31), उनके इस्तेमाल की मनाही थी। नया नियम दिखाता है कि भूतों का व्यक्तित्व तथा विश्वास था। ''विश्वास होना और थरथराना'' (याकूब 2:19) संकेत देता है कि कम से कम उन्हें अपने और बुरे संसार पर आने वाले परमेश्वर के न्याय की कुछ जानकारी तो है जिनमें उन्होंने योगदान दिया है। इन भूतों ने यीशु से पूछा, **''हे यीशु नासरी, हमें तुझ से क्या काम? क्या तू हमें नष्ट करने आया है?''**

आयतें 25-28. यीशु ने उसे डांट कर कहा, ''चुप रह; और उस में से निकल जा।'' तब अशुद्ध आत्मा उसको मरोड़कर, और बड़े शब्द से चिल्लाकर उस में से निकल गई। यीशु ने लूका 11:24-26 में अशुद्ध आत्माओं की आदतों पर आधारित एक दृष्टांत बताया। यह दृष्टांत दुष्टात्मा से पीड़ित एक व्यक्ति को दिखाता है, जिसे शुद्ध किया गया था परन्तु उसके जीवन में विश्वास नहीं था, जिस कारण उस भूत के लिए वापस आकर और बड़ा नुकसान करना सम्भव हो पाया। कहानी का तात्पर्य यह हो सकता है कि बहुत से यहूदियों ने यूहन्ना के प्रचार को सुनकर मन फिराया था परन्तु फिर यीशु को नकार दिया, इस कारण उन्होंने पहले से भी बुरे हो जाना था।

भूतों के सम्बन्ध में, हम केवल वही जान सकते हैं जो यीशु ने कहा। इससे आगे बहुत कम केश मिलता है। इफिसियों 2:2 ''आकाश के अधिकार के हाकिम अर्थात उस आत्मा जो अब भी आज्ञा न मानने वालों में कार्य करता है'' की बात करता है। वह हाकिम शैतान ही होगा, और शैतान के ''पुत्रों'' में काम करने वाली ''आत्मा'' में शैतान की शैतानी काम करने की शक्ति हो सकती है जिसे वह भेजता है।

इस पर सब लोग आश्चर्य करते हुए आपस में वाद-विवाद करने लगे, ''यह क्या बात है?'' साधारण लोगों को समझ में आ गया कि यह **अधिकार के साथ** कोई नया उपदेश

है। यीशु की कही गई बात में सामर्थ होने के कारण अधिकार स्पष्ट दिखाई देता है। जो बिना किसी धूम-धाम के जिसे कुछ लोगों ने सदियों से, बल्कि अब तक आविष्कार करके मूर्खतापूर्ण इस्तेमाल किया है, भूतों को निकाल सकता था। **उसका नाम तुरन्त गलील के आस पास के सारे प्रदेश में फैल गया।**

पतरस की सास को चंगा करना (1:29-31)[31]

[29]और वह तुरन्त आराधनालय में से निकलकर, याकूब और यूहन्ना के साथ शमौन और अन्द्रियास के घर आया। [30]और शमौन की सास ज्वर से पीड़ित थी, और उन्होंने तुरन्त उसके विषय में उससे कहा। [31]तब उसने पास जाकर उसका हाथ पकड़ के उसे उठाया; और उसका ज्वर उतर गया, और वह उनकी सेवा-टहल करने लगी।

आयत 29. वह शमौन और अन्द्रियास के घर आया। बहुत साल पहले इस्राएल जाने पर, मैं कफ़रनहूम में दूसरी सदी के आराधनालय के छूट गए कोने के आस पास देखने के लिए आकर्षित हुआ, पतरस के घर के खण्डहर। बाद में जब मैं वहां पर गया तो इसे और कटाव को रोकने के लिए टीन से ढका गया था। 1997 तक उसके ऊपर जो अब बेसमेंट लगता था, एक नया भवन बन चुका था। ऊंची छत जो ''फैबरनेकल'' जैसी दिखती थी, से अभी भी उस जगह में सीधे देखा जा सकता था। इस घर को वह घर कहने में कोई दिक्कत नहीं हुई जहां पतरस की सास चंगी हुई थी, क्योंकि यह आराधनालय के निकट बाइबल के विवरण से मेल खाता है (यह मानते हुए कि दूसरी सदी का ढांचा पहली सदी के ढांचे की तरह ही उसी भूमि तल पर था)।

आयतें 30, 31. शमौन की सास ज्वर से पीड़ित थी। इस वचन से यह स्पष्ट है कि पतरस (शमौन) की पत्नी थी जो उस समय जीवित थी और बाद में अपने पति के साथ मिशनरी गतिविधियों में उसके साथ जाती थी (1 कुरि. 9:5)। यह धार्मिक समूहों के नियमों के विपरीत है जो कलरजी को इस विचार के आधार पर विवाह करने से मना करते हैं कि कुंवारा रहना विवाहित होने से अधिक पवित्र है। यदि हमारे पास केवल यही वचन होता, तो ऐसी शिक्षा के खण्डन के लिए यही काफ़ी था। परन्तु इस वचन पर इस बात से और ज़ोर दिया गया है कि ''विवाह सब में आदर की बात समझी जाए'' (इब्रा. 13:4)।

उन्होंने तुरन्त उसके विषय में उससे कहा। तब उसने पास जाकर उसका हाथ पकड़ के उसे उठाया; और उसका ज्वर उतर गया, और वह उनकी सेवा-टहल करने लगी। इस भली स्त्री के फौरन चंगा होने से वह उठ गई और अपने अतिथियों की सेवा करने लगी। आम तौर पर ठीक होने के लिए बुखार एक हफ्ते या इससे अधिक रह जाता है। यह आश्चर्यकर्म का मुख्य चिह्न है: पूरी, फौरी चंगाई, जिसमें रोग या तकलीफ की जगह पूरी सामर्थ मिल जाती है। चंगाई सचमुच में मसीहा के होने का चिह्न था (मत्ती 8:17; लूका 7:22)।

उसका बहुत से लोगों का चंगा करना (1:32-34)[32]

[32]संध्या के समय जब सूर्य डूब गया तो लोग सब बीमारों को और उन्हें, जिनमें

दुष्टात्माएं थीं, उसके पास लाए। [33]और सारा नगर द्वार पर इकट्ठा हुआ। [34]उसने बहुतों को जो नाना प्रकार की बीमारियों से दुःखी थे, चंगा किया, बहुत सी दुष्टात्माओं को निकाला, और दुष्टात्माओं को बोलने न दिया, क्योंकि वे उसे पहचानती थीं।

आयतें 32, 33. यीशु के पतरस की सास को चंगा करने और आराधनालय में आश्चर्यकर्म का परिणाम यह हुआ कि **सारा नगर द्वार पर इकट्ठा हुआ**। यह सब्त का दिन था, इसलिए लोगों की भीड़ **संध्या** तक नहीं आई। यीशु के बारे में फरीसियों की मुख्य शिकायतों में से एक यह थी कि उसने सब्त के दिन चंगा किया।[33] स्पष्टतया उन्हें यीशु के आश्चर्यकर्म करने के महत्व की कोई परवाह नहीं थी; वे तो सबत के कथित उल्लंघन के लिए उसे दण्ड देना चाहते थे।

यह वचन **सब बीमारों और जिनमें दुष्टात्माएं थीं** में अंतर करता है।[34] मत्ती 12:22-29 एक और कुछ फरीसियों के इस तर्क का खण्डन करता है जिसका दावा था कि यीशु ''बालजबूल'' (शैतान) की सहायता से भूत निकाल रहा था, मरकुस 3:22-30 उसी अवसर की बात करता है परन्तु विशेषकर ''शास्त्रियों'' का नाम लेता है। बहुत से शास्त्री फरीसी थे।[35]

आयत 34. उसने बहुतों को जो नाना प्रकार की बीमारियों से दुःखी थे, चंगा किया, बहुत सी दुष्टात्माओं को निकाला। फिर से यहां पर ''बीमारियों'' (ἔχω, *echō*) से ''दुःखी'' (νόσος, *nosos*) होने और ''दुष्टात्माओं'' (δαιμόνιον, *daimonion*) में अंतर किया गया है। कुछ लोग दुष्टात्माओं से पीड़ित क्यों थे? टीकाकारों ने अनुमान लगाया है कि देश के अत्यधिक बुरा होने के कारण। शायद जादू में उनकी भागीदारी से वे दुष्टात्माएं उनके साथ घुली मिली थीं। यह केवल अंधविश्वास थे; दोनों विचारों को साबित करना कठिन होगा।

यीशु ने अपने या अपनी पहचान के बारे में **दुष्टात्माओं को बोलने न दिया, क्योंकि वे उसे पहचानती थीं**। इस प्रकार से उसने उन पर पूरी तरह से अधिकार होने को दिखाया। मरकुस कहता है कि उसने उन्हें बोलने से रोका **क्योंकि वे उसे सब जानती थीं**।

प्रार्थना के लिए एकांत का उसका समय (1:35-39)[36]

[35]भोर को दिन निकलने से बहुत पहिले, वह उठकर निकला, और एक जंगली स्थान में गया और वहां प्रार्थना करने लगा। [36]तब शमौन और उसके साथी उसकी खोज में गए। [37]जब वह मिला, तो उससे कहा, ''सब लोग तुझे ढूंढ रहे हैं।'' [38]उसने उनसे कहा, ''आओ; हम और कहीं आस-पास की बस्तियों में जाएं, कि मैं वहां भी प्रचार करूं, क्योंकि मैं इसी लिये निकला हूं।'' [39]अतः वह सारे गलील में उनके आराधनालयों में जा जाकर प्रचार करता और दुष्टात्माओं को निकालता रहा।

आयत 35. भोर को दिन निकलने से बहुत पहिले, वह उठकर निकला, और एक जंगली स्थान में गया और वहां प्रार्थना करने लगा। यशायाह 50:4 ने भविष्यद्वाणी की हो सकती है कि मसीहा ने हर सुबह परमेश्वर को कैसे ढूंढ़ना था। इस्राएल में अपने प्रचार के पहले दौरे के लिए उसे तैयार करने में सहायता के लिए प्रार्थना आवश्यक थी।

अधिकतर लोग दूसरों के साथ यहां तक कि नज़दीकी दोस्तों के साथ के बजाय अकेले में

बेहतर प्रार्थना कर सकते थे। हम में से हर किसी को, यीशु की तरह ऐसी जगह ढूंढ़नी आवश्यक है, जहां कोई दूसरा हमारी प्रार्थनाओं को सुन या रोक न सके। एल्बर्ट बार्नस ने लिखा है, ''जो व्यक्ति धर्म का आनन्द लेना चाहता है वह सुबह गुप्त में प्रार्थना की जगह ढूंढेगा। यदि ऐसा नहीं हो पाता, तो सब कुछ गलत हो जाएगा, हमारी भक्ति फीकी पड़ जाएगी। संसार हमें अपने विचारों से भर देगा।''[37] इसके अलावा, उसकी चलती रहने वाली गतिविधियों (शायद पिछली रात में की गई चंगाई) के लिए आवश्यक था कि उसे एकांत में कुछ समय मिले। यह पढ़ना अजीब और अप्रत्याशी है कि यीशु को अपने अंदर से शक्ति निकलने का एहसास हुआ (5:30) या यह कि वह ''थक'' गया (यूहन्ना 4:6)। थकावट के उसके समयों से पता चलता है कि वह वास्तव में पूरी तरह से हमारे जैसा मनुष्य था।

यीशु के व्यस्त जीवन में दस लिखित समय हैं जब उसने भीड़ से अकेले होना चाहा।[38] कई बार तो वह अकेला होने और अपने पिता से प्रार्थना करने के लिए अपने प्रेरितों से भी अलग हो जाता था। मरकुस ने उन तीन विशेष समयों को लिखा है जो यीशु ने प्रार्थना में बिताए (1:35; 6:46; 14:32-39)। प्रार्थना के ये समय आम तौर पर रात को और तनाव के समयों में होते थे। इस पहले अध्याय में उसके चहल पहल भरी रफ़्तार को दिखाया है जहां मरकुस ने कई अलग-अलग गतिविधियों के साथ साथ होने की बात लिखी। मरकुस हमें यीशु के जीवन के किसी विशेष दिन को दिखा रहा हो सकता है।

आयतें 36-39. तब शमौन और उसके साथी उसकी खोज में गए। जब वह मिला, तो उससे कहा, ''सब लोग तुझे ढूंढ रहे हैं।'' उसने उनसे कहा, ''आओ; हम और कहीं आस-पास की बस्तियों में जाएं, कि मैं वहां भी प्रचार करूं, क्योंकि मैं इसी लिये निकला हूं।'' जितना ध्यान यीशु पर दिया गया है यदि किसी आम आदमी पर दिया गया होता तो वह घमण्ड से भर जाता, परन्तु यीशु इसके बाद और जगहों पर वचन का प्रचार करने के लिए मुड़ गया। लूका 4:42 कहता है कि यीशु चला गया चाहे लोगों ने उससे रुकने का आग्रह किया। उसकी कार्यवाही दिखाती है कि बीमारों को चंगा करने से बड़ा काम वचन को सुनाना है।

आराधनालयों (συναγωγή, *sunagōgē*, सुनागोग मूल में, ''इकट्ठे लाना'') इकट्ठा होने के स्थानों या सभास्थालों को कहा गया है। इस शब्द के इस्तेमाल में भी इस्राएली लोगों ने नये नियम की कलीसिया का पूर्वाभास। चर्च के लिए ''कलीसिया'' (ἐκκλησία, *ekklēsia*) का अर्थ ''सभा'' है चाहे आम इस्तेमाल में इसे मिलने के स्थान में बिगाड़ दिया गया है। पुराने नियम में शायद भजन 74:8 को छोड़ (जो कहता है कि ''सभास्थलों को फूंक दिया'' गया था; ESV ''आराधनालय'' शब्द का कोई विशेष उपयोग नहीं है)। इसे बाद का भजन माना जाता है, शायद फारसीकाल का।[39]

1:39 में फिर से **दुष्टात्माओं को निकालता रहा** का उल्लेख है। ऐसे आश्चर्यकर्म से लोगों पर बहुत प्रभाव पड़ा हो सकता है। यीशु की पृथ्वी की सेवकाई के समय में मानवीय देहों पर दुष्टात्माओं पर कब्जे की बात आम लगती है। दुष्टात्मा से ग्रस्त होना सम्भवतया बीमारियों से बढ़कर डराने वाला होगा, क्योंकि कई बीमारियां स्वाभाविक रूप में समय बीतने पर खत्म हो जाती थीं। मसीह द्वारा की जाने वाली अनंतकालिक चंगाइयों को देखना और अनुभव करना अद्‌भुत रहा होगा। यीशु ने भूतों को निकालकर अपनी सामर्थ और करुणा को दिखाया।[40]

उसका कोढ़ी को चंगा करना (1:40-45)[41]

[40]एक कोढ़ी उसके पास आया, उससे बिनती की, और उसके सामने घुटने टेककर उससे कहा, ''यदि तू चाहे तो मुझे शुद्ध कर सकता है।'' [41]उसने उस पर तरस खाकर हाथ बढ़ाया, और उसे छूकर कहा, ''मैं चाहता हूं तू शुद्ध हो जा।'' [42]और तुरन्त उसका कोढ़ जाता रहा, और वह शुद्ध हो गया। [43]तब उसने उसे चिताकर तुरन्त विदा किया, [44]और उससे कहा, ''देख, किसी से कुछ मत कहना, परन्तु जाकर अपने आप को याजक को दिखा, और अपने शुद्ध होने के विषय में जो कुछ मूसा ने ठहराया है उसे भेंट चढ़ा कि उन पर गवाही हो।'' [45]परन्तु वह बाहर जाकर इस बात का बहुत प्रचार करने और यहां तक फैलाने लगा कि यीशु फिर खुल्लमखुल्ला नगर में न जा सका, परन्तु बाहर जंगली स्थानों में रहा; और चारों ओर से लोग उसके पास आते रहे।

मरकुस सुसमाचार के अन्य सहदर्शी विवरणों के बजाय कोढ़ी की चंगाई को अधिक विस्तार से बताता है। कोढ़ी की चंगाई महत्वपूर्ण है क्योंकि लोगों का मानना था कि कोढ़ को केवल ईश्वरीय सामर्थ ही चंगा कर सकती है। मत्ती में दिए गए आश्चर्यकर्मों के अपने विवरण में सबसे पहला इस चंगाई का उल्लेख है।

बाइबल में ''कोढ़'' (λέπρα, *lepra*) को वस्त्र तथा घरों के खराब होने सहित त्वचा के रोग या कई प्रकार के दूषण हो सकते हैं (लैव्य. 13:47; 14:34)। कोढ़ी के लिए अपने बाल बिखरे रखना; किसी स्वस्थ व्यक्ति के पास आने पर ''अशुद्ध! अशुद्ध!'' पुकारना आवश्यक था (स्त्री के लिए किसी गैर कोढ़ी पर उसके पास आने पर चिल्लाने के लिए देखें लैव्य. 13:45 और समाज से अलग रहना)। पुराना नियम कोढ़ की अवस्थाओं से निपटने तथा वस्त्रों पर दीवारों पर फफूँदी और फफूँद से निपटने के उपचार दिए गए थे। पुराने और नये दोनों नियमों में ''कोढ़'' के संक्षिप्त अर्थ पर आज भी विवाद है, परन्तु इसमें कोई संदेह नहीं कि इसमें एंसन रोग (विशेषकर नये नियम में शामिल है)। कोढ़ की तात्कालिक चंगाई आश्चर्यकर्म था जिसे कोई दोहरा नहीं सकता था। कोढ़ की सामान्य प्रगति में, रोग का इलाज हो सकता था। (मतलब यह कि यह वास्तविक कोढ़ नहीं था) या यह एक ऐसे चरण पर पहुंच सकता था जहां से पूरी तरह से सफेद धब्बे बन जाने पर इसे संक्रामक न माना जाए। इन मामलों में याजक कोढ़ी को शुद्ध घोषित कर सकता था।

आयत 40. एक कोढ़ी उसके पास आया, उससे बिनती की, और उसके सामने घुटने टेककर उससे कहा। व्यवस्था के अनुसार, अशुद्ध घोषित कोढ़ी किसी गैर कोढ़ी के पास जा भी नहीं सकता था। परन्तु यीशु के लिए (असली महायाजक के रूप में) किसी कोढ़ी के सम्पर्क में आना कोई खतरे की बात नहीं थी।

''यदि तू चाहे तो मुझे शुद्ध कर सकता है।'' उस आदमी को पक्का विश्वास था कि यीशु उसे चंगा कर सकता है परन्तु उसे यह पक्का नहीं था कि वह उसे करना चाहता है या नहीं। उसे इतने लोगों ने छोड़ दिया था कि यीशु के बारे में सुनने से पहले उसने सारा आत्म-सम्मान और उम्मीद छोड़ दी थी। उसे आश्वासन की आवश्यकता थी कि यीशु उसे चंगा करने को तैयार है, और हमारे प्रभु ने तुरन्त उसे यह आश्वासन दे दिया।

आयत 41. उसने उस पर तरस खाकर हाथ बढ़ाया, और उसे छूकर कहा। यीशु ने इस आदमी को छुआ, जिसकी सामान्य व्यक्ति के लिए मनाही थी। मसीहा की करुणा और तरस उसे इस आदमी को कोढ़ी बने नहीं रहने दे सकती थी। मसीह द्वारा किए गए आश्चर्यकर्म तरस के कारण किए गए थे। (शायद उन सभी का दूसरा उद्देश्य यही था [1:41], चाहे उसका मुख्य उद्देश्य लोगों को अपने में विश्वास दिलाना था [देखें यूहन्ना 10:25, 28; 14:11]।) यीशु के लिए यह आदमी अशुद्ध नहीं था; वह केवल एक आत्मा थी जिसे बड़ी आवश्यकता थी।

आयत 42. और तुरन्त उसका कोढ़ जाता रहा, और वह शुद्ध हो गया। प्रभु के स्पर्श ने उस कोढ़ी को तुरंत शुद्ध (चंगा) कर दिया। बड़े चिकित्सक को कोढ़ के इलाज करने के लिए लेवीय याजक की जटिल और गूढ़ ड्यूटियां पूरी करने की कोई आवश्यकता नहीं थी (देखें लैव्य. 14)।

आयतें 43-45. जाकर अपने आप को याजक को दिखा, और अपने शुद्ध होने के विषय में जो कुछ मूसा ने ठहराया है। यीशु ने ठीक हुए कोढ़ी को याजक के पास मूसा की व्यवस्था में बताई गई भेंट चढ़ाने के लिए भेजा। उस आदमी ने कोढ़ियों के लिए व्यवस्था में बताई गई भेंट चढ़ाकर व्यवस्था को पूरा किया हो सकता है, परन्तु यीशु ने करुणा करके जब इसकी आवश्यकता थी व्यवस्था की वास्तविक मंशा को पूरा किया (मत्ती 5:17, 18)। उस आदमी को याजक के पास भेजकर यीशु ने अपने आश्चर्यकर्म की वास्तविकता को साबित किया और दिखा दिया कि वह मूसा की व्यवस्था का आज्ञाकार था।

याजक की गवाही से आश्चर्यकर्म का वजन बढ़ सकता था जो कोढ़ी के कहने से नहीं बढ़ना था। ESV 1:44 में कहा गया है कि यीशु ने उस आदमी को याजक के पास ''उनके लिए प्रमाण के लिए'' भेजा। **कि उन पर गवाही हो** में वही विचार मिलता है। यीशु के सभी आश्चर्यकर्मों में ''लोगों के लिए गवाही'' थे कि वह पिता की ओर से आया था और पिता ने उसे भेजा था। उसकी बातें और काम भी पिता की ओर से थे।

उसने उसे चिताकर तुरन्त विदा किया, और उससे कहा, ''देख, किसी से कुछ मत कहना।'' पूर्व कोढ़ी को किसी को न बताने की आज्ञा दी गई, परन्तु उसने इस आज्ञा को नहीं माना और **इस बात का बहुत प्रचार करने और ... फैलाने लगा।** उसने पहले ही नगर में प्रवेश करके और ''अशुद्ध! अशुद्ध!'' पुकारे बिना यीशु के पास आकर अपनी विशेष परिस्थितियों में मूसा की व्यवस्था के लिए आदर की कमी को दिखाया था।

उसे इसे बताने से मना करके यीशु गलील के जेलोतेसों[42] के जोश को शांत करने की कोशिश कर रहा होगा, जहां एक बड़ा बलवा होने को था। ''यीशु ने इस आदमी को खामोश रहने को कहा था, पर इसने हर किसी को बता दिया। यीशु हमें हर किसी को बताने की आज्ञा देता है पर हम खामोश रहते हैं!''[43] यीशु का असल काम प्रचार करना था; उसने अपने जी उठने के बाद तक प्रेरितों को भी यह प्रचार करने की अनुमति नहीं दी कि वह ''परमेश्वर का पुत्र,'' ''मसीह'' या ''मनुष्य का पुत्र'' है (3:11, 12; 8:29, 30; 9:9)।

फिर खुल्लमखुल्ला नगर में न जा सका, परन्तु बाहर जंगली स्थानों में रहा; और चारों ओर से लोग उसके पास आते रहे। अब यीशु को यूहन्ना की तरह ही जंगल में जाकर सिखाना पड़ा; परन्तु वहां पर भी भीड़ ने उसे ढूंढ़ लिया। गलील में उसके काम से यह पता चला कि

साधारण लोग आनन्द से उसकी सुनते थे। यहूदिया के फरीसियों की तरह उनमें कोई पक्षपात या तंग सोच वाली बात नहीं थी।

स्पष्टतया मरकुस 1 अध्याय यीशु के बपतिस्मे से आरम्भ करके, उसकी सेवकाई के लगभग बारह महीनों को बताता है। उसकी सेवकाई मरकुस के थोड़े से विवरण से कहीं बढ़कर होगी (3:8-12)।

प्रासंगिकता

कहानी जिसने संसार को बदल दिया (1:1)

उद्धारकर्त्ता के पृथ्वी के जीवन के लगभग तीस वर्ष नासरत के छोटे से कस्बे में खामोशी से बीते। इन वर्षों को यीशु की पृथ्वी की सेवकाई के तैयारी के वर्ष नाम दिया जा सकता है। यीशु की सेवकाई इतनी सामर्थ से भरी होने वाली थी कि उस समय का संसार इसे तीन से अधिक वर्षों तक सहन नहीं कर पाया। वास्तव में, दूसरा वर्ष उस शत्रुता से जुड़ गया जो अंत में तीसरे वर्ष के अंत में उसके क्रूसारोहण में चरम पर पहुंची। वह सम्पूर्ण सच्चाई जिसे लेकर यीशु आया था इतनी तेजी से चमकनी थी कि पाप से भरे संसार ने इसे नकारकर उसे जो सच्चाई से भरा हुआ था क्रूस पर चढ़ा देना था।

एक आरम्भिक वाक्य में, सुसमाचार का मरकुस का विवरण हमें संसार को बदल देने वाली कहानी को ग्रहण करने के लिए तैयार करता है। कहानी किसी फिलॉस्फ़ी, सर्वोच्च नियमों के संग्रह की या सबसे बढ़िया सामाजिक नीतियों की बातों की नहीं है। यह उस सबसे बड़े व्यक्ति की है जो इस पृथ्वी पर कभी चला। लेखक ने हमें इस कहानी के लिए कैसे तैयार किया?

1. उसने यह बताते हुए कि उसकी कहानी विश्वास करने योग्य है आरम्भ किया। यह विवरण जो उसने हमें दिया है यीशु से सम्बन्धित इतिहास के तथ्यों को प्रस्तुत करता है। यह आरम्भ से लेकर अंत तक खराई को दिखाता है। इस वचन का आरम्भ तीन शब्दों में ''का आरम्भ'' के साथ होता है। यीशु की पृथ्वी की सेवकाई ऐतिहासिक, वास्तविक और सच्ची है। यीशु सचमुच में आया, सचमुच में वह हमारे बीच में रहा, और सचमुच में वह हमारे लिए अनन्त जीवन का अवसर लेकर आया।

यीशु की सेवकाई परमेश्वर की उस सनातन मंशा की ओर पीछे को जाती है जो संसार की नींव रखने से पहले बनाई गई थी। मरकुस यीशु की अनन्तता को छोड़ देता है जिसे यूहनना अपने विवरण में शामिल करता है और जन्म के विवरणों को जो मत्ती और लूका शामिल करते हैं; इसके बजाय वह यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की सेवकाई के आरम्भ से आरम्भ करता है। फिर वह यीशु के वास्तविक जीवन की ओर बढ़ जाता है ताकि उसके पाठक देख पाएं कि उसने अपनी शिक्षा, प्रचार, संसार के धार्मिक और सामाजिक भागों का सामना करते तीन वर्षों के दौरान क्या किया।

2. मरकुस यह संकेत देते हुए आगे बढ़ता है कि उसकी कहानी *समझ* में आने वाली है। उसका इरादा यीशु मसीह के सुसमाचार या यीशु मसीह के शुभ समाचार को देना था। उसका जीवन, सेवकाई, मृत्यु, तथा पुनरुत्थान ''सुसमाचार'' (*euangelion*) बनता है, संसार के लिए, जो परमेश्वर से दूर जा चुका था आशा और छुटकारे का संदेश।

सुसमाचार का यह विवरण पढ़ने योग्य, समझने के योग्य और हज़म होने वाला है। हमारे प्रेमी पिता ने यह रिकॉर्ड हमें इसलिए दिया है ताकि हम इसे समझ सकें, इसे मान सकें, इस पर चल सकें, और इसके द्वारा उद्धार पा सकें। शुभ समाचार ने सुसमाचार नहीं होना था यदि यह समझ में न आ सकता और इसे ग्रहण करने वाले इसे मान न सकते।

3. मरकुस ने यह भी संकेत दिया कि यह कहानी जिसको वह लिख रहा था *उद्धार की* कहानी है। उसने इसे ''परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के सुसमाचार'' के रूप में पहचान दी। उसने चार शब्दों का इस्तेमाल किया जिन्हें हमारी भाषा के सबसे बड़े चार शब्द माना जाना चाहिए: ''यीशु,'' ''मसीह,'' ''पुत्र,'' और ''परमेश्वर।'' ''यीशु'' का अर्थ ''उद्धारकर्त्ता''; ''मसीह'' का अर्थ ''मसीहा'' की घोषणा करता है; ''पुत्र'' के लिए अंग्रेजी का बड़ा ''S'' उसके परमेश्वर होने को दर्शाता है; और ''परमेश्वर'' नाम यीशु के परमेश्वरत्व का दूसरा सदस्य होने की घोषणा करता है।

इन चारों शब्दों में हम छुटकारे की कहानी को देखते हैं। कहानी के अंदर एक उद्धारकर्त्ता है, और यह मसीहा को परमेश्वर की ओर से भेजा हुआ दिखाती है। वास्तव में इसमें परमेश्वर की सनातन मंशा है, क्योंकि यह हमें दिखाती है कि परमेश्वर का सनातन पुत्र हमारे जैसा बनने के लिए आया। यह कौन है जिसकी कहानी बताई जा रही है? वह यीशु है जो कि मनुष्य है; वह मसीह है जो कि मसीहा है; वह परमेश्वर का पुत्र, अर्थात देहधारी हुआ परमेश्वर है। वह उतना ही मनुष्य है जितना यदि वह बिल्कुल परमेश्वर न होता, और वह उतना ही परमेश्वर है जितना यदि वह बिल्कुल मनुष्य न होता।

निष्कर्ष: मरकुस द्वारा लिखी यह कहानी केवल सुसमाचार नहीं है। नहीं यह सुसमाचार ही है, जो कि हमारे उद्धार का एकमात्र माध्यम है। यह शुभसमाचार सबसे बड़ा समाचार है। इससे बड़ा और क्या संदेश हो सकता था? इसमें वह सब है जो अच्छा, सार्थक, उद्देश्यपूर्ण, सच्चा और पवित्र है। इसके अलावा यह सबसे निर्णायक समाचार है जो किसी को मिल सकता है, वह समाचार जिसके बिना रहा नहीं जा सकता। इसलिए यह संसार का अब तक का सबसे तेज से भरा सबसे अद्‌भुत समाचार है। इस संदेश के आने के साथ, संसार सदा के लिए बदल गया।

प्रचार जो परमेश्वर चाहता है (1:2-8)

यूहन्ना के प्रचार के विवरण से हमें उस प्रचार की जो हम कर सकते हैं सबसे बढ़िया और अच्छी किस्म का नमूना मिलता है। मरकुस के इस वचन में उसके प्रचार की विशेषताएं बड़ी राहत का काम करती हैं।

1. असली प्रचार के पीछे ईश्वरीय अधिकार है। जो प्रचार हम करते हैं वह उस स्वर्गीय आदेश से निकला होना चाहिए, जो हमें दिया गया है।

मरकुस ने यीशु की इस कहानी का आरम्भ यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की सेवकाई की संक्षिप्त रूपरेखा देकर किया। उसने कहा कि यह यूहन्ना पुराने नियम के दो वचनों, यशायाह 40:3 और मलाकी 3:1 को पूरा करने के लिए आया। केवल इन्हीं उद्धरणों का इस्तेमाल मरकुस ने अपनी पुस्तक में किया। 1:2 में भविष्यद्वाणी का पहला हवाला याहवेह (''मैं'' बोलने वाला) के यीशु (''तेरे'') के लिए मार्ग तैयार करने के लिए यूहन्ना को भेजने (''मेरा दूत'') की बात

करता है। 1:3 में दूसरा हवाला ''जंगल'' (चुना गया स्थान), ''पुकारने'' (सरगर्मी), दिखाई गई (शब्द ''इस्तेमाल किया गया ढंग'') ''मार्ग'' (चाहा गया विषय) की बात करता है। ''प्रभु के मार्ग'' (1:3) के सम्बन्ध में यह वचन कहता है कि यूहन्ना उस मार्ग को तैयार करने के लिए आ रहा था। उसने ''प्रचार करने'' की तैयारी दी। अभिप्राय यह है कि लोगों को इस मार्ग की तैयारी करने में यूहन्ना का साथ देना था। इनसे ''लोगों'' को वह तैयारी मिल गई जिनकी आवश्यकता थी।

जोसेफ़स ने वेस्पेसियन के गलील में जाने का वर्णन किया है जिसमें उससे पहले जाने वाले सिपाहियों का इस्तेमाल, ''रास्ता ठीक करने और सीधा करने, और यदि कहीं से ऊबड़-खाबड़ और कड़ा हो तो उसे समतल करने, और उनके आगे बढ़ने में रुकावट बनने वाली लकड़ियों को काटना, जिससे सेना को परेशानी न हो या आगे बढ़ने से थक न जाएं।''[44] इस प्रकार से वेस्पेसियन ने रास्ता साफ कर दिया ताकि बाकी की सेना जल्दी से और अधिक आसानी से आगे बढ़ सके।

यह ऐतिहासिक उदाहरण उस तैयारी को दर्शाता है जो यूहन्ना, और उसे सुनने वाले लोगों ने, आने वाले मसीहा के लिए लिखा। यूहन्ना को मसीहा के लिए मार्ग सीधा और समतल करने के लिए भेजा गया था। सुसमाचार का आज का सेवक पवित्र आत्मा के लिए लोगों को अपने वचन के द्वारा परमेश्वर की इच्छा बताने के लिए मार्ग तैयार करता है।

2. प्रामाणिक प्रचार समय का पाबंद नहीं है। हमें समय और असमय प्रचार करना आवश्यक है, जैसा कि पौलुस ने कहा; परन्तु ऐसे विशेष समय भी आएंगे जो हमें और भी लगन से प्रयास करने को कहते हैं।

यूहन्ना न केवल सही मार्ग में, सही संदेश लेकर, और सही सोच के साथ आया था; बल्कि वह सही समय पर भी आया था। उससे पहले काफी तैयारी हो चुकी थी। इस्राएली बंधुआइयों में जा चुके थे और उन्हें मूर्तिपूजा के बारे में कठोर सबक मिल चुके थे। वे दोनों नियमों के काल के बीच में संघर्षों में बच गए थे। यूनानी भाषा संसार भर में फैल चुकी थी और इसने अलग-अलग लोगों को एक कर दिया था। यहूदी लोग बिखर चुके थे और उन्होंने संसार भर में याहवेह का नाम फैला दिया था। रोमी साम्राज्य में देश की अदालतों तक कुछ नियम कानून पहुंचा दिया था। पुराने नियम के पवित्र शास्त्र का अनुवाद यूनानी भाषा में हो चुका था, पुरानी फिलॉस्फ़ियों तथा रहस्यवाद की शिक्षाएं नाकाम हो चुकी थीं, और अन्यजाति जगत पाप और बुराई में गहरा डूब चुका था।

इतिहास के हर मोड़ पर परमेश्वर चाहता है कि उसकी आवाज को सुना जाए। यूहन्ना ने एक ऐसे ही मोड़ पर प्रचार किया, और हमें भी ऐसे समय आने पर तैयार रहना आवश्यक है।

3. वास्तविक प्रचार में कठोर *अनुशासन* है। हमारा प्रचार अनुशासित जीवनों की मिट्टी से निकलना चाहिए। मरकुस में यूहन्ना के दैनिक जीवन के निजी विवरण देती केवल एक आयत (1:6) है। यूहन्ना का लिबास सादा और खाना सादा था जो जोर जोर से यह दावा करता है कि उसका जीवन सादा था। उसका ध्यान उस सब पर था जो उसके पास था और उस आज्ञा पर था जो उसे मिली थी। पौलुस की तरह वह विवाह करके संसार में एक परिवार लाने से दूर रहा। और शायद उसके कुंवारे रहने के कारण उसे उन सांसारिक मूल्यों को तुच्छ जानकर मसीहा में

लाने के उसके मिशन के लिए कठोर अनुशासन में रह पाया।

हमारे लिए अनुशासन का महत्वपूर्ण योगदान होना आवश्यक है। संसार हमारे फोकस पर बहुत अधिक दावा करता है। यूहन्ना और पौलुस के जीवन हमें जो प्रचार करते हैं यह पूछने के लिए फुर्ती करता है, ''क्या मैं अपने प्रचार के लिए कह सकता हूं, 'मैं यह एक बात करता हूं'?'' (देखें फिलि. 3:13)।

4. वफादारी से किए गए प्रचार की विशेष बात निष्कलंक रहकर खराई से बोलना है। यूहन्ना जैसे खरे प्रचारकों के मन ऐसे हैं जो आज्ञा मानने को तैयार हैं। प्रचारक दोष रहित नहीं हो सकते, परन्तु परमेश्वर के सामने वे निर्दोष हो सकते हैं।

यूहन्ना ने यहूदियों को मन फिराने और पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेने को कहा (1:4)। इस बपतिस्मे से उस बपतिस्मे के लिए जो आने वाला था मंच तैयार होना था जो कि ग्रेट कमीशन के आज्ञा मानने की शर्तों में से एक था। अपने ग्रेट कमीशन में यीशु ने विशेष निर्देश दिए कि हमें क्या कहना है (सुसमाचार का प्रचार) क्या करना है (चेले बनाना और बपतिस्मा देना) और क्या करते रहना है (चेलों को सिखाना)। (देखें मत्ती 28:18-20.)

निष्कर्ष: यहून्ना के प्रचार से जीवन बदलने वाला परिणाम मिला। लोग मन फिराकर, अपने पापों का अंगीकार करके, पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा ले रहे थे। 1:5 में ''मानकर'' के लिए यूनानी शब्द (ἐξομολογέω, *exomologeō*) दो पक्षों यानी परमेश्वर और पापी के इकट्ठा होने को दर्शाता है। बिना अंगीकार के परमेश्वर तक नहीं पहुंचा जा सकता।

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की सेवकाई मांगों से भरी, तैयारी वाली, और अपने फोकस पर केन्द्रित थी। यूहन्ना को गिराने और उखाड़ने का काम सौंपा गया था। उसने ढाह दिया ताकि यीशु बना सके; उसने कचरा उठा दिया ताकि यीशु सच्चाई को लगा सके। उसके काम से वह मार्ग सीधा करने के लिए ज़मीन को समतल किया गया जिस पर से यीशु लोगों तक पहुंच सकता था। यूहन्ना ने जोत दिया ताकि यीशु बुआई कर सके। यूहन्ना ने उस सब को जो उसके पास था, लेकर यीशु को दे दिया। हर प्रचारक के लिए यही करना आवश्यक है।

असली आज्ञापालन (1:9-11)

मरकुस ने लिखा कि यीशु के बपतिस्मे की बड़ी, बदलाव लाने वाली घटना ''उन दिनों में'' घटी (1:9)। यीशु बपतिस्मा लेने के लिए यूहन्ना के पास तब गया जब वह तीस वर्ष का था (लूका 3:23), यह वह उम्र है जब पुराने नियम का याजक पूर्णकालिक सेवा में आता था (गिनती 4:3) और जब यूहन्ना ने मसीहा के आने की घोषणा करने का अपना शानदार काम आरभ किया था। यीशु संसार में तीस वर्षों से था, परंतु अब वह अपनी सेवकाई आरम्भ करने को तैयार था। खामोशी के वर्ष बीच चुके थे, और उसकी सेवकाई की गतिविधियां आरम्भ हो रही थीं।

बपतिस्मा लेने के लिए यीशु नासरत से गया, जो कि शायद सत्तर मील का सफ़र था (1:9)। उसका यूहन्ना का बपतिस्मा उसकी सेवकाई के आधिकारिक आरम्भ का आधार था। जब मूसा ने मिस्र की ओर जाने का अपना सफर आरम्भ किया, तो उसके लिए उस वाचा की शर्तों को जिसमें वह इस्राएल की अगुआई करने वाला था मानना आवश्यक था (निर्गमन 4:24-26)। ऐसा न

कर पाना विनाश का कारण होना था। यीशु ने दूसरों को पिता की आज्ञा मानने की अगुआई करने के अपने कार्य का आरम्भ करने से पहले बपतिस्मे के मामले में उसकी इच्छा को मानना था।

बपतिस्मे के इस दृश्य में कहानी में तीन पूर्वसर्ग चलते हैं: ''से,'' ''के द्वारा,'' और ''में से।'' यीशु नासरत में कार्यशाला की ''खामोशी से'' गया। वह यूहन्ना ''के द्वारा'' बपतिस्मा लेने के लिए पानी में उतरा। बपतिस्मा लेने के बाद, वह पानी ''में से'' ऊपर आया और अपनी सेवकाई में आ गया इन पूर्वसर्गों का इस्तेमाल करते हुए अलगाव, भागीदारी और आरम्भ के चरणों को दिखाया गया है।

यरदन नदी के किनारों से हम आज्ञा मानने की सही तस्वीर को देखते हैं। हम पूछते हैं, ''आज्ञापालन कब असली आज्ञापालन बनता है?'' क्या कोई किसी बड़े अधिकारी की आज्ञा मान सकता है क्योंकि उसे किसी प्रकार से वह मनवाई जाती है। वह किसी नियम को मान सकता है क्योंकि यदि वह ऐसी आज्ञा नहीं मानता तो उसे बड़े परेशानी हो सकती है। असली आज्ञा मानना क्या है? इस कहानी को जो स्वर्ग पर पृथ्वी का ध्यान खींच रही थी बताते हुए हमारे प्रश्न का उत्तर मिल जाएगा।

1. यीशु के आज्ञापालन में *विश्वास* की आवश्यक बात थी। ''बिना विश्वास उसे प्रसन्न करना अनहोना है'' (इब्रा. 11:6)। यीशु इस पृथ्वी पर अपने पिता की इच्छा को पूरा करने के लिए आया। परमेश्वर ने विश्वास में उसे आने के लिए विवश कर दिया। पक्के विश्वास ने उसे अपने पिता में विश्वास करने यानी अपने पिता के प्रेम में, अपने पिता की योजना में और अपने साथ अपने पिता के सम्बन्ध में अपना विश्वास डालने को बाध्य किया। वह यूहन्ना के पास बपतिस्मा लेने के लिए इसलिए नहीं गया क्योंकि उसे मन फिराव, क्षमा या इस समझ की आवश्यकता थी कि वह कौन है। वह सारी धार्मिकता को पूरा करने के लिए गया। उसने परमेश्वर की मंशा में भाग लेने के लिए विश्वास में बपतिस्मे के लिए अपने आपको दे दिया।

हमें विश्वास में बपतिस्मे के लिए समर्पण करना आवश्यक है। बाद में यीशु ने कहा, ''जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा'' (मरकुस 16:16)। बिना विश्वास के, बपतिस्मा खोखली रस्म है; सच्चे विश्वास के साथ बपतिस्मा परमेश्वर का सच्चा आज्ञापालन है।

2. यीशु के आज्ञापालन में *विनम्रता* की अनोखी बात थी। यूहन्ना के पास जाने पर, उसने उससे कहा, ''अब ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है'' (मत्ती 3:15)। परमेश्वर की धार्मिकता में चलना यीशु की प्राथमिकता थी। जिस कारण उसने विनम्रतापूर्वक परमेश्वर की इच्छा को मानकर अपने आपको इसके आगे सौंप दिया।

जो पाप रहित था, उसे उसके द्वारा बपतिस्मा दिया गया जो पापी था। हरकारे यूहन्ना ने यीशु मसीह को डुबकी दी। एक मनुष्य परमेश्वर के पुत्र को बपतिस्मा दे रहा है! यीशु मनुष्य बना था, इस बार आवश्यक था कि जो कुछ परमेश्वर यहूदी लोगों से करवाना चाहता था उसे वह भी करे। वह मनुष्य बना, और एक यहूदी व्यक्ति के रूप में अपने बपतिस्मे और अपनी मृत्यु में गया।

> जिस ने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। बरन अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने

आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली (फिलि. 2:6-8)।

हम विनम्रता के साथ बपतिस्मे में प्रवेश करते हैं। पापी होने के नाते जिन्हें विश्वास के द्वारा अनुग्रह से बचाया जा रहा है हम इस आज्ञा के आगे झुकते हैं। हम यह गाते हुए पानी के अंदर जाते हैं, ''खाली हाथ मैं आता, कुछ नहीं लाता: केवल तेरे क्रूस को पकड़ता। ...''[45]

3. यीशु के बपतिस्मे में *समर्पण* की बात है। बपतिस्मे के लिए आने वाला व्यक्ति अपने आपको किसी दूसरे के हाथों में दे देता है और उन हाथों से उसे डुबकी दी जाती है। हरकारा समय के पूरा होने के लिए परमेश्वर की योजना का भाग था। यीशु ने अपने आपको यूहन्ना के हाथों में दे दिया। वह अपने आपको अपनी सेवकाई के लिए परमेश्वर की भूमिका के लिए अपने आपको आंशिक रूप में नहीं सौंप रहा था बल्कि उसने पूर्ण रूप में और पूरी तरह से सौंप दिया। वास्तव में यह सबसे बड़ी तस्वीरों में से एक है कि किस प्रकार से कोई परमेश्वर की योजनाओं के आगे समर्पण कर सकता है।

जब यीशु पानी में गया, तो वह अपने आपको झुकाकर समर्पण कर रहा था; जब वह पानी में से ऊपर आया तो वह पिता से प्रार्थना कर रहा था (लूका 3:21)। वह भागीदारी को प्रार्थनापूर्वक महिमा में आगे बढ़ा।

''परमेश्वर की इच्छा के सामने समर्पण करना'' से बढ़कर बपतिस्मे में परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिए इससे बेहतर शब्द और क्या हो सकते हैं? बपतिस्मे ने अद्‌भुत संकेत है। इसे मानने और इसके आगे झुकने का हमारे पास केवल एक ही कारण है कि हम विनम्रता और विश्वास से परमेश्वर की इच्छा के आगे समर्पण कर रहे हैं। परमेश्वर ने हम से ऐसा करने को कहा है, और हम इसे कर रहे हैं।

निष्कर्ष: यीशु के बपतिस्मे पर स्वर्ग ने कैसे प्रतिक्रिया दी? मत्ती 3:16, मरकुस 1:10, और लूका 3:21 के अनुसार, आकाश खुल गया। यानी आकाश को खोल दिया गया। यही यूनानी शब्द जिसका इस्तेमाल यहां पर हुआ है यीशु की मृत्यु के समय मन्दिर का पर्दा फटने के सम्बन्ध में इस्तेमाल किया गया है (लूका 23:45)। जब यीशु का बपतिस्मा हुआ, तो आकाश फट गया।

पवित्र आत्मा कबूतर के समान उस पर उतरा , जो यूहन्ना के लिए पक्की निशानी थी कि यीशु ही मसीहा है (यूहन्ना 1:32-34)। फिर पिता की आवाज उससे यह कहते हुए सुनी गई, ''यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अत्यंत प्रसन्न हूं'' (मरकुस 1:11; लूका 3:22; देखें मत्ती 3:17)। यीशु के पृथ्वी के जीवन के दौरान की गई तीन ईश्वरीय स्वीकृतियों में से एक यह है। यीशु के पुत्र होने का इससे स्पष्ट प्रमाण नहीं दिया जा सकता था।

क्या हमें बपतिस्मे में वैसे ही नहीं आना चाहिए जैसे यीशु आया था? पिता के मन का रास्ता साफ है यानी इस रास्ते को विश्वास, निम्रता और पिता की इच्छा के आगे समर्पण से निशान लगाया गया है।

शैतान का मार्ग (1:12, 13)

सुसमाचार के मरकुस के विवरण की विशेष बात साहित्यिक रूप में इसका संक्षिप्त होना

है, जैसा कि परीक्षाओं के विवरण में पता चलता है। मरकुस ने परीक्षाओं के बारे में केवल दो आयतें हैं (केवल सार), जबकि मत्ती में ग्यारह आयतें हैं (4:1-11) और लूका में तेरह आयतें हैं (4:1-13)। इसके अलावा मत्ती उस दिन को उपवास के लगभग छह हफ्तों के चरम के रूप में दिखाते और जंगल में मनन करते दिखाते हुए, परीक्षाओं के विवरणों को चालीसवें दिन बताता हुआ लगता है। उस वचन के अनुसार, चालीसवां दिन शैतान के पूर्ण और सबसे केन्द्रित प्रहारों का समय था, जो चालीस दिन के उपवास को वास्तविक परीक्षाओ की रूपरेखा बना देता है। परन्तु मरकुस और लूका के विवरण परीक्षाओं को पूरे चालीस दिन के समय को लेते हुए दिखाते हैं। मत्ती और लूका यीशु के निष्कलंक मन पर तीन ज़बर्दस्त हमलों का वर्णन करते हुए इन परीक्षाओं को संक्षिप्त करते हैं।

यीशु ने इन परीक्षाओं का सामना करते हुए देखकर हमें शैतान के काम पर एक नया नज़रिया मिल जाता है। यह प्रश्न कि ''उस दुष्ट की परीक्षाएं कैसी हैं?'' का उत्तर हमारे उन अवलोकनों में मिलता है जो यीशु के साथ हुआ और कैसे उसने इन पाप से भरे प्रलोभनों की गोलाबारी का जवाब दिया।

1. यह साफ है कि शैतान दृढ़संकल्पी है। वह हठी, दुष्ट स्वर्गदूत है जो उसके सामने की गई विनतियों के उत्तर के लिए ''न'' नहीं करेगा। वह अपने हमले निर्ममता से करता है।

यीशु के पृथ्वी पर अपने मानवीय जीवन में आने और हमारे लिए सिद्ध उद्धारकर्त्ता बनने की अपनी सेवकाई में आने पर, उसके लिए इसके सबसे खराब रूपों में परीक्षा का सामना करना आवश्यक था। बपतिस्मा लेने के बाद उसे शैतान के साथ युद्ध करने के बाद ले जाया जाएगा। पानी में से वह जंगल में चला गया। मरकुस में अपने पसंद शब्दों में से एक (मरकुस में चालीस बार इस्तेमाल हुआ शब्द)। सिद्ध उद्धारकर्त्ता और ढीठ शैतान के बीच हुए युद्ध के समय को दिखाने के लिए है। पवित्र आत्मा के उस पर कबूतर की समान उतरने के बाद, ''सीधे'' (KJV)[46] उसे जंगल में परीक्षा करने वाले का सामना करने के लिए ले जाया गया। मत्ती 4:1 यीशु के ''आत्मा के यीशु को जंगल में ले'' जाने की बात करता है; लूका 4:1 कहता है कि यीशु ''आत्मा के सिखाने से जंगल में फिरता रहा।''

नये नियम के लेखों में बताया गया है कि यीशु के लिए परखा जाना आवश्यक था। यह अनिवार्यता उसके पूरी तरह से मानवीय व्यवस्था में आने से उत्पन्न हुई। वह पूण रूप में मनुष्य बना और पूरी तरह से वह मनुष्यजाति का भाग था। परमेश्वर को हमारे पापों के लिए एक सिद्ध भेंट की आवश्यकता थी। यीशु ने परखने वाले का सामना किया ताकि वह एक सिद्ध उद्धारकर्त्ता बन सके, जिसने उस बदतरीन का, जो शैतान उस पर फेंक सकता था, सामना करते हुए सिद्धता प्राप्त की। ''उसने दु:ख उठा उठाकर आज्ञा माननी सीखी'' (इब्रा. 5:8, 9); ''क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं, जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दु:खी न हो सके; वरन वह सब बातों में हमारे समान परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला'' (इब्रा. 4:15)। यदि मसीह परीक्षा का सामना करके विजयी न हुआ होता तो हम अपने आपको उसके साथ नहीं मिला पाते।

हमें परीक्षा को हमारे पास आने की कभी चुनौती नहीं देनी चाहिए बल्कि हमें बुरी लालसाओं से अपने आपको दूर ही रखना चाहिए। परन्तु जब हम परीक्षा में फंस जाते हैं, तो याद रखें कि मसीह पिता के पास हमारा ''सहायक'' है (1 यूहन्ना 2:1)।

2. परखने वाला जितना विनाश कर सके उतना करने की कोशिश करता है। पतरस मसीही लोगों को शैतान के बारे में चौकस कर रहा था जब उसने कहा, ''तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह के समान इस खोज में रहता है, कि किस को फाड़ खाए।'' (1 पतरस 5:8)। सिंह के समान शैतान अपने शिकार का पीछा करता है ताकि वह पकड़कर इसे खा जाए।

शैतान हम पर हमला करेगा जब हम सबसे कमज़ोर होते हैं। उसने यीशु को ढूंढ़ लिया जब उसने चालीस दिन का अपना उपवास खत्म किया था। वह हमें विनाश में ले जाने के लिए सबसे सही अवसर की तलाश में हमारा पीछा करता रहता, हमारा विरोध करता और हम पर नज़र रखता है।

''परीक्षा'' के लिए इस्तेमाल हुआ शब्द πειράζω (*peirazō*) है, जिसका अर्थ ''परीक्षा'' या ''परखना'' है। यह δοκίμιον (*dokimion*) से अलग शब्द है जिसका अर्थ ''परीक्षा'' या ''सिद्ध करना'' है। हम कह सकते हैं कि पहले शब्द का अर्थ ''प्रलोभन देना'' और दूसरे शब्द का अर्थ ''सिद्ध करना'' है। पहले वाला अर्थ शैतान का काम है और दूसरा परमेश्वर का काम है। पहले वाले का लक्ष्य गिरावट है, जबकि दूसरे का चाहे जाने वाले परिणाम के रूप में विजय है। यह पक्की बात है कि हर परीक्षा में परखा जाना होता है; परन्तु हर परखा जाना बुराई करने की परीक्षा के कारण नहीं होता। ''शैतान'' का अर्थ ''विरोधी'' और ''दुष्ट'' का अर्थ ''निंदा करने वाला या आरोप लगाने वाला'' है। प्रकाशितवाक्य में उस दुष्ट को *विनाश* का नाम दिया गया है। इब्रानी शब्द *अबद्दोन* है और उसका यूनानी नाम अपुल्लियोन है (प्रका. 9:11)।

हमारे लिए परमेश्वर में बढ़ने के लिए उसके परखने को मान लेना होना चाहिए। इसके विपरीत शैतान और उसकी चालों का सामना करना भी हमारा लक्ष्य होना चाहिए ताकि हम परमेश्वर के दिल के करीब रह सकें।

3. यह भी सच है कि परखने वाला *कपटी* है। शैतान मसीह से जो सर्वशक्तिमान, सिद्ध है, क्या कह सकता था? वह उससे पाप कैसे करवा सकता था? वह उसके पृथ्वी की अपनी सेवकाई का आरम्भ करने से पहले ही उसे नष्ट कैसे कर सकता था। उसका सबसे बढ़िया तरीका छल का है।

शैतान निर्जन स्थान तक, जहां मनुष्यजाति की खोजी आंखों से दूर हो, यीशु के पीछे चलता रहा। मरकुस कहता है कि जंगल में वनपशुओं के साथ था (1:13)। शायद वह किसी निर्जन स्थान में, किसी बंजर पहाड़ी पर था।

शैतान उस तक कैसे पहुंचा? उसने उससे क्या कहा? उसने उसे अपनी सामर्थ का इस्तेमाल करने को कहकर परखा। ''इन पत्थरों को रोटियों में बदल दे। तू तो कुछ भी कर सकता है, या नहीं?'' उसने धमकाया (देखें मत्ती 4:3; लूका 4:3)। उसने उसके ईश्वरीय होने के सम्बन्ध में उसकी परीक्षा ली। ''क्या तू सचमुच में परमेश्वर का पुत्र है?'' उसने धीरे से कहा (देखें मत्ती 4:3, 6; लूका 4:3, 9)। उसने उस मार्ग के सम्बन्ध में जो जिस पर उसने चलना था उसकी परीक्षा ली। ''तुम मेरी मदद क्यों नहीं ले लेते? मैं अपनी सारी शक्ति तुझे लौटा दूंगा, यदि तूं केवल मेरी उपासना करे,'' उसने उकसाया (देखें मत्ती 4:9; लूका 4:6, 7)।

जब हम शैतान के काम को देखते हैं, तो हम यीशु के हर शब्द में उसके बारे में यह कहते

हुए चलते हैं:

> तुम अपने पिता शैतान से हो और अपने पिता की लालसाओं को पूरा करना चाहते हो। वह तो आरम्भ से हत्यारा है और सत्य पर स्थिर न रहा, क्योंकि सत्य उसमें है ही नहीं। जब वह झूठ बोलता, तो अपने स्वभाव ही से बोलता है; क्योंकि वह झूठा है वरन् झूठ का पिता है (यूहन्ना 8:44)।

निष्कर्ष: परीक्षा का सामना करना हमारी सबसे बड़ी त्रासदियों या हमारी सबसे बड़ी विजयों में से एक बन सकता है। यीशु के मामले में, परमेश्वर की इच्छा के अनुसार, परीक्षा का सामना करते हुए, वह हमारे सिद्ध उद्धारकर्त्ता के रूप में उभरा। वह परमेश्वर के वचन के साथ बना रहा, और उसने अपने धर्मी मन को दिखाया। उसने परमेश्वर के वचन को अपनी ढाल बनने दिया; और इसके साथ उसने अच्छी तरह से शैतान का सामना किया। पाप के साथ कभी किसी ने कोई जीत नहीं पाई। पाप न तो छुड़ाया जा सकता है और इस पर दावा किया जा सकता है। इसे केवल परमेश्वर के अनुग्रह से क्षमा किया जा सकता है।

जब हम परखने वाले का सामना करते हैं तो परमेश्वर हमें देख रहा होता है। मरकुस ने कहा, कि यीशु के संघर्ष के समय में स्वर्गदूत उसकी सेवा करते थे। इसमें कोई संदेह नहीं, कि उन्होंने उसकी देह को बचाए रखा। ताकि वह परीक्षा की सबसे सख्त किस्म पर विजय पा सके। उन्होंने इस स्मीकरण में से मानवीय गुण को नहीं निकाला, परन्तु उन्होंने उसे परमेश्वर की ईश्वरीय प्रबन्ध वाली सहायता प्रदान की।

यीशु शैतान के कामों को नष्ट करने के लिए आया। उसने अपनी सेवकाई के आरम्भ में उसका सामना किया और क्रूस पर अंत में से पराजित करने तक उसके साथ संघर्ष करता रहा (देखें 1 यूहन्ना 3:8)।

वास्तव में महत्वपूर्ण क्या है? (1:14, 15)

मरकुस ने यीशु की सेवकाई को जो यूहन्ना की सेवकाई से मेल खाती है छोड़कर जल्दी से यीशु की अकेली सेवकाई के आरम्भ की ओर बढ़ गया जो यूहन्ना की गिरफ्तारी के बाद के आगे चलती रही। जब मकेरस में यूहन्ना को कैद कर लिया गया, तो यीशु यहूदिया से निकलकर गलील में चला गया। उसने अपने मसीहाई प्रचार का आरम्भ करने के लिए गलील के इस इलाके को केन्द्र बनाना था। इस इलाके के लोगों ने उसके संदेश के लिए अपने हृदय खोल देने थे और अंत में उसने अपनी पूरी सेवकाई का तीन चौथाई भाग इसी इलाके में बिताना था।

परमेश्वर के पुत्र की यह सेवकाई संसार के लिए ज्ञात या आने वाली किसी भी सेवकाई से बड़ी है। यह सेवकाई कैसी थी? इसकी मुख्य विशेषताएं क्या थी? निश्चय ही जो यीशु ने किया, जिस पर उसने ज़ोर दिया, जो उसने प्रचार किया, ओर जो कुछ उसने अपने समय के साथ करना चुना वह केवल इस बात का संकेत नहीं देता कि उसके लिए महत्पूर्ण क्या था बल्कि यह भी संकेत देता है कि हमारे लिए महत्वपूर्ण क्या है।

1. यीशु ने अपनी सेवकाई का आरम्भ यह घोषणा करते हुए किया कि *महत्वपूर्ण समय* आ गया था। उसके विशेष शब्द ये हैं: ''समय पूरा हुआ है'' (1:15)। गलातियों 4:4 में इस

समय के लिए, कम से कम आंशिक रूप में पौलुस के शब्दों को भी लागू किया जा सकता है: ''परन्तु जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के अधीन उत्पन्न हुआ।'' पुरखाओं को और मूसा को दोनों युगों में इस विशेष, यानी विशेष पल की ओर ध्यान दिलाया गया था जब यीशु की सेवकाई का आरम्भ होना था।

हमारे लिए महत्वपूर्ण क्या होना चाहिए। हमारी प्राथमिकताएं क्या होनी चाहिए? हम समय के सबसे बड़े काल, मसीही युग में रहते हैं। इस युग में परमेश्वर की योजना की भरपूरी है और यह मानवीय इतिहास का अंतिम युग होगा। हम नहीं जानते कि यह युग कब खत्म होगा, परन्तु हम इतना जानते हैं कि हम इसके अंत की ओर बढ़ रहे हैं।

यीशु के पास महत्वपूर्ण समय था यानी उसकी सेवकाई के वर्ष थे; हमारे पास भी महत्वपूर्ण समय यानी मसीही युग है। हम नये नियम की मसीहियत के युग में रहते हैं, जिसमें हमारे पास इसकी सारी आशिषों और परमेश्वर की भरपूरी में रहने के अवसर हैं। हमें ऐसे रहने की आवश्यकता नहीं है जैसे हम केवल अपनी खुशी ढूंढ़ रहे हों। नहीं, सचमुच में। यह वह युग है जिसकी राह समय आरम्भ से देख रहा था, और समय तेजी से अनन्तकाल में इसके महिमामय ढंग से चले जाने की आरे बढ़ रहा है।

2. अपने प्रचार में, यीशु यह दावा करता था कि महत्वपूर्ण राज्य आ रहा है। वह कहता था, ''परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है'' (1:15)। यह आया नहीं था, परन्तु निकट था। बड़ी बड़ी घटनाएं घट रही थीं और घटने वाली थीं; इनसे सचमुच में सारा संसार हिल जाना था और उसे एक नया आकार मिलना था। इसका एक बड़ा भाग परमेश्वर के बड़े, अनन्त राज्य का आना था।

यीशु ने राज्य के आने के लिए लोगों को तैयार करने के लिए अपने आपको दिया। उसने उन्हें बताया कि यह निकट आ रहा है। दानिय्येल ने कहा कि स्वर्ग के परमेश्वर ने एक राज्य खड़ा करना था जो कभी नष्ट नहीं होना था (दानिय्येल 2:44)। उसने भविष्यद्वाणी की कि रोमी राजा के दिनों में परमेश्वर का राज्य स्थापित होना था।

परमेश्वर का राज्य यानी मसीह की कलीसिया, जो कि मसीह की देह है, अर्थात जिसे यीशु अपनी मृत्यु के द्वारा बनाया या अस्तित्व में लाया, मसीही युग की विशेष बात है। लोगों में परमेश्वर के राज्य से बढ़कर और कोई चीज़ नहीं हो सकती! हम इसका भाग होने, इसका प्रचार करने और अन्य देशों में इसे रोपने के लिए धन्यवादित हैं। इससे बड़ी बुलाहट और किसकी है?

3. यीशु ने उन्हें जो उसके प्रचार को सुनते थे याद दिलाया कि उनके लिए उस सुसमाचार को जिसका वह प्रचार कर रहा था मानना *महत्वपूर्ण जवाब* देना आवश्यक था। उसने उनसे कहा, ''मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो'' (1:15)। पृथ्वी पर सबसे बड़ी चीज़ परमेश्वर का राज्य है। आइए उन सभी विषयों पर विचार करें जिनका प्रचार यीशु कर सकता होगा। जो विषय उसने चुना वह क्या था? अपने सेवकाई के आरम्भ से लेकर अंत तक वह परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता रहा।

यीशु ने आज्ञा मानने की अवधारणा (निहित शब्द) को मन फिराव और विश्वास को दो भागों में बांटा कोई तब तक सचमुच में मन नहीं फिरा सकता जब तक वह सचमुच में विश्वास नहीं करता, और तब तक सचमुच में विश्वास नहीं कर सकता जब तक सचमुच में अपने पाप

से मन नहीं फिराता। सुसमाचार मन फिराने और विश्वास करने दोनों के लिए कहता है। एक के बिना दूसरा उत्तर अपर्याप्त है।

निष्कर्ष: यह देखने के लिए कि यीशु किसे महत्व देता था, केवल उसके जिसका वह प्रचार करता था केवल पहले शब्दों, बीच के शब्दों और अंत के शब्दों को देखना आवश्यक है। यह शब्द सुसमाचार के मरकुस के विवरण में संक्षेप में लिखे गए हैं। हर कोई उसे *परमेश्वर के राज्य* पर प्रचार करते हुए पा लेता है।

अब हमारे लिए सचमुच में महत्वपूर्ण क्या है? इसका उत्तर है: परमेश्वर के राज्य को ढूंढ़ो, इसमें आ जाओ, इसमें रहो और इसका प्रचार करो। हमारे लिए करने के लिए कल सचमुच में महत्वपूर्ण क्या होगा? उत्तर वही है। यदि यीशु ने पृथ्वी की अपनी सेवकाई इसे दे दी, तो क्या हमें भी पृथ्वी के अपने जीवन इसे नहीं दे देने चाहिए?

किसी बात के लिए बुलाहट? (1:16-20)

यीशु की पृथ्वी की सेवकाई के बहुत से पहलू थे। हर पहलू का अपना महत्व और महिमा थी। उसने आने वाले राज्य का प्रचार करने के लिए अपना अधिकतर समय बिताया। उसके काम का यह भाग उसे सुनने वाले लोगों को उस राज्य को ग्रहण करने के लिए तैयार करने के लिए आवश्यक था। उसके राज्य का संदेश सुनाने से उसका आधार बन गया जो स्वर्ग में उसके चले जाने के बाद होना था।

उसकी सेवकाई का दूसरा भाग भी कठिन था। यह यह दिखाने का आयाम था कि वह कौन है। उसके लिए स्पष्ट करना आवश्यक था कि वह परमेश्वर का पुत्र है और उसने यह सुनिश्चित करते हुए कि वह लोगों को तीन वर्ष की अपनी सेवकाई के अंत तक इस तथ्य पर विश्वास दिला देगा, धीरे-धीरे इस सच्चाई को बताया। यदि वह बहुत तेजी से आगे बढ़ता, तो भीड़ के लोगों ने बेकाबू भावनाओं से फूट पड़ना था। यदि वह बहुत धीरे-धीरे आगे बढ़ता, तो उसके हाथ से वह समय निकल जाना था जो उसे वह करने के लिए जिसे वह करने आया था आवश्यक था।

उसकी सेवकाई की तीसरी विशेष बात चेलों को चुनना था, जिन्होंने उसके लिए क्रूस पर जाने का समय आने पर उसके बड़े मिशन को आगे बढ़ाना था। उसने लोगों को उसे ग्रहण करने, उसके वफ़ादार चेले बनना चुनने की चुनौती दी। अपने आप चेलों का एक झुण्ड इकट्ठा करने के बाद, उसने कुछ प्रेरितों को चुना जिन्हें उसने अच्छी तरह से प्रशिक्षण दिया और आने वाले राज्य के अपने मिशन का भाग बनने के लिए तैयार किया। उसके काम में संसार को यह बताने की बड़ी जिम्मेदारी थी कि परमेश्वर वास्तव में कैसा है।

उसकी सेवकाई के हर भाग ने उसके मन पर हर समय भारी बोझ बनाए रखा। उसने अपनी सेवकाई में से चलते हुए इन चुनौतियों में हर चुनौती पर विशेष ज़ोर दिया।

इस प्रसिद्ध वचन में (1:16-20), मसीह अपने अनुयायी बनाने के लिए लोगों को चुन रहा था। चार पुरुष - पतरस, अन्द्रियास, याकूब और यूहन्ना - गलील की झील के तट पर थे। पतरस और अन्द्रियास झील में अपने जाल फेंक रहे थे; याकूब और यूहन्ना ने मछलियां पकड़ना बंद कर दिया था और अपने अपने जालों को ठीक कर रहे थे। यीशु ने इन लोगों को अपने पीछे आने को कहा। हो सकता है कि वे पहले भी यीशु को मिलते रहे हों और उसके साथ समय

बिताते हों। यूहन्ना 1:35-51 बताता है कि पतरस और अन्द्रियास यीशु की बातों से अत्यधिक प्रभावित थे। अन्द्रियास ने यीशु को ''मसीह'' कहा; और यीशु ने यह भविष्यद्वाणी करते हुए कि वह ताकत की चट्टान बनेगा शमौन को एक नया नाम दिया ''पतरस।'' याकूब और यूहन्ना दोनों हो सकते हैं जिन्होंने यूहन्ना 1:39 में यीशु के साथ दिन बिताया।

यीशु ने इन लोगों को अपना मछली पकड़ने का सामान छोड़कर उसके पीछे आने को कहा। वचन यह बताता है कि यीशु ने उनसे कहा, ''मेरे पीछे आओ; मैं तुम को मनुष्यों के मछुवे बनाऊंगा'' (मरकुस 1:17)। हमारे लिए पहले जैसा प्रश्न बुनियादी है कि ''यीशु ने इन लोगों को किस बात के लिए बुलाया?'' हमारे लिए इसके अर्थों के कारण यह प्रश्न पूछना आवश्यक है। बाद में मरकुस की पुस्तक में, हमारे सहित, यीशु ने सब लोगों को ऐसी ही बुलाहट दी; और हम जानना चाहते हैं कि इसका क्या अर्थ है। आइए उस पुस्तक के लिए जो हम पता लगाना चाहते हैं इस वचन की जांच करें।

1. संदर्भ से हम देख सकते हैं कि यीशु उन्हें गहराई से *चेले बनने* के लिए बुला रहा था। बाद में अपनी सेवकाई में यीशु ने चेलों से अपने झुण्ड में से अपने प्रेरित बनने के लिए बुलाया। परन्तु यहां पर प्रेरित बनने की बुलाहट नहीं है। वह चाहता था कि वह आएं, उसके पीछे चलें, और उसकी नकल बनें। उन्हें उससे सीखना आवश्यक था ताकि वे वैसे प्रेम कर सकें जैसे वह प्रेम करता था, वैसे ही सम्बन्ध में रह सकें जैसे उसका अपने पिता के साथ था, दूसरों की वैसे ही सेवा करें जैसे वह करता था, और संसार के पास राज्य को वैसे ही ले जाएं जैसे यीशु ने ले जाना ठहराया था।

मरकुस 8:34 के अनुसार यीशु ने उसकी बातें सुनने वालों से कहा, ''जो कोई मेरे पीछे आना चाहे, वह अपने आपे से इनकार करे और अपना क्रूस उठाकर, मेरे पीछे हो ले।'' इस निमन्त्रण के क्रूस वाले भाग का अर्थ असली चेला बनकर रहना यानी यीशु की जीवनशैली को अपनाना है। यह क्रूस ही होगा, क्योंकि कई तरीकों से संसार हर असली चेले को क्रूस पर वैसे ही चढ़ा देगा जैसे इसने हमारे स्वामी यीशु को चढ़ाया।

2. इसके अलावा यीशु इन लोगों को अपने साथ संगति में आकर रहने के लिए बुला रहा है। उसकी बुलाहट का अर्थ यह था कि उन्हें जो कुछ भी वे कर रहे थे (यहां पर, मछली पकड़ रहे) छोड़कर उसके साथ जाना आवश्यक था। वह चाहता था कि वे उसके आस पास रहें, उसके साथ पहुंचे और उसके मिशन पर उसके साथ हों।

इन लोगों के लिए यीशु के पीछे चलने का अर्थ सब आशिषों से बढ़कर था। उन्होंने मसीहा की उपस्थिति में दिन प्रतिदिन रहना था जब उसने संसार को पृथ्वी के अपने जीवन के गुण बताने थे। उसके सिद्ध जीवन के प्रकाश में उन्हें दिन प्रतिदिन यीशु के और सम्पूर्ण चेलों में ढलते जाना था।

यह सच है कि हमें वैसा सौभाग्य नहीं मिलेगा जैसा उन्हें मिला था। देह में यीशु के साथ चलने का सौभाग्य; परन्तु हमें वैसे ही सौभाग्य मिलेंगे जो कुछ मामलों में उससे भी बड़े हैं। अटारी वाले कमरे में, यीशु ने अपने प्रेरितों को बताया, ''और थोड़ी देर रह गई है कि फिर संसार मुझे न देखेगा, परन्तु तुम मुझे देखोगे; इसलिये कि मैं जीवित हूँ, तुम भी जीवित रहोगे'' (यूहन्ना 14:19)। सचमुच में यीशु अब संसार में नहीं है; परन्तु एक आत्मिक अर्थ में वह अपने चेलों के

साथ है। हमारी उसके साथ आत्मिक संगति है। उसके साथ हमारी संगति सब भौतिक सीमाओं से आगे है। हम उसके साथ जाते हैं तब वह हमारे साथ जाता है (देखें मत्ती 28:19, 20)।

3. इससे भी बढ़कर, यीशु ने इन लोगों को संसार में सेवक बनने के लिए बुलाया। यह सचमुच में सेवक होना उसकी बुलाहट के स्पष्ट शब्दों में साफ़ मिलता है: ''मेरे पीछे आओ; मैं तुम को मनुष्यों के मछुवे बनाऊंगा'' (1:17)। वे मछुआरे थे, परन्तु अब वे मनुष्यों की आत्माओं को पकड़ने वाले बनने जा रहे थे। यीशु ने उन्हें सिखाना था कि यह काम कैसे करना है। इस प्रशिक्षण में सेवक होने की सबसे बड़ी किस्म शामिल थी।

यदि हम अपने लिए उनकी बुलाहट के इस भाग को लागू कर रहे होते तो हम अपने प्रभु के ग्रेट कमीशन के शब्दों का ही इस्तेमाल करेंगे:

> ''इसलिये तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ; और उन्हें पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ: और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूं'' (मत्ती 28:19, 20)।

हमारे लिए ''मनुष्यों के पकड़ने वाले'' होने का अर्थ ''सब जातियों के लोगों को चेले बनाना'' है।

हम यीशु के साथ जाते हैं, वह हमें अपने काम के लिए तैयार करता है, और फिर हमें दूसरों के पास भेजता है। उसकी बुलाहट में आना, बनना और जाना शामिल हैं; इसके लिए विश्वास करना, होना और दूसरों को लाना आवश्यक है।

निष्कर्ष: इन तथ्यों को देखकर और उन्हें मानकर हम यीशु को जान जाते हैं। फिर क्षणों का वह क्षण यानी वह समय आता है जब हमारे लिए उसके चेले, अर्थात उसके अनुयायी होना चुनना आवश्यक होता है।

उसकी उपस्थिति में रहने की वास्तविकता के लिए बिना अपने आपको वह बनने लिए जो हर मनुष्य बनना चाहता है हम नहीं बन सकते। यह भी सच्च है कि अपने वास्तविक अर्थ में चेला होने के लिए यीशु को पहल देना आवश्यक है। वह केवल सूची में सबसे पहले नहीं है। बल्कि वह पूरी तरह से सबसे पहला है। वह अल्फा और ओमेगा अर्थात प्रथम और अंतिम है। परन्तु उसे दूसरे ढंग से कहें तो वह पूरी की पूरी वर्णमाला है। वह हमारा पूरा जीवन है। पौलुस के साथ हम कह सकते हैं, ''मेरे लिए जीवित रहना मसीह है'' (फिलि. 1:21)। ऐसा नहीं है कि ''मेरे लिए, जीवित रहना पहले मसीह हैं।'' यह इस प्रकर से है, ''मेरे लिए जीना मसीह है।'' लोगों, सामान, और विशेष लाभों से पहले हमेशा वह आए। वह हमारे लिए जीवन बनें। हम उसके बनें और वह हमारा बने। थोड़े बहुत, लगभग नहीं बल्कि पूरे।

यीशु की आवाज (1:21-28)

हम यीशु के व्यक्तित्व और जीवन की कई विशेषताओं पर विचार कर सकते हैं जो हम चाहते हैं कि इस पृथ्वी पर उसके रहते समय हम देख सकें। 1 यूहन्ना के अपने परिचय में (1:1-3) यूहन्ना ने बताया कि प्रेरितों ने यीशु को कैसे सिखाते हुए सुना, कैसे उन्होंने देखा और

कैसे लोगों के साथ उसके काम और उसके सम्बन्ध थे, और कैसे वे उसे अपने हाथों से छूते थे। हम केवल थोड़ी सी कल्पना कर सकते हैं कि उनके वे अनुभव कैसे हैं। हम परमेश्वर के पुत्र के कंधों या हाथों को छूने की अपने मनों में कल्पना कर सकते हैं? विशेषकर उसकी आवाज को सुनना वास्तव में कैसा होता है?

हम कितने आशीषित हैं कि हमारे पास पवित्र शास्त्र है क्योंकि उनसे हम यीशु को उससे जो पृथ्वी पर उसके रहते समय हम देख और सुन सकते होंगे, शायद बेहतर दिखाता और सुनाता है! कई बार हमारी आंखें हमें धोखा देती हैं क्योंकि हम पूरी तस्वीर को देखने के लिए कुछ अधिक ही निकट होते हैं। भीड़ में अच्छी स्थिति पर आ पाना कठिन ही होता है जिससे हमारे देखने में किसी प्रकार की रुकावट न पड़े। जब हम पवित्र शास्त्र का अध्ययन करते हैं तो ऐसी कोई समस्या नहीं आती। पवित्र आत्मा हमें निकट ले आता है और हमें वह दिखाता है जो वास्तव सचमुच में हमारे लिए देखना आवश्यक है कि क्या हो रहा है। इसके अलावा आत्मा बहुत से मामलों में हमें कुछ व्याख्या दे देता है कि क्या रिस रहा था और क्यों रिस रहा था।

कफरनहूम में आराधनालय के इस दृश्य में, हमें यीशु का विशेष दर्शन मिलता है। विशेषकर हम उसे अलग ढंग से उसकी आवाज को सुनते हैं। इस वचन में से आगे बढ़ते हुए हमें परमेश्वर के पुत्र की आवाज का विश्लेषण करने दिया जाता है, जिसमें उसके अलग ईश्वरीय गुण देखने को मिलते हैं।

1. दृश्य के सामने आने पर, हम एकदम से देखते हैं कि यीशु की आवाज *अधिकार से भरी आवाज* थी। उसे सुनने वाले लोग एकदम एक सच्चाई को मान लेते थे कि ''वह उन्हें शास्त्रियों की समान नहीं, परन्तु अधिकारी के समान उपदेश देता था'' (1:22)। शास्त्री अर्थात सिखाने वाले जिन्हें उस समय के बेहतरीन शिक्षक माना जाता था, अपने तर्क को साबित करने के लिए एक के बाद एक रब्बी का हवाला देते थे। स्पष्टतया आराधनालय के श्रोताओं को यह समझने में देर नहीं लगी कि यीशु अलग था। वह उनके साथ यह विचार नहीं करता था कि यह सही हो सकता है; वह उन्हें केवल सत्य बता देता था। एक शिक्षक के रूप में वह विस्मयादिबोधक बिंदु था, न कि प्रश्न चिह्न।

कोई भी जो पवित्र शास्त्र का प्रचार करता या सिखाता है उसे उस सच्चाई को सिखाना आवश्यक है जो यीशु ने बताई, नहीं तो वह अपने ईश्वरीय कार्य में चूक गया है। यीशु के शब्द अधिकार से भरे शब्द होते हैं। उन्हें उच्चस्तर तक पहुंचाने के लिए चमकाकर या उठाकर मुलायम नहीं किया जा सकता। वे सच्चाई का अंतिम रूप हैं। हमारे लिए अपने अंदर यीशु के जीवन को आने के लिए उन्हें समझना, मानना और उनके अनुसार जीना आवश्यक है। संसार को यीशु के निर्णायक, विश्वास से भरे वचनों की बहुत आवश्यकता है। परन्तु एक सावधानी भी बरतनी आवश्यक है कि सिखाने वालों को यीशु की सच्चाई की घोषणा करने पर आवश्यक नहीं कि लोगों के खुले मन मिलें। परमेश्वर के पुत्र को नहीं मिले, और सेवक को वैसा ही व्यवहार किए जाने की उम्मीद करनी चाहिए, जैसा उसके स्वामी के साथ किया गया।

2. और आगे देखते हुए, हम देखते हैं कि यीशु की आवाज *शक्ति की आवाज* भी थी। यीशु विश्वासी यहूदियों की सभा में लगातार आराधनालय में जाता रहता था। परन्तु इस अवसर पर एक विशेष व्यक्ति यानी दुष्टात्मा से ग्रस्त व्यक्ति उसे मिला। वचन कहता है, उसी समय

(1:23)। यानी जब सच्चाई लोगों को बताई जा रही थी, तभी विरोध आ गया। जब भी सच्चाई बताई जाती है शैतान उस सच्चाई को चुनौती देने के लिए रास्ता ढूंढ़ ही लेता है।

आराधनालय में ''अशुद्ध आत्मा'' वाला एक आदमी चिल्लाने लगा। मरकुस बार-बार दुष्टात्माओं को ''अशुद्ध आत्माएं'' कहता है। अपने निवास स्थान के रूप में उस आदमी की देह का इस्तेमाल करते हुए दुष्टात्मा पुकार उठी, ''हे यीशु नासरी, हमें तुझ से क्या काम? क्या तू हमें नष्ट करने आया है? मैं तुझे जानता हूं, तू कौन है? परमेश्वर का पवित्र जन!'' तभी यीशु ने उस अशुद्ध आत्मा को ''चुप रह और उसमें से निकल जा'' की आज्ञा देते हुए डांटा। उसी समय, दुष्टात्मा ने उस आदमी को ''मरोड़कर और बड़े शब्द से चिल्लाकर'' उसमें से निकल गई (1:24-26)।

कौन होगा जिसे वचन के इस भाग में यीशु की आवाज की सामर्थ न दिखाई दे सकी? यीशु को केवल आज्ञा देनी थी, और उसकी आज्ञा मानी गई। शैतान यीशु के निर्देश को मानना नहीं चाहता था, परन्तु उससे मानना पड़ा। शायद उसे उस आदमी में से निकल कर कूड़े में जाना पड़ा ताकि हर कोई देख सके कि यीशु के शब्दों को रोका नहीं जा सकता। यह दृश्य हमें भजन 33:9 का स्मरण करवाता है: ''क्योंकि जब उस ने कहा, तब हो गया; जब उस ने आज्ञा दी, तब वास्तव में वैसा ही हो गया।''

इस संसार में यीशु के वचनों से बढ़कर शक्तिशाली और कोई चीज़ नहीं है। आरम्भ में उसके वचनों ने पहाड़ों को मिट्टी में से उठाकर रात के आकाश में तारों में फेंक छितरा दिया। इसको ध्यान में रखते हुए, यीशु ने कहा, ''आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी'' (मत्ती 24:35)।

3. यीशु की आवाज एक और सच्चाई जिससे हम बच नहीं सकते वह यह कि यीशु की आवाज़ *तरस की आवाज़* थी। यीशु को इस दुष्टात्मा की परवाह करने की क्या आवश्यकता थी? उसने उपदेश देना जारी क्यों नहीं रखा, एक कारण बीच में बड़े ज़ोर शोर से आ जाता है कि यीशु का ध्यान उस आदमी पर गया जो दुष्टात्मा से ग्रस्त था। हम नहीं जानते कि दुष्टात्मा से ग्रस्त होना कैसे हुआ। इस आदमी की गलती थी और वह अपने पाप का परिणाम भुगत रहा था, या यह एक निर्दोष व्यक्ति था जो किसी के कारण दु:ख उठा रहा था। हम केवल इतना जानते हैं कि यीशु ने एक आदमी को परेशानी में देखा और उसके तरस के कारण दुष्टात्मा को डांट पड़ गई और इस बेचारे को चंगाई मिल गई।

यीशु हमेशा संसार के दु:खी लोगों को बचाने के लिए आ जाता है। यीशु कंगालों के पक्ष में है। उसने हर रोगी, बीमार और दुष्टात्मा से ग्रस्त को जो उसकी सेवकाई के दौरान संसार में था, चंगा नहीं किया; परन्तु जब चलते चलते राह में कोई उसे मिल जाता तो तरस की उसकी आवाज उनके लिए कुछ कर देती।

जो लोग यीशु को जानते थे और उसके साथ नज़दीकी से रहे, उनके अंदर भी ''तरस'' होगा। हम दु:खी लोगों को अपने मन में जगह देने के लिए उसकी चिंता की मीठी महक को आने दिए बिना यीशु के साथ नहीं चल सकते।

4. यीशु के शैतान के साथ पेश आने में, हम देखते हैं कि उसकी आवाज *सच्चाई की आवाज* होनी थी। दुष्टात्मा को मालूम था कि यीशु कौन है। यीशु के सामने, उसे ''परमेश्वर का

पवित्र जन'' (1:24) कहने से रोक नहीं पाया। स्पष्टतया दुष्टात्मा की बात सच थी। उसने पूरी सच्चाई को माना। परन्तु यदि बैंक का कोई लुटेरा यह कहे कि ''सब लोग खराई और सच्चाई की ज़िंदगी जिएं तो'' उसकी योजना में कुछ तो खामी होगी। यीशु ने एक अशुद्ध दुष्टात्मा के द्वारा लोगों के मनों में डालने के लिए अपनी पहचान की सच्चाई नहीं डालने देनी थी। एकदम से, यीशु ने कहा, ''चुप रह ...!'' (1:25)। यहां पर इस्तेमाल हुआ यूनानी शब्द भारी है। इसका अर्थ बहुत कुछ ''बकवास बंद कर!'' के जैसा है। कइयों ने इसका अनुवाद ''मुंह बंद कर'' किया है (AB)।

यीशु इस सेवकाई के दौरान संसार को अपनी प्रमाणिकता बता रहा था। उसने अपने स्वभाव, अपने संदेश या अपने तरीकों पर किसी को गंदा नहीं करने देना था। उसने केवल सम्पूर्ण सच्चाई बताई, निष्कलंक व्यक्तित्व दिखाया और स्वर्ग की खराई पर अपने राज्य को बनाना चाहा। दुष्टात्मा को निकाल दिया गया और यीशु ने उसे अपनी सेवकाई की तस्वीर से बाहर रहने का आदेश दिया।

निष्कर्ष: पृथ्वी ने यीशु की आवाज को सुना जब वह यहां देह में था, और उस समय के बाद से लेकर संसार फिर कभी वैसा नहीं रहा। पृथ्वी के लोगों ने गवाही दी कि उसकी आवाज अधिकार से भरी आवाज, शक्ति से भरी आवाज, तरस से भरी आवाज, और सच्चाई से भरी आवाज थी।

हम उसकी आवाज को अब पवित्र शास्त्र के माध्यम से सुनते हैं। उसके शब्द हमारे सामने हैं, उसके लहू में सने हुए और उसके पुनरुत्थान की चमचमाती रौशनी में। वे सब लोग जिन्होंने इन वचनों को पढ़ा है वे उसके रूप को अपनाकर बदल जाते हैं।

हम सब उसके शब्दों को पुनरुत्थान और न्याय के समय सुनेंगे। जब वह उस समय बोलेगा, तो वह अधिकार और सामर्थ के साथ बोलेगा। यूहन्ना ने लिखा ''इससे अचम्भा मत करो; क्योंकि वह समय आता है कि जितने कब्रों में हैं वे उसका शब्द सुनकर निकल आएँगे'' (यूहन्ना 5:28, 29)। धर्मियों के लिए उसकी आवाज करुणा के साथ लिपटी होगी, जब वह कहेगा, ''मैं तुम से सच कहता हूं कि जब तक ये सब बातें पूरी न हो लें, तब तक इस पीढ़ी का अन्त नहीं होगा'' (मत्ती 25:34)। अनन्तकाल में प्रवेश करके, छुड़ाए हुए लोग उसके साथ रहेंगे जिसने हमें सच्चाई दी और जो इसके मूर्त रूप में हम से पहले रहा।

एक अतिरिक्त, फिर भी एक (1:29-31)

मान लीजिए कि हम यीशु के समय में रहते होते, तो यीशु को अपने घरों में बुलाना कैसा लगता? जब यीशु हम से मिलने के लिए आए तो वह कैसा अतिथि हो? क्या हम कल्पना कर सकते हैं कि उसके साथ बैठना, उसके साथ खाना और व्यक्तिगत रूप में उससे मिलना कैसा लगता होगा?

स्पष्टतया यीशु मारथा, और बैतनिय्याह के घर लाज़र के पास कई बार जाता था। जब वह यरूशलेम में होता तो उसे रात बिताने के लिए ठिकाना चाहिए होता, तो कई बार वह उनके घर चला जाता। यीशु के आने से इन तीनों भाई बहनों को बेपनाह आशीष मिली होगी। हम उनके उसके पास बैठने, उससे सवाल करने, उसकी आंखों में देखने और उसके उनसे बातें करते हुए

उसके चेहरे के हाव भाव को ध्यान से देखने की कल्पना कर सकते हैं। वह उनके साथ खाता, उनके घर में सोता और उनके साथ मनन करता और प्रार्थना करता था। निश्चय ही पृथ्वी पर किसी के लिए भी यह सबसे बड़े अनुभवों में से एक हो सकता है (देखें यूहन्ना 11:1-3)।

यह संक्षिप्त वचन मरकुस 1:29-31 हमें यीशु को देखने देता है, जब उसने एक घर में जाकर वहां शाम बिताई। यह पतरस और अंद्रियास का घर था। वे बैतसैदा से (देखें यूहन्ना 1:44) कफरनहूम में चले गए थे और उनका घर उस आराधनालय से जिनमें यीशु उपदेश दे रहा था बहुत दूर नहीं था (देखें मरकुस 1:21, 29)। यीशु के अलावा लगभग छह जन इस छोटे से घर में छह जन इस घर में जो एक मछुआरे का था इकट्ठे हुए थे, पतरस, अन्द्रियास, याकूब, यूहन्ना, पतरस की पत्नी और पतरस की सास। यीशु के जीवन और शिक्षाओं से प्रभावित ये लोग विश्वव्यापी रूप में और अनन्तकाल के लिए पृथ्वी पर और स्वर्ग में प्रसिद्ध हो जाने थे।

यीशु को ध्यान से देखते हुए अपने दिमाग में इस प्रश्न को रखें: ''यीशु कैसा दिखता होगा यदि हमें उसके घर में उसे इतनी नज़दीकी से देखने का मौका मिलता है?''

1. यह वचन यीशु को दयालु अतिथि के रूप में दिखाता है। हमने यीशु को बपतिस्मे की प्रतीक्षा करते यरदन नदी के किनारे, शैतान का सामना करते जंगल में, चेलों को बुलाते, झील के किनारे और आराधनालय में उपदेश देते और फिर चंगाई देते देखा है। अब हम उसे एक साधारण मछुआरे के घर में देखते हैं। वचन कहता है कि वह ''शमौन और अन्द्रियास के घर आया'' (1:29)।

जब हम यीशु को इस स्थिति में देखते हैं, तो उसके व्यवहार और चालढाल की हर बात उसके दयालु और उदार होने की बात करती है। अपनी सेवकाई में यीशु ने दिए गए सबकों में और लोगों के साथ होने वाली बातचीत में केवल अनुग्रह की बात नहीं की, बल्कि उसने अपने सामाजिक जीवन में दूसरों के साथ अपने व्यवहार और सम्बन्धों में इसे दिखाया भी। वह इस बात का सिद्ध नमूना था कि एक दयालु व्यक्ति व्यवहार और संगति में कैसा दिखता है।

भक्ति भरा जीवन पूरे जीवन के साथ जुड़ा होता है। किसी भी परिस्थिति में, व्यक्ति को परमेश्वर का स्वभाव दिखाना चाहिए जो उसके अंदर वास करता है, चाहे वह इस पर विचार कर रहा हो या नहीं। कई मसीही लोग रविवार प्रात: कलीसिया की सभा को निकलने के बाद अपनी मसीहियत को पीछे छोड़ आते हैं। यीशु जहां भी होता वहां स्वयं होगा और यही बात हर चेले के लिए भी होनी चाहिए।

2. यह वचन उसे सौहार्दपूर्ण व्यक्तित्व के रूप में भी दिखाता है। यानी वह मिलनसार, सुशील स्वभाव, मित्रतापूर्ण और उदार हृदय था। उसकी उपस्थिति में होना हमें बड़ा आनन्द देने वाला होगा।

जब उससे घर में बीमार व्यक्ति की सुधि लेने के लिए कहा गया, तो उसने कोमलतापूर्वक और समझदारी से जवाब दिया। चाहे यीशु परमेश्वर का निष्कलंक पुत्र सिद्ध था पर उसने अपने आपको उन लोगों के साथ मिलाया जिन्हें उसकी आवश्यकता थी। उसने उनके साथ बात की और दयालुता के साथ उनकी सेवा की।

कुछ प्रिय लोगों के व्यक्तित्व कठोर और चोट पहुंचाने वाले होते हैं। उनके कमरे में प्रवेश करते ही, लगता है कि खुशी गायब हो गई। परन्तु ऐसे भी हैं जिनके मन ''छिद्र'' के बजाय

''सम्भावना'' वाले होते हैं। जब वे अंदर आते हैं तो हमें सकारात्मक ऊर्जा और गतिशील भविष्य की आशा का अनुभव होता है। यीशु बच्चों, कंगालों, अंधों और लंगड़ों से प्रेम करता था। चुंगी लेने वाले और पापी उसके आस पास रहते थे और उसे बोलते सुनते थे। निराश लोग आशा की उस किरण को अपने में समा लेने के लिए जो उसके व्यक्तित्व से निकलती थी उसके साथ आते थे।

3. वचन यीशु को मन के दीन व्यक्ति के रूप में दिखाता है। मत्ती 11:29 में उसने अपने आपको ''मन में दीन'' बताया। जिस मसीह को हम इस वचन में देखते हैं वह सर्वशक्तिमान मसीह है, यानी वह जिसके द्वारा परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी को सृजा (कुलुस्सियों 1:16); परन्तु इस घर में वह विनम्र था।

यीशु ने पतरस के घर में अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते हुए और घर में बढ़िया सी जगह नहीं मांगी। राजा के राजा और मित्रों के चुने हुओं में से तब के सेवक के रूप में बैठा। बीमारी के बारे में जो झोंपड़ी के अंदर दीवारों पर थी बताया जाने पर वह उस बीमार स्त्री के पास कोमलता और प्रेम के साथ गया। उसके मुंह के बोल और उसके हाथ का स्पर्श जीवन, बीमारी और मृत्यु से शक्तिशाली थे। वचन कहता है, ''तब उसने पास जाकर उसका हाथ पकड़के उसे उठाया'' (1:31)।

वह चंगाई जो उसने पतरस की सास को दी फौरी और पूरी थी। हमें यह याद रखना आवश्यक है कि वह सर्वशक्तिमान मसीह है। हमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि यह स्त्री बीमारी से उठकर उसी समय यीशु और उसके साथियों की सेवा करने लगी।

दीनता सबसे बड़े आत्मिक गुणों में से एक है। यीशु ने कहा, ''जो तुम में बड़ा हो, वह तुम्हारा सेवक बने। जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा: और जो कोई अपने आप को छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा'' (मत्ती 23:11, 12)। घमण्ड शर्मिंदा करता है जबकि दीनता साथ देती है। परमेश्वर के राज्य में घमण्डियों या मन में बलवान लोगों के लिए कोई जगह नहीं है। यीशु में सर्वशक्तिमान परमेश्वर पापियों का सेवक बन गया; मसीही में, जो उद्धार मसीह देता है उसे उन लोगों के हाथों के द्वारा जिन्होंने अपने आपको दीन किया है और जो बच्चे समान मन के साथ लोगों की सेवा करते हैं, दूसरों को दिया जाता है।

निष्कर्ष: यीशु सचमुच में सिद्ध मनुष्य था। मरकुस ने उसे अलग-अलग परिस्थितियों और स्थानों में जो हमारे लिए सामान्य हैं हमारे बीच में रहते दिखाया है। हमने उसे एक मित्र के घर में, हम पर अपने वास्तविक स्वभाव को प्रकट करके, अपनी बिल्कुल साफ़ छवि को दिखाते हुए देखा है। पतरस, अन्द्रियास, याकूब, यूहन्ना, पतरस की पत्नी और पतरस की सास उसके अनुग्रहकारी, सौहार्दपूर्ण और उसके मन की दीनता में नहा लिए थे। सचमुच में वह दूसरों से अलग रहा परन्तु वह उनमें से था। वह उनका राजा होने के साथ साथ उनका पक्का दोस्त था।

उसकी सामर्थ एकदम से दिखाई देती थी; यह हमारे आस पास के भौतिक संसार से बढ़कर, किसी भी बीमारी या शारीरिक व्याधि से शक्तिशाली है। यह साफ तौर पर भावनापूर्ण है परन्तु इसकी महानता बयान से बाहर है। चाहे उसमें सब खूबियां थी परन्तु यीशु ने हम से किसी प्रकार अलग न दिखना चुनकर, उन्हीं सीमाओं में रहना चुनकर जिनमें हम रहते हैं, उन सभी परीक्षाओं का सामना करने की सहमति जताकर जो हमारे सामने आती है और उस देह में रहना चुनकर

जिसे दुष्ट मनुष्य मार सकते थे, मानवीय देह धारण करके हमारे जैसा बन गया। जब हम उसे देखते हैं, तो हम चिल्लाए बिना रह नहीं पाते, ''कितना अच्छा उद्धारकर्त्ता है!''

हम उसके इन शब्दों को कभी मत भूलें:

> ''हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो, और मुझ से सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं: और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे। क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हलका है'' (मत्ती 11:28-30)।

यह मसीह जो हमसे अलग है पर हम में से ही है जो हमें अपने पास आने और अपना विश्राम देने के लिए बुलाता है।

आश्चर्यकर्म क्या कहते हैं? (1:32-34)

यीशु के दुष्टात्मा से ग्रस्त आदमी को आराधनालय में चंगा करने की खबर नगर के लोगों में आग की तरह फैल गई। यीशु को वहां पाकर जहां वह रात गुज़ारने वाला था, लोग अपने बीमारों को और जिनमें दुष्टात्माएं थीं, चंगाई के लिए, जो केवल वही दे सकता था, लाने की योजनाएं बनाने लगे। वे उस शाम छह बजे तक सब्त बीतने तक रुके रहे, और फिर अपने बीमारों को लेकर उसके पास भाग आए।

लोग नगर के हर कोने से आए, और शायद आस पास के इलाकों में से भी। कलिंगम गेकी की सहायता से हम यीशु के इन लोगों को चंगा करने की तस्वीर इस प्रकार से खींच सकते हैं:

> [यीशु] खुले द्वार पर जल्द ही प्रकट हुआ। वह भीड़ में आगे चला गया और उनके साथ बातें करने लगा। उसने आज्ञा दी, ''शांत रहो, और उसमें से निकल जाओ,'' और दुष्टात्मा से ग्रस्त एक बेचारा तुरंत होश में आ गया। एक लाचार लंगड़ा उसके इतना कहने से उठ खड़ा हुआ, ''मैं तुझ से कहता हू, उठ।'' एक अदरंगी यीशु की आज्ञा की आवाज से अपना बिस्तर छोड़ दिया, ''अपना बिस्तर उठा और चल फिर।'' कइयों के लिए उसके पास तसल्ली की बात थी जिसने सावधान करते हुए उनके दु:ख के गुप्त कारण को दूर कर दिया। ''तेरे विश्वास के अनुसार तेरे लिए हो,'' एक कुबड़े से उसने कहा। ''हे स्त्री तेरी बीमारी जाती रही,'' एक जवान महिला से उसने कहा। ''आनन्द मना, मेरे पुत्र तेरे पाप क्षमा हुए।'' किसी जवान के दु:ख और पीड़ा को स्वास्थ्य में बदलने के लिए काफ़ी था। थोड़ी ही देर में उसने उन सब को करुणा भरी कोई न कोई बात कह दी। अंधे को आंखें मिल गई थीं; दुष्टात्मा से ग्रस्त व्यक्ति ने ऐसे ग्रस्त होने से छुटकारे के लिए परमेश्वर को धन्यवाद दिया; बीमारी से पीड़ित जोगों को लगा कि उनमें शक्ति लौट आई है; साफ़ सुनने लगकर, बहरा उसकी महिमा में चिल्लाने लगा था; और इस प्रकार से चंगाई पाकर भीड़ रात की उस खामोशी में एक बार फिर से घर से निकलकर हर दिशा में चली गई।[47]

इस दृश्य के बारे में सबसे महत्वपूर्ण प्रश्नों में से एक जो हमें पूछना चाहिए वह यह है: ''ये सब आश्चर्यकर्म उसके बारे में जिसने इसे किया क्या कहते हैं?'' इसे एक और तरीके से पूछें, ''हमारे

लिए इन आश्चर्यकर्मों का क्या संदेश है।''

1. साफ़ तौर पर वे कहते हैं कि यीशु *परमेश्वर का पुत्र* है। वे हमसे सीधे विश्वसनीयता का प्रश्न करते हैं। बेशक भीड़ में लोगों की हर प्रकार की बीमारी और परेशानी को दूर करने वाला परमेश्वर के सर्वशक्तिमान पुत्र को छोड़कर और कोई नही हो सकता। लोगों की इस प्रकार से सेवा परमेश्वर के पुत्र को छोड़ और कौन कर सकता है?

जिसने यह चंगाई की उसने असीमित सामर्थ को दिखाया। सचमुच में उसकी सामर्थ सृजन करने वाली, चंगाई देने वाली और वह ईश्वरीय सामर्थ है जिसने प्रकृति के नियम बनाए।

दुष्टात्माओं को निकालने के लिए वह किसी द्विव्य शक्ति के पास शक्ति लेने के लिए नहीं गया। नहीं। वह ही सामर्थ है; सामर्थ उसके अंदर है। सारी सामर्थ जो पाई जाती है उसी से निकलती है।

यीशु के बारे में इस सच्चाई को ग्रहण करने में हमारे सामने केवल एक कठिनाई आती है कि क्या वह वचन जो इस दृश्य को हमें दिखाता है सही है? यदि सही है तो इसमें कोई संदेह नहीं हो सकता कि यीशु के परमेश्वर होने का दावा इन आश्चर्यकर्मों के द्वारा किया जाता है। यह सामर्थ के काम भी स्पष्ट कर देते हैं कि यीशु मनुष्य के मन की कल्पना नहीं है। कोई मनुष्य या मनुष्यों का समूह उसका आविष्कार नहीं कर सकता था। वह परमेश्वरत्व का दूसरा सामर्थ है और सारी सामर्थ उसमें वास करती है। वह रोग, बीमारी, बुराई और शैतान पर काबू पा सकता है; वह जीवन, मृत्यु और अमरता से बढ़कर शक्तिशाली है।

2. इसके अलावा यह आश्चर्यकर्म यीशु को बड़े वैद्य के रूप में दिखाते हैं। यह दृश्य उसकी करुणा के प्रश्नों का उत्तर देता है। क्या यीशु को दु:खी और परेशान लोगों की भीड़ की चिंता है। क्या वह मनुष्यजाति के अधिकतर अपाहिजों का कुछ कर सकता है? हां!

चंगाई की इस घटना का संदेश यह एलान करता है कि उसकी प्रवाह और प्रेम के दायरे से कोई बाहर नहीं है। किसी ने कहा है, ''यीशु लोगों के लिए दिलस्प था क्योंकि वह लोगों में दिलचस्पी लेता था।'' उसका मन हर दु:खी व्यक्ति तक जाता है। पृथ्वी की उसकी सेवकाई ने उसे हर परेशान और दु:खी व्यक्ति को चंगा नहीं करने दिया, परन्तु इसने उसे यह संदेश देने दिया कि वह हर व्यक्ति से प्रेम करता है। वह पाप, शारीरिक सदमे और मृत्यु के इस संसार आत्मिक समाधान देने के लिए आया।

बताया जाता है कि किसी ने सुसमाचार के यूहन्ना के विवरण को बिना रुके पूरे का पूरा पढ़ दिया। उसने इसे पहली बार पढ़ा था। किताब को पूरा पढ़ लेने पर उससे पूछा गया, ''तुम्हारा सबसे बड़ा प्रभाव क्या था?'' उस आदमी ने तुरंत उत्तर दिया, ''यह तथ्य कि यीशु कभी किसी बेकार व्यक्ति से नहीं मिला।'' यीशु की नज़र में कोई भी व्यक्ति बेकार नहीं था।

3. इस दृश्य में आगे गहराई में जाने पर, आश्चर्यकर्म हमें संदेश देते हैं कि यीशु वफ़ादार मसीह है। आश्चर्यकर्मों की यह शृंखला स्वभाव के प्रश्न की बात करती है कि इसका स्वभाव कैसा है? इस प्रश्न के लिए, आश्चर्यकर्म ठोक बजाकर उत्तर देते हैं कि वह वह मसीह है जो न केवल घायलों की परवाह करता है, बल्कि दु:खी सेवक के अपने ईश्वरीय गुण के स्वभाव में सहन भी करता है। वह धर्मी मसीह है, और वह वह मसीह है जो अपने लोगों का हमेशा वफ़ादार है।

एक बार फिर, यीशु ने दुष्टात्माओं को अपनी गवाही देने से मना किया। मरकुस ने लिखा है,

''दुष्टात्माओं को बोलने न दिया'' (1:34)। मसीह ने झूठ की दुर्गंध से भर कर दूसरे से सच्चाई के साथ लोगों को अपनी पहचान का विश्वास नहीं दिलाना था।

उसके अपने लिए एक खूबी थी जिसे ब्यान करना मुश्किल है। हम इसे देख लेते पर इसे साफ़-साफ़ बोलना हमें कठिन लगता है। शयद योना ने बहुत अच्छा कहा ''मैं जानता था कि तू अनुग्रहकारी और दयालु परमेश्वर है, विलम्ब से कोप करनेवाला करुणानिधान है, और दुःख देने से प्रसन्न नहीं होता'' (योना 4:2)। योना परमेश्वर के स्वभाव का वर्णन कर रहा था, पर हम उसके शब्दों को यीशु के लिए भी लगा सकते हैं।

पृथ्वी पर यीशु की गतिविधियों से पता चला कि वह कौन है। उसने परोपकारी बनने का निर्णय नहीं लिया; वह परोपकार का सबसे बड़ा रूप है। परोपकार उसका स्वभाव नहीं बना; पर हर प्रकार का वास्तविक परोपकार उसी से निकलता है जो यीशु है। यीशु का स्वभाव वास्तविक परोपकार की परिभाषा है।

निष्कर्ष: मरकुस के यह संक्षिप्त शब्द न केवल हमें यह बताते हैं कि यीशु ने क्या किया, बल्कि यह भी बताते हैं कि वह कौन है। यह सच्चाई कि वह कौन है हमारे पास एक आदमी की, की गई घोषणा से आती है। क्योंकि भीड़ ने इसका अनुमान लगा लिया जो उन्होंने उससे पूछा था, ''जिसे परमेश्वर पिता ने माना [क्योंकि उस आश्चर्यकर्म होने के द्वारा तसदीक थी] और शैतान की की गई पुष्टि, क्योंकि दुष्टात्मा बिना उसकी पहचान बताए उसकी उपस्थिति'' का अनुभव नहीं कर सके।

इसका अर्थ यह हुआ कि इस वचन में हमारे सामने खड़ा यीशु, परमेश्वर का पुत्र, बड़ा वैद्य और वफादार मसीह है। उस को ध्यान में रखते हुए कहा गया है, हमें भी यह मानना आवश्यक है कि वह प्रतिज्ञा किया हुआ, इस वर्तमान, बुरे संसार से हमें छुड़ाने के लिए पृथ्वी पर परमेश्वर का भेजा हुआ है। उसका सर्वशक्तिमान होना हर किसी के लिए स्पष्ट है जो उसे देखता है। यदि कोई उस पर विश्वास लाना चाहे, तो उसके लिए विश्वास करने का पर्याप्त प्रमाण होगा। इस प्राकर की सामर्थ के साथ, यीशु के पास हमारी हर समस्या का उत्तर है। सबसे बड़ा जीवन केवल उसी में मिल सकता है।

जब सफलता आई (1:35-39)

यीशु की सेवकाई में अब तक, वह गलील के लोगों में प्रसिद्धि के शिखर पर पहुंच चुका था। इससे पिछले दिन वह कफरनहूम के आराधनालय में गया था और सब लोगों के सामने उसने एक आदमी में से अशुद्ध आत्मा को निकाला था। उसका बड़ा काम आकाश में बिजली चमकने के जैसा था क्योंकि इसका समाचार नगर में तुरंत फैल गया था। लोगों ने इस समाचार को आनन्द से स्वीकार किया, और वे बीमारों का लाने और दुष्टात्माओं से ग्रस्त लोगों को उसके पास लाने के अवसर तलाशने लगे। सब्त खत्म होने के बाद, वे अपने अपंग रिश्तेदारों और मित्रों को वहां ले गए जहां यीशु रुका हुआ था ताकि वह उन्हें छूकर चंगा कर सके। यह रोमांच से भरा दिन उसके सबसे व्यस्त और सबसे फलदायी दिनों में एक में बदल गया। चाहे यह लम्बा और थका देने वाला था, परन्तु उपदेश देने और चंगाई देने का यह एक प्रभावी दिन था। लोग उसमें विश्वास लाने के लिए आ रहे थे; कम से कम एक समय के लिए, उसकी सेवकाई समर्थन, उत्तेजना और

अच्छी स्वीकृति के पागलपन पर सवार नहीं हो पाई।

जय जयकार के इस समय के दौरान यीशु के गिरे होने की परिस्थितियां एक व्यावहारिक प्रश्न खड़ा ''करती हैं कि यीशु ने सफलता की इस लहर के साथ कैसे निपटा?'' इस अनोखी परिस्थिति में जो कुछ यीशु ने किया उसके हमारे लिए बड़े अर्थ हैं। हम अपने जीवन और काम में सफलता पाना चाहते हैं; परन्तु जब यह मिल जाती है तो हम इससे कैसे निपटते हैं? यीशु के सफलता से निपटने के ढंग को देखकर जो उसकी सेवकाई में आई हम अच्छा करेंगे। प्रसिद्धि का मिलना और प्रभावशाली हो जाना व्यक्ति के अपने और अपने मिशन के विचार को बदल सकता है। यीशु ने इसका क्या किया? उसने इसका सामना कैसे किया?

1. यीशु का पहला उत्तर अगली सुबह जल्दी उठकर निर्जन स्थान में जाना था ताकि वह प्रार्थना की सहायता ले सके। मरकुस 1:35 लिखता है कि ''भोर को दिन निकलने से बहुत पहिले, वह उठकर निकला, और एक जंगली स्थान में गया और वहां प्रार्थना करने लगा।'' हम यीशु के दिन चढ़ने से पहले उठने की कल्पना कर सकते हैं। वह शमौन के घर से निकला और अंधेरी गलियों में से होते हुए नगर के बाहर एक जगह चला गया। सुबह-सुबह उसे सोते हुए घर से दूर एक जगह मिल गई। उस ढलान पर, उस घाटी में, या उस चट्टान पर जहां से झील दिखाई देती थी, वह अपने पिता के सामने अपनी सारी भावनाओं को खोलकर और अपनी सारी अभिलाषाओं को रखकर उससे प्रार्थना करने लगा। उन मिनटों या घण्टों में उसे जो सहभागिता मिली उसे इस पृथ्वी पर किसी भी अन्य संगति के साथ नहीं मिलाया जा सकता।

स्पष्टतया जब यीशु की सेवकाई एक शक्तिशाली दिशा में बढ़ रही थी, तो वह चला गया ताकि वह अपने काम के अलग-अलग पहलुओं पर अपने पिता के साथ बात कर सके। उपदेश देने और चंगाई के एक रोमांचकारी दिन के अगले दिन उसने क्या किया? वह एकांत में चला गया ताकि वह पिता की उपस्थिति के पवित्र समानता के नाम से घिर सके। यीशु को किसी गलती को सुधारने के लिए क्षमा या साहस की आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि उसने कभी गलती की ही नहीं थी। वह अपने आपको आत्मिक पोषण में डुबोना चाहता था जो पिता के साथ संगति में उसे मिलना था।

जो कुछ यीशु ने किया वह हमें इस सच्चाई को दोहराता है कि प्रसिद्ध मनुष्य के दिल और स्वभाव का बड़ा टैस्ट है। बड़े श्रोताओं की सराहना चालाकी से आदमी की सोच को नई दिशा दे सकती है। भीड़ की तालियां एकदम से आदमी को बदल सकती हैं। उसे अपने जीव के वास्तविक लक्ष्यों से अंधा कर सकती है। प्रसिद्धि से हमें ऐसी शक्ति मिल सकती है जिसे सम्भालने के हम आदी नहीं हैं। अपनी नई चुनौतियों को अपने पिता के सामने ले जाकर उसे हमें सही दृष्टिकोण से हमारी परिस्थिति को देखने में सहायता कर देना ही वह बात है जो हमें करनी चाहिए, जैसे कि इस अवसर हमारे उद्धारकर्त्ता को दिखाया।

2. यीशु ने अपनी प्रसिद्धि को दूसरा जवाब दिया। संकल्प लेकर वह तुरंत काम पर लौट गया। यह वचन कहता है कि जब पतरस और अन्य चेलों को वह मिल गया तो उसने उनसे कहा, ''आओ; हम और कहीं आस-पास की बस्तियों में जाएं, कि मैं वहां भी प्रचार करूं'' (1:38)। अपने पिता की उपस्थिति से तरोताजा होकर यीशु ने अपना मन दूसरों की भीड़ पर लगाया जिन्हें राज्य के आने के बारे में उसका प्रचार सुनने की आवश्यकता थी। उसका काम अभी आरभ ही

हुआ था; निश्चय ही यह खत्म नहीं हुआ था।

चेलों को लगा कि उसे कफरनहूम की अपनी सफलता का लाभ उठाना चाहिए। बेशक यीशु पर कफरनहूम में रहने और आनन्द करती भीड़ की शाबाशी और जय जयकार के नारों का मज़ा लेने की परीक्षा थी; परन्तु वह संसार में यह सब करने के लिए नहीं आया था। सब लोगों के लिए अपने प्रेम के कारण, अपने काम की चौड़ाई और गहराई से, उसने तुरन्त दूसरी जगहों पर जाने का मन बनाया। यीशु भूखों को खिलाने और बीमारों को चंगा करने नहीं आया था। उसने जितना उसे समय मिलता, उतना करना था, परन्तु उसने अपना मुख्य ज़ोर प्रचार करने और सिखाने पर लगाना था। जो किया जाना आवश्यक था।

मुख्य बात को मुख्य बात रहने देना पूरा किए जाने वाले लक्ष्यों के सबसे कठिन लक्ष्यों में से एक है। प्रसिद्धि हमारा दिमाग प्रसिद्धि की ओर मोड़ सकती है। सफलता हमारे मन को सफलता की ओर मोड़ सकती है। जब सफलता मिल जाए, तो आइए काम पर वापस चलें।

3. यीशु ने अभी एक और उत्तर देना था। उसने अपने मन में अपने मिशन पर *पुन: फोकस* करने का ठाना हुआ था। वह प्रचार केवल इसलिए नहीं कर रहा था क्योंकि उसे प्रचार करना अच्छा लगता था। उसका प्रचार करना तस्वीर का केवल एक भाग था। मरकुस 1:38 यीशु को यह कहते हुए सिखाता है, ''आओ; हम और कहीं ... कि मैं वहां भी प्रचार करूं, *क्योंकि मैं इसी लिये निकला* हूं।''

यीशु को अपने फोकस से जो कि उसका असली मिशन था, हटने की अनुमति नहीं होनी थी। पिता ने उसे लोगों को अपने राज्य के आने के लिए तैयार करने के लिए भेजा था। आवश्यक तैयारियां करने के लिए तीन वर्ष का समय मुश्किल से काफ़ी होना था। यीशु अपने मिशन के साथ हस्तक्षेप करने के लिए प्रसिद्धि को या किसी चीज़ को आगे नहीं आने नहीं देना था। इस इरादे ने उसके लिए अच्छा काम करना था और उस क्रूस पर अपने चढ़ाए जाने से पहले की गुरुवार की रात को यह कहने देना था: ''जो कार्य तू ने मुझे करने को दिया था, उसे पूरा करके मैं ने पृथ्वी पर तेरी महिमा की है'' (यूहन्ना 17:4)।

फोकस के महत्व पर अत्यधिक बल देना कठिन है। किसी का संसार का सबसे बड़ा मिशन हो सकता है परन्तु यदि वह इसे भूल जाए या दूसरी चीज़ों के ढेर के नीचे दबने दे, तो वह मिशन कूड़े के ढेर पर ''जो हो सकता था'' के नाम पड़ा रहेगा। चाहे जो भी जो जाए, यह सफलता हो या असफलता, हम अपने मिशन पर ध्यान लगाए रखें।

निष्कर्ष: प्रसिद्धि की इस लहर को यीशु के उत्तर को देखते हुए जो उसके पास आई थी, हमें पूछना आवश्यक है, ''किसी को सफलता का क्या करना चाहिए?'' उत्तर आसान है: ''इसे छोड़ दे!'' हां, यीशु की तरह, हमें भी प्रार्थना के समय अर्थात परमेश्वर के सामने विचार करने के समय के लिए कि हम इसका क्या करें, ''इसे छोड़ देना'' आवश्यक है। हमें इसे उस अतिरिक्त काम के लिए जो किया जाना आवश्यक है ''इसे छोड़ देना'' आवश्यक है। और हमें इसे ''छोड़ देना'' आवश्यक है ताकि हम अपने ध्यान उस मिशन पर पुन: फोकस कर सकें जो हमें मिला है।

जीवन की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक यीशु के मिशन को पकड़कर इसे चलाते रहने लिए अपने मनों को लगाना है। उसने इसे आरम्भ किया है और इसके लिए अपने हिस्से का काम पूरा कर लिया है। हमें पृथ्वी पर उसके काम को जहां से उसने छोड़ा था, वहां से आगे बढ़ाना

आवश्यक है। पृथ्वी पर उसकी आत्मिक देह यानी कलीसिया बनना और परमेश्वर की सनातन मंशा के शेष भाग को फलदायक बनाना आवश्यक है। वह सिद्ध मिशन यानी वह मिशन लेकर आया जो इस संसार को उद्धार देने की पेशकश करता है। उसने इसे वफादारी से और सच्चाई से पूरा किया। अब सेवा करने, आगे ले जाने, और लोगों को तसल्ली देने की बारी हमारी है। यदि हमें सफलता मिलती है, तो आइए हम प्रार्थना करें, काम पर लौट जाएं और इसके बीच में परमेश्वर के मिशन पर ध्यान लगाए रखें।

''हमेशा'' मसीह (1:40-45)

गलील के किसी नगर में, जब यीशु जगह जगह प्रचार करने और उपदेश देने के लिए जा रहा था, तो एक कोढ़ी उसके पास आया। वह मुंह के बल गिरकर यीशु से उसकी सहायता करने की प्रार्थना करने लगा। उसने यह कहते हुए विनती की, ''यदि तू चाहे तो मुझे शुद्ध कर सकता है'' (1:40)। शायद किसी समय यह आदमी यीशु के इतना निकट गया होगा कि उसने किसी छोटे समूह या भीड़ के साथ उसे बातें करते हुए सुना होगा। वहां पर उसने उसे किसी को जो उसके पास आया होगा, चंगाई देते देखा होगा। निश्चय ही जो उसने सुना या देखा था उससे उसे विश्वास हो गया था कि यदि वह यीशु के पास आए और सही सोच के पास उसे ढूंढ़े, तो वह उसे उसके कोढ़ से छुड़ाने के लिए कह सकता है।

यह आदमी एक रोग से पीड़ित था जिसमें कोई संदेह नहीं कि उसका जीना हराम कर दिया था। रब्बियों का कहना था कि कोढ़ को शुद्ध करना अनहोना है। उनका यह मानना था कि इस व्याधि को ठीक करना किसी को मुर्दों में से जिलाने के जैसा होगा। जिन लोगों को यह रोग होता था उनके शरीर धीरे-धीरे करके गल जाते थे। उनका मांस सूखता रहता जब तक कि अंत में मृत्यु तरस करके उन्हें उनके दु:ख से छुटकारा नहीं देती थी।

तरस खाकर यीशु ने आगे बढ़कर उस आदमी को छुआ और उससे कहा, ''मैं चाहता हूं तू शुद्ध हो जा'' (1:41)। वचन कहता है, ''तुरंत उसका कोढ़ जाता रहा और वह शुद्ध हो गया'' (1:42)। इस चंगाई के बाद यीशु ने उस आदमी को यरूशलेम में याजक को दिखाने के लिए भेजा, जो यह तसदीक कर सकता था कि वह चंगा हो गया है और समाज में लौट सकता है। अपनी शारीरिक त्रासदी की वेदना में रहते हुए वह समाज से निष्कासित था। लोगों के किसी समूह के पास आने से पहले उसके लिए अपमान की गहराइयों से यह चिल्लाना आवश्यक होता था, ''अशुद्ध! अशुद्ध!'' समाज के लोगों से तितर-बितर होकर उसके संक्रमण से बचने के लिए लोगों को चेतावनी देने के लिए यह सावधानी आवश्यक थी। यह आदमी, जिसे चंगाई मिल गई थी, जीवन में वापस लौट आया था। यीशु के हाथ के एक स्पर्श और उसके मुंह के कुछ शब्दों से, उसे जीवन के भयानक कूड़े के ढेर से मन और तन की पूर्णता में वापस लाया गया था।

यीशु के आश्चर्यकर्म उसके परमेश्वर होने के चिह्न थे। सुसमाचार के विवरणों के लेखकों ने उन्हें उनकी सामर्थ के साथ, आश्चर्यकर्म, नाम दिया, उन्हें उस प्रभाव के कारण जो देखने वालों पर पड़ा ''अचम्भे'' और यीशु के बारे में दिए गए उनके संदेश के कारण ''चिह्न'' कहा। कोढ़ी आदमी को चंगा करने के यीशु के इस आश्चर्यकर्म पर विचार करते हुए हमें यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि हम इसे एक चिह्न के रूप में देखें जो हमें यीशु का एक और पहलू दिखाता

है। आश्चर्यकर्म यीशु के अंदर पाए जाने वाले उस गुण पर ज़ोर देता है, जिसे ''हमेशा'' शब्द के साथ व्यक्त करना शायद सबसे बढ़िया है। यीशु में ईश्वरीय निरन्तरता अर्थात अनन्त स्थिरता थी जिसे भूलना नहीं चाहिए।

1. यह घटना हमें बताती है कि *यीशु हमेशा दूसरों की सहायता करने को तैयार रहता था जो उसकी चंगाई की दोहाई देते थे*। यीशु की कार्यवाही में तरस भरा आश्चर्यकर्म है। आदमी न कहा, '''यदि तू चाहे तो मुझे शुद्ध कर सकता है।' उसने उस पर तरस खाकर हाथ बढ़ाया, और उसे छूकर कहा, 'मैं चाहता हूं तू शुद्ध हो जा''' (1:40, 41)।

यह दृश्य हमें बताता है कि यीशु के तरस के सम्बन्ध में ''यदि'' शब्द का इस्तेमाल करना सही नहीं है। वह किसी भी स्थिति में इसे दिखाने वाला था! यह उसका स्वभाव है, उसका मन है। जब भी वह किसी को निराश देखता है तो वह उस व्यक्ति के पास तरस के कारण पहुंचने को उत्सुक होता है।

उसका हर उत्तर उसके पिता की इच्छा के साथ मेल खाता है। इसने उसे पृथ्वी पर अपनी सेवकाई दौरान आश्चर्यकर्मों से उत्तर दिलवाया (ईश्वरीय उद्देश्यों से) (परन्तु उन्हीं कारणों से) मसीही युग में उसे ईश्वरीय प्रबन्ध के अनुसार उत्तर देने में सीमित करता है। यीशु एक इच्छुक और उत्सुक मन से आज भी तुरंत उत्तर देता है।

''तरस'' शब्द में ''गहरी भवना के साथ'' का विचार है। यह ऐसा है जैसे वह हमारे हृदयों में और हमारे शरीर में आता है और जो भी परेशानी, बीमारी या निराशा का डर हमें लग रहा है उसे हमारे साथ ''महसूस करता'' है। वह केवल हमारी हालत नहीं देखता बल्कि आगे बढ़कर इसे छूता भी है। उसका स्पर्श चंगा करने वाला, तसल्ली देने वाला, दोबारा बनाने वाला स्पर्श है। चाहे हमें पता न हो कि वह कैसे कैसे काम करता है या किस तरीके से करता है पर वह उसे पूरा करता है जो वह हमारे लिए करता है, एक सच्चाई दिखाई देती है कि उसके काम उसके पिता की इच्छा के साथ मेल खाते हैं। हम अपने मनों के साथ इस सच्चाई को लगा सकते हैं क्योंकि यह यीशु के लिए हमेशा रहेगी।

2. विवरण में यह भी दिखाया गया है कि *यीशु हमेशा जो भी करता है उसमें सिद्ध होता* है। यह आश्चर्यकर्म यीशु की धार्मिकता को दिखाता है। इस आदमी को चंगा करके यीशु ने उसे कड़ाई से चेतावनी देते हुए भेज दिया, ''देख, किसी से कुछ मत कहना, परन्तु जाकर अपने आप को याजक को दिखा, और अपने शुद्ध होने के विषय में जो कुछ मूसा ने ठहराया है उसे भेंट चढ़ा कि उन पर गवाही हो'' (1:44)। यीशु ने सही बात को सही ढंग से किया। आइए हम प्रभु की सिद्धता को देखें!

यीशु मूसा की व्यवस्था के अधीन रहता था, और उसके लिए इस आदमी को मन्दिर में याजक के पास भेजना धार्मिकता का काम था ताकि याजक उसके शुद्ध होने और उसके समाज में पहले वाली सामान्य स्थिति बहाल होने की पुष्टि कर सके। एक अर्थ में यीशु ने उससे कहा, ''मैं चाहता हूं कि तू व्यवस्था को माने ताकि जो कुछ तू करे वह दूसरों के लिए गवाही हो। मैं उन्हें बताना चाहता हूं कि मैं व्यवस्था को पूरा करने आया हूं, इसे नाश करने नहीं। यह चंगाई परमेश्वर की इच्छा को पूरा करते हुए होगी।

फिर यहां पर यीशु के बारे में एक और अद्‌भुत सच्चाई मिलती है कि वह अपने अद्‌भुत

काम परमेश्वर की धर्मी इच्छा के अनुसार करता है। यूहन्ना ने कहा, ''इसलिये कि व्यवस्था तो मूसा के द्वारा दी गई, परन्तु अनुग्रह और सच्चाई यीशु मसीह के द्वारा पहुँची'' (यूहन्ना 1:17)। यूहन्ना के कथन की एक प्रासंगिकता यह है कि हम यीशु को कभी भी सही चीज़ को गलत ढंग से या गलत चीज़ को सही कारण के लिए करते हुए नहीं पाते। वास्तव में संसार में अनुग्रह को वही लेकर आया, परन्तु वह सच्चाई को भी लाया। उसके आश्चर्यकर्मों में हमेशा खराई होती थी। धर्मी कामों के रूप में पृथ्वी पर उसके कामों की अगुआई ईश्वरीय नियमों से होती थी। वह कभी भी किसी को अपर्याप्त प्रमाण पर विश्वास करने के लिए नहीं कहता। उसने कभी लोगों को सही काम गलत तरीके से करने के लिए उसके हाथ जोड़ने को नहीं कहा।

3. आश्चर्यकर्म की यह घटना हमें कुछ और बताती है। इसके बाद के असर में यह दिखाती है कि *यीशु सिखाता रहता था*। उसका यह आश्चर्यकर्म करना नि:स्वार्थ काम था। जब यीशु ने आश्चर्य कर्म किया तो उसे मालूम था कि वह आदमी बाद में नगरों में उसकी शिक्षा के साथ हस्तक्षेप करे। यीशु ने आदमी को उसकी चंगाई देने की सामर्थ की खबर को न फैलाने के लिए कहा। यदि वह ऐसा कहता, तो लोगों ने यीशु की सेवकाई के उस गुण को सबसे पहले अपने मन में लाना था। उन्होंने उसके पास चंगा होने के लिए दौड़ जाना था उसे उन्हें वचन सुनाने का अवसर नहीं मिलना था। वह जानता था कि इस आदमी के लिए अपनी चंगाई के बारे में खामोश रहने की आज्ञा को मानना कठिन होना था।

यीशु पहले से देख सकता था कि इस परिस्थिति में क्या होगा। वह चंगाई पाए हुए कोढ़ी को बाहर जाकर उसके बारे में लोगों में इतना ढिंढोरा पीटने की कल्पना कर सकता था कि इसके बाद वह नगरों में जाकर खुलेआम लोगों को सिखा न पाएगा। वह जानता था किसे अपना प्रचार करने के लिए निर्जन क्षेत्रो में होना आवश्यक था। परन्तु इस तथ्य में उसने उस आदमी को चंगा करने से नहीं रोका। क्या ऐसा हो सकता है कि इस कोढ़ी के शुद्ध करने की कोई आवश्यक बात हो? शायद कुछ तरह से, इससे उसके प्राण का उद्धार हो सकता था।

जो भी कारण हो और जो भी वक्त की नज़ाकत हो, यीशु ने इस पर काम करने का मन बना लिया कि वह आदमी क्या करे। इस भाग की अंतिम आयत[48] इस परिस्थिति में यीशु के उत्तर को बताती है:

> परन्तु वह बाहर जाकर इस बात का बहुत प्रचार करने और यहां तक फैलाने लगा कि यीशु फिर खुल्लमखुल्ला नगर में न जा सका, परन्तु बाहर जंगली स्थानों में रहा; और चारों ओर से लोग उसके पास आते रहे (1:45)।

उसने अपनी सेवकाई जारी रखी; परन्तु उसे इसे अलग योजना के तहत, अलग तरीके से करना पड़ा।

लोगों के लिए बढ़िया योजनाएं किसी न किसी कारण आम तौर पर बदल जाती हैं। लोग एक ही तरह से हर काम पर प्रतिक्रिया नहीं देते। उनके आस पास की परिस्थितियां बदलती रहती हैं और लोगों के स्वभाव के कारण ऊपर नीचे होती रहती हैं। यीशु ने इस अवसर को चाहे जो भी हो जाए काम करने के लिए चुना। शायद उसे विश्वसनीयता के उद्देश्यों के लिए इस विशेष समय पर इस विशेष आश्चर्यकर्म को करना आवश्यक था।

इसी प्रकार से जब उसने बैतनिय्याह में लाज़र को मुर्दों में से जिलाया (यूहन्ना 11:1-44), तो उसे मालूम था कि ऐसा करने से पृथ्वी पर की उसकी सेवकाई खत्म हो जाएगी; परन्तु उसने मुर्दों को जिलाने की अपनी सामर्थ के संसार को स्पष्ट प्रकाशन देने के लिए इसे किया। उसके अनुयायियों को उसके परीक्षाओं में से गुज़रने और क्रूस पर चढ़ाए जाने के समय इस चिह्न को याद रखना आवश्यक होना था। स्पष्टतया ऐसा आश्यर्चकर्म करने का समय ही था। उसने लाज़र को मुर्दों में से जिलाया; और उस पुनरुत्थान से परमेश्वर को महिमा मिली, चाहे इस से पृथ्वी पर की यीशु की सेवकाई का अंत हो गया।

एक सच्चाई हमारी ओर उछलते हुए आती है कि यीशु इस हस्तक्षेप के बावजूद अपने उपदेश के साथ सही था। वह जंगल में गया और उसने लोगों को अपने पास आने दिया। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के लिए यह तरीका काम में आया, और परमेश्वर के पुत्र के लिए भी इसने काम किया। यीशु चाहे इसे जैसे भी करने वाला था, पर वह उपदेश देने में व्यस्त रहने वाला था। यीशु के बारे में हम इस तथ्य को याद रखें कि पृथ्वी की अपनी सेवकाई में वह हमेशा सिखाने में व्यस्त रहता था।

निष्कर्ष: यह यीशु जिसकी हम आराधना करते हैं कौन है ? यह वह मसीह है जो तैयार है, जो अपने हर काम और कार्यवाही में सिद्ध है और जो मसीह को सिखा रहा है। यह उसके कुछ ''हमेशा'' वाले गुण हैं। जब हम मसीह को पाते हैं, हम उसे इन गुणों को पाते हुए दिखाते हैं क्योंकि यही वह है। वह ''हमेशा'' मसीह है।

यीशु की ओर मुड़ना (1:40-45)

इस संक्षिप्त वचन में छुपा उस तरीके का एक उदाहरण है जिससे किसी को यीशु की ओर लौटना चाहिए। मरकुस ने बताया है कि कैसे एक आदमी, जिसका नाम वचन में नहीं दिया गया, यीशु के पास शुद्ध होने की विनती लेकर गया। इस आदमी का आचरण, जैसे वह यीशु के पास गया, हमारे लिए मसीह के पास जाने के लिए उसके पीछे चलने के लिए अच्छी अगुआई देता है। उस एकमात्र के सामने जो उसे चंगा कर सकता था अपनी विनती करने के लिए इस कोढ़ी ने जो किया आइए देखते हैं।

1. *वह यीशु के पास उम्मीद लेकर गया।* हम नहीं जानते कि उसे यीशु के बारे में कैसे पता चला। क्या उसने उसे कहीं बोलते हुए सुना था ? क्या उसने यीशु को दूसरे लोगों को चंगा करते हुए देखा था ? कुछ ऐसा हुआ जिससे वह यीशु को देखने को मजबूर हुआ, जब उसे मौका मिला तो वह उम्मीद लेकर उसके पास गया।

क्या हमें मसीह के सामने अपने आपको ऐसा ही रवैया लेकर नहीं जाना चाहिए ? हमने उसके विषय में पढ़ा है, हम जानते हैं कि वह कौन है। हमें बड़ी उम्मीद लेकर जाने से किसी को रोकने नहीं देना चाहिए।

2. *यह आदमी यीशु के पास भक्तिभाव से गया।* जब यह कोढ़ी यीशु के निकट पहुंचा, तो उसने घुटने टेक दिए। यह समझते हुए कि यीशु कौन है, उसने उसे दण्डवत किया। शायद वह उसके सामने मुंह के बल भी गिरा (देखें लूका 17:16)। जब उसकी उपस्थिति में जाने की हमारी बारी आएगी तो निश्चय ही हम उसके सामने झुकेंगे जैसे प्रकाशितवाक्य 1 में यूहन्ना

झुका।

वह परमेश्वर का अनादि पुत्र मसीह है, हमें उसकी भक्ति वैसे ही करनी आवश्यक है जैसे कि इस आदमी ने की। उसका आदर संसार के सब लोगों से बढ़कर होना चाहिए। उसका आदर सब स्वर्गदूतों, सब अधिकारियों और सब प्रधानताओं से बढ़कर होना चाहिए।

3. यीशु की बात को निजी तौर पर मानने के दिए *वह उसके पास अकेला आया*। उसने चाहा कि यह मुलाकात अकेले में हो। वह एक ऐसी परिस्थिति चाहता था जिससे उसे यीशु के साथ अकेले में होने का अवसर मिले और वह उसे चंगा करे। यीशु के साथ आमने सामने, निजी मुलाकात से उसे संतुष्टि मिलनी थी।

हमारे साथ भी ऐसा ही है। हमें उद्धार के प्रभु के साथ निजी में सम्बन्ध होना आवश्यक है, और हमें इससे कम से संतुष्ट नहीं हाना चाहिए। हमारे लिए कोई दूसरा उसकी आज्ञा को नहीं मान सकता। हमारे माता-पिता ने हम से प्रेम किया है और हमने पाल पोसकर हमें बड़ा किया है। परन्तु अनन्त जीवन में हमें केवल यीशु ले जाता है। उसके पास जाकर, हमें अपने आप जाना आवश्यक है।

4. *यह कोढ़ी यीशु के पास सच्चे मन से गया।* उसकी चिंता कोई छोटी बात नहीं थी। वह अपने जीवन, अपने स्वास्थ्य और अपने भविष्य के साथ प्रभु की सहायता चाहता था। यदि यीशु उसकी सहायता न करता, तो उसने सड़न और निराशा में पड़े रहना था। हमें कोई आश्चर्य नहीं होता कि उसने प्रभु को उसे शुद्ध करने को कहा। यहां एक ऐसा जन था जो उसे चंगा कर सकता था, और उसका मनोरथ उसे अपने पूरे मन से ढूंढ़ना था। उसने अपने मन में अवश्य कहा होगा, ''अपनी विनती उसके सामने रखने का मेरे पास केवल यही अवसर लगता है और मैं इसका लाभ अवश्य उठाऊंगा।''

हमारे लिए जब यीशु की ओर मुड़ने का अवसर आता है तो हमें इस ईमानदार होना आवश्यक है। हमें जीवन के बारे में गम्भीर होना चाहिए जब हमारा विवाह होने वाला हो, और हमें अनन्त जीवन के बारे में गम्भीर होना आवश्यक है जब हम बपतिस्मे में यीशु इसके साथ एक होना चाहते हैं। यह दिखाने कि हम यीशु को अपने प्रभु के रूप में मानने और उसकी इच्छा को पूरा करने के लिए तैयार है, हमारे लिए वही समय होता हैं।

5. *वह यीशु के पास विश्वास से आया।* हम नहीं जानते कि वह उसमें विश्वास कब करने लगा। शायद इस घटना से पहले कहीं, उसने यीशु के बारे में सुना था और उस पर विश्वास करने लगा था; हो सकता है कि यह उसके उसकी ओर दौड़ने से थोड़ा पहले हुआ हो।

परन्तु हम जानते हैं कि हम कब विश्वास करने लगे। है न? हमने सुसमाचार के विवरणों को पढ़ा है, और उनसे हमें विश्वास आया है (देखें रोमियों 10:17)। इस आदमी को विश्वास था कि यीशु मुझे चंगा कर सकता है। हमारा भी विश्वास यही है। यीशु ही है जो हमें क्षमा कर सकता है; हम इस सच्चाई को जानते और मानते हैं। हम यह भी जानते हैं कि इस आदमी ने अपने विश्वास का क्या किया। जितनी जल्दी हो सका और जितने जोर से हो सका, उसने अपने आपको यीशु के सामने गिरा दिया। हमें भी अपने विश्वास पर ऐसे ही काम करना आवश्यक है। जब तक हमारा विश्वास मसीह के आज्ञापालन में सक्रिय नहीं होता, तब तक यह मरा हुआ विश्वास है (याकूब 2:17)।

6. वह *यीशु के पास विनम्रतापूर्वक गया।* वह केवल उससे बात नहीं करना चाहता था; क्योंकि कोढ़ी, इस समय हरकत में था। उसने ठान लिया था कि यीशु चाहे उसे जो भी कहे वह करेगा। उसका हृदय तैयार था और उसक मन पक्का था।

आपको और मुझे क्या लगना चाहिए? हमारी कहानी मरकुस वाली इस कहानी के साथ मेल खाती हो सकती है। हमें भी पूरी तरह से उसकी इच्छा को मानने के लिए, यीशु में विश्वास में यीशु को देखना आवश्यक है। यह आदमी जिसके बारे में हमने पढ़ा है मूसा की व्यवस्था के अधीन रहता था। हम मसीही युग, अर्थात नए नियम की मसीहियत में रहते हैं। हमें क्या करना चाहिए? हमें मन फिराव के लिए अपने आपको देते हुए, मसीह के रूप में यीशु का अंगीकार करने के लिए और जैसा कि मसीह ने उन्हें कहा था बपतिस्मा लेने के लिए विश्वास में यीशु की बात मानना आवश्यक है। उसने बपतिस्मे के बारे में बताया जब उसने निकुदेमुस से जल और आत्मा से नये सिरे से जन्म लेने को कहा (यूहन्ना 3:5)।

निष्कर्ष: यह कहानी हमें बताती है कि हमें यीशु की ओर कैसे लौटना चाहिए। इस यात्रा को छह शब्दों ''उम्मीद के साथ,'' ''भक्ति भाव से,'' ''निजी तौर पर,'' ''ईमानदारी से,'' ''विश्वास करते हुए'' और ''निम्रतापूर्वक'' चिह्नित किया गया है। यह बेचारा दु:खी आदमी यीशु में विश्वास लाकर उसके सामने गिर गया और उसे चंगाई देने को कहने लगा। मसीह ने उसकी विनती मान ली। वह निष्कपट मन का जो कि उसकी इच्छा को मानने को तैयार हो, उत्तर हमेशा देता है। वह किसी से भी जो विश्वास और आज्ञापालन में उसकी बात को मानता है मुंह नहीं मोड़ता।

यीशु इस आदमी के जैसे लोगों को ढूंढ़ता है। लूका 19:10 कहता है, ''क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने आया है।'' विवरण वाले इस आदमी को यीशु को सुनने और उसकी मानने का अवसर मिला; उसने इसे जाने नहीं दिया। उसने मसीह में विश्वास का जीवन और धन्यवाद का जीवन जिया होगा, उस मुलाकात के बाद से जो कुछ मसीह ने उसके लिए किया। हम उसका नाम नहीं जानते, परन्तु यीशु ने मत्ती, मरकुस, और लूका में अपने विवरणों में उन्हें डाल कर उसके कामों को अमर बना दिया। अब आपको और मुझे अनन्त जीवन पाने का अवसर मिला है। आप इसके साथ क्या करेंगे?

टिप्पणियां

[1]समानांतर विवरण मत्ती 3:3 और लूका 3:4–6 में हैं। [2]समानांतर विवरण मत्ती 3:1, 2, 5, 6 और लूका 3:3 में हैं। [3]विलियम बार्कले, द *माइंड ऑफ़ जीज़स* (न्यू यॉर्क: हार्पर ऐंड रो, 1961), 24. [4]आर. सी. फोस्टर, *स्टडीज़ इन द लाइफ़ ऑफ़ क्राइस्ट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1971), 306. [5]अल्फ्रेड प्लम्मर, *ऐन एक्सजेटिकल कॉमेंट्री ऑन द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू सेंट मत्ती* (न्यू यॉर्क: चार्ल्स स्क्रिब्नर'स संस, 1910), 21. [6]फोस्टर, 300, 304–5. [7]यूनानी भाषा में ''*en*'' के εἰς (*eis*, ''में'') (द *एनालिटिकल ग्रीक लैक्सिकन* [लंदन: शमुएल बेगस्टर ऐंड संस, 1971], 119)। [8]समानांतर विवरण मत्ती 3:4, 11 और लूका 3:16 में हैं। [9]जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे ने इस घटना को मृत्यु की धमकी के बावजूद, ''पवित्र आत्मा की आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ की नये सिरे से समझ, [जिसने] उन्हें यह आश्वासन देते हुए कि परमेश्वर अभी भी उनके साथ था, वह दिलेरी दी जिसके लिए उन्होंने प्रार्थना की'' (जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे, द *न्यू कॉमेंट्री ऑन ऐक्ट्स ऑफ़ अपोस्टल्स,* अंक. 1 [सिनसिनाटी: स्टैंडर्ड

पब्लिशिंग कं., 1892], 78)। [10]समानांतर विवरण मत्ती 3:13-17; लूका 3:21, 22; और यूहन्ना 1:31-34 में हैं।

[11]परमेश्वर ने तीन अवसरों पर मसीह की स्वीकृति की बात की: यीशु के बपतिस्मे के समय (मत्ती 3:17; मरकुस 1:11; लूका 3:22), रूपांतर के समय (मत्ती 17:5; मरकुस 9:7; देखें 2 पतरस 1:17, 18) और जब यीशु यूहन्ना 12:27-29 में प्रार्थना कर रहा था। [12]सम्भवतया यहूदियों द्वारा अपने दृष्टिकोण से लिखा गया दस्तावेज़, *द गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू हिब्रूस* अप्रमाणिक पुस्तक ''हमें केवल दूसरी सदी के बाद के आरम्भिक मसीही लेखकों द्वारा दिए गए उद्धरण से पता चलता है'' (फोस्टर, 25-26)। खण्डित उद्धरणों में मसीह की कुछ असंगत और संदेहपूर्ण बातें मिलती हैं जो सुसमाचार के प्रामाणिक विवरणों में नहीं हैं। [13]ऐसा प्रतीत होता है कि यीशु की सामर्थ और ज्ञान ने केवल उसके द्वितीय आगमन के समय का उसे पता होने के बारे में नहीं बनाने दिया (मत्ती 24:36; मरकुस 13:32)। हम नहीं जानते कि यह पाबंदी क्यों लगाई गई; परन्तु प्रकाशितवाक्य से यह स्पष्ट है कि अब उसे पता है। [14]समानांतर विवरण मत्ती 4:1-11 और लूका 4:1-13 में है। [15]लूका 2:52 से हमें पता चलता है कि यीशु जब छोटा था तो वह बुद्धि में ''बढ़ता गया'' परन्तु हमें उस समय की कल्पना करनी पड़ेगी जब उसे पूरी तरह से पता था कि वह मसीहा है। [16]''मसीह जंगल में एकांत में, मसीह *चालीस दिन* रहा, जो सम्भवतया इस्राएलियों के परखे जाने के उन चालीस वर्षों के साथ मेल खाता है जो उन्होंने जंगल में काटे।'' (आर. ए. कोल, *द गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू सेंट मरकुस: ऐन इंट्रोडक्शन ऐंड कॉमेंट्री*, द टिंडेल न्यू न्यू टैस्टामैंट कॉमेंट्रीस [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एडज़मैंस पब्लिशिंग कं., 1973], 59). [17]समानांतर विवरण मत्ती 4:12, 17 और लूका 4:14 में हैं। [18]यूहन्ना 2:4 में, यीशु ने अपनी माता से बात करते हुए कहा, ''अभी मेरा समय नहीं आया।'' [19]समानांतर विवरण मत्ती 4:18-22 में हैं। [20]परमेश्वर द्वारा उसे बुलाए जाने के समय मूसा एक चरवाहा था (निर्गमन 3:1, 10); गिदोन गेहूं झाड़ रहा था (न्यायियों 6:11); शाऊल अपने पिता के खोए हुए गदहों को ढूंढ़ रहा था (1 शमूएल 9:3, 27; 10:1); दाऊद अपने पिता की भेड़ों को चरा रहा था और (1 शमूएल 16:11); और एलीशा हल जोत रहा था (1 राजा 19:19)।

[21]मत्ती महसूल लेने वाला था (मत्ती 9:9) और शाऊल/पौलुस मसीही लोगों को सता रहा था (प्रेरितों 9:1-16)। [22]जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे ऐंड फिलिप वाई. पेंडल्टन, *द फ़ोरफ़ोल्ड गॉस्पल ऑर ए हार्मनी ऑफ़ द फोर गॉस्पल्स* (सिनसिनाटी: स्टैंडर्ड पब्लिशिंग कं., 1914), 162. [23]एक समानांतर विवरण लूका 4:31-37 में है। [24]परन्तु उनके अविश्वास के कारण यह कहते हुए कि उस नगर के लोग सदोम के लोगों से भी बुरे थे, यीशु ने मत्ती 11:23, 24 में कफ़रनहूम के लोगों को डांटा। [25]देखें मत्ती 8:5-13; 27:54; लूका 7:1-10; 23:47; प्रेरितों 10:1-48; 27:43. [26]''मेसोरी'' (Masoretes) की पहचान ''मसोराह'' (जिसका अर्थ ''परम्परा'' है; मूलतया, ''जो आगे सौंप दिया गया'') से लिया गया है। मेसोरी लोग छठी से ग्यारवीं सदियों के यहूदी विद्वान थे जिन्होंने पुराने नियम के लेखों को व्यक्त किया और उनकी व्याख्या की; उन्होंने बाइबल की अपनी इब्रानी हस्तलिपियों के लिए स्वर चिह्न दिए और उस लेख को सम्भालकर रखा। [27]जे. डी. डग्लस, सम्पा, *द न्यू बाइबल डिक्शनरी* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एडज़मैंस पब्लिशिंग कं., 1962), 1254 में डब्ल्यू. जे. मार्टिन, ''टैक्सट ऐंड वर्ज़न्स, 1. ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट।'' [28]मरियम की ''अर्चना'' आराधना पर आधारित है; कहा जाता है कि प्रतिमाओं/मूर्तियों का इस्तेमाल आराधना में सहायता के लिए किया जाता है, चाहे बाइबल में ऐसी आकृतियों की हर जगह मनाही है; और परमेश्वर के ही अधिकार को हटाकर ''पोप'' को ''पवित्र पिता'' का ताज पहना दिया जाता है। ऐसी परम्परागत रीतियों के प्रमाण के लिए बाइबल का कोई समर्थन नहीं है। [29]लाज़र स्वर्गलोक से पृथ्वी पर नहीं लौट पाया, और अब्राहम ने कहा कि धनवान के भाइयों के पास किसी को नहीं भेजा जाना था। [30]*ज़ौंडरवन ऑल-इन-वन बाइबल रैफरेंस गाइड* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन, 2008), 187 में केविन ग्रीन, संकलन, ''डीमन्स।''

[31]समानांतर विवरण मत्ती 8:14, 15 और लूका 4:38, 39 में हैं। [32]समानांतर विवरण मत्ती 8:16, 17 और लूका 4:40, 41 में हैं। [33]2:16 से पहले तक फरीसियों का उल्लेख नहीं है। उनकी पहली अवास्तविक शिकायत यीशु के उन लोगों के साथ मेल-जोल के विरोध में थी जिन्हें वे पापी समझते थे; दूसरा आरोप सब्त के सम्बन्ध में था (2:23-27)। [34]देखें मत्ती 4:24, जहां रोगों और दुष्टात्मा से ग्रस्त होने के बीच अधिक सावधानी से अंतर किया गया है। [35]जोसेफ़स ने कहा कि हेरोदेस के समय में छह हज़ार से अधिक फरीसी थे। (जोसेफ़स *एंटिक्विटीस* 17.24. [41-42].) इनमें से अधिकतर शास्त्री थे (परन्तु सभी नहीं)। [36]समानांतर विवरण मत्ती 4:23 और लूका 4:42-44 में हैं। [37]ऐल्बर्ट बार्नस, *नोट्स ऑन द न्यू टैस्टामैंट: मत्ती-मरकुस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस,

1955), 332. [38]चार्ल्स आर. अर्डमैन, द *गॉस्पल ऑफ़ मरकुस* (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रेस, 1917), 39. [39]द *ज़ौंडरवन पिक्टोरियल बाइबल डिक्शनरी,* सम्पा. मेरिल सी. टेनी (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1963), 817 में वाल्टर डब्ल्यू. वेसल, ''सिनागोग।'' द जरूसलेम टाल्मुड में नगर में 480 आराधनालयों के होने का दावा था (*मेगिल्लाह* III.D-E), हालांकि कुछ लोग उस संख्या पर संदेह करते हैं। [40]झाड़-फूंक के विषय पर और जानकारी के लिए 3:22-27 पर टिप्पणियां देखें।

[41]सामानांतर विवरण मत्ती 8:2-4 और लूका 5:12-16 में हैं। [42]जेलोतेसी लोग रोम के विरुद्ध सबसे हिंसक बल थे और वे किसी भी रोमी सिपाही के मिल जाने पर उसकी हत्या करने की कोशिश करते थे। शमौन जेलोतेसी इसी गुट में था जब उसे मसीह का प्रेरित होने के लिए बुलाया गया (देखें लूका 6:15; प्रेरितों 1:13)। जेलोतेसी लोग 66-73 ई. के पूरे युद्ध में सक्रिय थे। उनकी क्रूरताओं को जोसेफ़स के कामों में दिखाया गया है और मिरेले हदास-लेबेल, *फ्लेवियस जोसेफ़स: आइविटनस टू रोम'स फस्ट-सैंचुरी कंक्वयस्ट ऑफ़ ज्यूडिया,* अनु. रिचर्ड मिल्लर (न्यू यॉर्क: मैक्मिलन पब्लिशिंग कं., 1993), 128-34 में संक्षेप में दिखया गया है। [43]वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, द *वियर्सबे बाइबल कॉमैंट्री: न्यू टैस्टामैंट* (कोलोराडो स्प्रिंग्स, कोलोराडो: डेविड सी. कुक, 2007), 93. [44]जोसेफ़स *वार्स* 3.6.2. [115-18]। [45]ए. एम. टॉप्लेडी, ''रॉक ऑफ़ एजस,'' *साँग्स ऑफ़ फ़ेथ ऐंड प्रेज़,* संक. ऐंड सम्पा. आल्टन एच. हॉवर्ड (वैस्ट मोनरो, लुईसियाना: हॉवर्ड पब्लिशिंग कं., 1994)। [46]NASB में कहा गया है कि ''आत्मा ने यीशु को जंगल में धकेल दिया।'' [47]कन्निंघम गीकी, द *लाइफ़ ऐंड वर्ड्स ऑफ़ क्राइस्ट,* अंक 2 (न्यू यॉर्क: डी. एपल्टन ऐंड कं., 1885), 7-8 से लिया गया। [48]''परिच्छेद'' साहित्यिक लेख का भाग होता है, जो कि यहां पर पवित्र शास्त्र के भाग को कहा गया है। मरकुस के इस अध्ययन में वचन की हर अंतिम आयत या विचार की एक इकाई पर व्याख्या और प्रासंगिकता दिखाई गई है।